# वाणी सरोवर

अप्रैल १९७०

भुवन वाणी ट्रस्ट
रानी कटरा - लखनऊ ३.

[ भुवन वाणी ट्रस्ट (पंजीकृत) लखनऊ का मुखपत्र (त्रयमासिक) ]

# वाणी सरोवर

प्रत्येक क्षेत्र प्रत्येक संत की बानी।
संपूर्ण राष्ट्र में घर-घर है पहुँचानी ॥

संपादक—नन्दकुमार अवस्थी

प्रब०सं०—विनयकुमार अवस्थी

प्रथम वर्ष | अप्रैल, १९७० | अंक—२

## विद्वत्-परिषद्

असमिया—बसन्तकुमार सैकिया
सुश्री दीप्ति बरगुहाईं

अ़रबी—क़ाज़ी मुहम्मद सिद्दीक़, मुफ़्ती दारुल्मुबल्लग़ीन, लखनऊ

ओड़िया—सुरेशचन्द्र नन्द एम. ए. हिन्दी-ओड़िया, रा० भा० रत्न, कटक

अंग्रेज़ी—प्रेमनाथ बाजपेयी एम. ए.

उर्दू—डॉ. स० असदअली एम.ए., पीएच. डी.
सुश्री माजदा असद एम.ए. पीएच.डी.

कन्नड़—कु० उदया लेले, एम.ए., डिप. कन्नड़

कश्मीरी—माखनलाल रैना

गुजराती—हसमुख राय सचदेव, एम. ए. एल. एल. बी.

गुरुमुखी—डॉ० अमरसिंह खालसा, डा० आफ़ डिविनिटी (यू. एस. ए.) प्र० संपादक 'सरदार' लखनऊ

तमिऴ—वी. नटराजन एम. काम.

तॅलुगु—पी० रंगाचार्युलु वि० शि० 'भारती'

पाली—डॉ० हर्षनारायण एम.ए., पीएच.डी.

पारसी—मेजर ई० एच० कैनटीनवाला ए.आई.आर.ओ. (रिटा.) एम.एन. ए.जी. (लण्डन) एफ़.आर.जी.एस.
सुश्री नाजू दारा देबू, 'दिलनवाज़'

फ़ारसी—स० मस्ऊ़दहसन रिज़वी, भारत सरकार-सम्मानित, भू.पू. (फ़ारसी) विभागाध्यक्ष लखनऊ वि० वि०

बंगला—प्रबोध मजुमदार

मराठी—डॉ. शिवराम चिंतामणि लेले एम.ए.
सुश्री कुसुम ताम्बे, एम. ए.

मलयाळम—के. ए. एस. अय्यर, भू. पू. उपकुलपति लख० वि० वि०

संस्कृत—बिहारीलाल शास्त्री, का.ती. बरेली

सिन्धी—एन.के. केवलरामानी, सा.मं.सिं.स.

हिन्दी—गौरीशंकर त्रिपाठी 'पीयूष'

वार्षिक मूल्य १०·००

एक प्रति २·५०

# विषय-सूची


| क्रम | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| १ | विद्वत्परिषद् | .... .... | १ |
| २ | विषय-सूची | .... .... | २ |
| ३ | वन्दना | .... .... | ३ |
| ४ | कविता | श्री हरनन्दन बाजपेयी 'हर्ष'<br>श्री गौरीशंकर त्रिपाठी 'पीयूष' | ४ |
| ५ | तमिळ-देवनागरी चार्ट | .... .... | ५ |
| ६ | ओड़िआ-देवनागरी चार्ट | .... .... | ६ |
| ७ | सम्पादकीय | .... .... | ७-८ |
| ८ | (फ़ारसी) | सिर्रे अक्बर—शाहज़ाद: दाराशिकोह कृत ५१ उपनिषदों की फ़ारसी व्याख्या। (क्रमश:) अनुवादक—डॉ. हर्षनारायण एम.ए.,पीएच.डी. | ३३-४८ |
| ९ | (मलयाळम) | कवि तुञ्चत्त् एळुत्तच्छन् कृत महाभारत—लिप्यन्तरणकार एवं अनु०—श्री के. ए. एस. अय्यर, भू.पू. संस्कृत विभागाध्यक्ष एवं उपकुलपति लखनऊ विश्व०वि०—(क्रमश:) | ४१-५६ |
| १० | (बंगला) | कृत्तिवास रामायण लंकाकाण्ड—(क्रमश:) लिप्यन्तरणकार—नन्दकुमार अवस्थी, अनुवादक—श्री प्रबोध मजुमदार— | ४१-५६ |
| ११ | (तमिळ) | तिरुक्कुरळ्—सानुवाद लिप्यन्तरणकार—सुश्री गोमती अय्यर, बी. ए. पद्य-भावानुवाद—नन्दकुमार अवस्थी (क्रमश:) | १७-३२ |
| १२ | ( उर्दू ) | शरीफ़ज़ाद: (मिर्ज़ा रुसवा कृत उपन्यास)—लिप्यन्तरणकार—श्री विनयकुमार अवस्थी, सम्पादक—डॉ० सय्यद असद अली एम.ए. पीएच. डी०—(क्रमश:) | २५-४० |
| १३ | (गुरमुखी) | श्री सुखमनी साहब (गुरु अर्जुनदेव की बानी) अनुवादक—ख़्वाज: दिलमुहम्मद, लाहौर लिप्यन्तरणकार—नन्दकुमार अवस्थी (क्रमश:) | ४१-५६ |
| १४ | (अरबी) | रियाज़ुस्सालिहीन (ज़ादॅ सफ़र)—(क्रमश:) लिप्यन्तरणकार—नन्दकुमार अवस्थी | ९-२४ |
| १५ | (ओड़िआ) | वैदेहीश-विळास—उपेन्द्र भञ्ज कृत (क्रमश:)—सानु० लिप्य०—श्री सुरेशचन्द्रनन्द, एम.ए., कटक | १७-३२ |
| १६ | (चित्र) | शाहज़ाद: दाराशिकोह | |

# वन्दना

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

[ शुक्लयजुर्वेद २५.२१ ]

हे परमात्मा ! हम [सदैव] कानों से मंगल-मूलक वचनों को सुनें, हे यजत्र (यजमानरक्षक) ! हम आँखों से शुभ वस्तु को देखें, हम पुष्ट अंग-प्रत्यंग-युक्त शरीर से सम्पन्न होकर आपकी स्तुति करके पूर्ण शतायु प्राप्त करें।

मांथ्र अषॅम् वॉहू

अषॅम् वॉहू। वहिश्तॅम् अस्ती, उश्ता अस्ती;
उश्ता अह्माइ। ह्यत् अषाइ वहिश्ताइ अषॅम्।

[अशो ज़रथ्रूस्त्र गाथा]

मंत्र अषम् वसु

अषम् वसुः। वसिष्ठम् अस्ति उष्ट अस्ति।
उष्ट अस्मै। यत् अषै वसिष्ठाय् अषम्।

[उपरोक्त मंत्र का वैदिक स्वरूप]

सदाचारिता (पवित्रता) बड़ी से बड़ी सम्पत्ति है; वही अमर ज्योति (परमानन्द) है। अमर ज्योति उसी के लिए है जो उत्तम से उत्तम सदाचारिता (पवित्रता) का अभ्यासी है।

☪ ११२ सूरतुल्-इख़्लासि २२ ☪

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीमि ●

क़ुल् हुवल्लाहु अहदुन् ज (१) अल्लाहुस्समदु ज (२) लम् यलिद् ला ۵ व लम् यूलद् ला (३) व लम् यकुल्लहु कुफ़ुवन् अहदुन् (४) ★

[आरंभ] अल्लाह के नाम से जो [अत्यंत] दयालु [और] कृपालु है।

[ऐ पैग़म्बर !] कहो कि वह अल्लाह एक (अद्वितीय) है। (१) अल्लाह [ही] सर्वाधार है, उसका कोई आधार नहीं। (२) न कोई उससे जन्मा और न वह किसी से जन्मा, (३) और न कोई उसकी समता का है। (४) ★

[क़ुर्आन शरीफ़]

# वाणी सरोवर

( १ )

था यह ज्ञात किसे, इस भाँति यहीं मिल जायेगा वाणीसरोवर।
क्यों अब सिंधु चलें, अब रत्न यहीं प्रकटायेगा वाणीसरोवर।
जीवन में युग - जीवन के, नवजीवन लायेगा वाणीसरोवर।
मानसरोवर सा, जन-मानस में, लहरायेगा वाणीसरोवर॥

( २ )

नूतन भावों से भूषित, शुभ्र विभा-युत है यह वाणीसरोवर।
पावन ऐक्य अभीष्ट लिये, बहु संस्तुत है यह वाणीसरोवर।
निश्चय पायेगा गौरव भी, अति अद्‌भुत है यह वाणीसरोवर।
वाणी तेरे पद-पंकज धोने को प्रस्तुत है यह वाणीसरोवर॥

## एक न होने दिया

उहापोह ने तुच्छता, उच्चता के, फलीभूत विवेक न होने दिया।
घने ज्ञान में भी हठी दंभ ने, चेतन का अभिषेक न होने दिया।
यहाँ से कभी द्वेष की कालिमा का न हुआ व्यतिरेक न होने दिया।
अहंभाव से ग्रस्त रे मानवों को, अविवेक ने 'एक न होने दिया'॥

—हरनन्दन बाजपेयी 'हर्ष'

## उषा

दूर कर देतीं तुम अन्धकार भूतल से,
ज्योतित दिगन्त ब्राह्म-वेला करती हो तुम।
रथ पे बिठाके तुम्हीं लाती हो दिवाकर को—
विश्व में सुधाघट उँडेला करती हो तुम।
शान्ति का सँदेसा सब ओर पहुँचाती हुई,
चन्द्रकिरणों की अवहेला करती हो तुम।
गोद में निशा की नवजात बालिका की भाँति
व्योम-पथ पर खूब खेला करती हो तुम॥

—गौरीशंकर त्रिपाठी 'पीयूष'

तमिऴ् भाषा में प्रायः सभी स्वर देवनागरी के समान ही हैं। केवल इसमें ऍ और ऑ, ( ॆ ) ( ॊ ) के ह्रस्व रूप भी प्रयुक्त होते हैं। तमिऴ् व्यंजनों में केवल १८ ध्वनि चिन्ह हैं। इसमें देवनागरी लिपि के प्रत्येक वर्ग के प्रथम और पंचम अक्षर ही हैं। द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण नहीं होते। ज़रूरत पड़ने पर संदर्भ के अनुकूल प्रथम अक्षर क, च, ट, त, प का उच्चारण क्रमशः ग, ज, ड, द, ब हो जाता है।

इस वर्णमाला में दो 'न' और दो 'र' हैं। ऱ का उच्चारण हिन्दी के 'र' की भाँति ही है पर ऱ के उच्चारण पर बलाघात किया जाता है। इसी प्रकार न का प्रयोग हिन्दी के 'न' की भाँति ही है पर ऩ के उच्चारण में बलाघात किया जाता है। न का प्रयोग शब्द के आदि में किया जाता है। हलन्त न् का प्रयोग शब्द के मध्य में किया जाता है पर इसके बाद त् या न होता है। ऩ का प्रयोग आदि अक्षर के रूप में कभी नहीं किया जाता। ऩ् के बाद का अक्षर स्वर-युक्त ही होगा। ळ मूर्धन्य वर्ण है। इसका उच्चारण जिह्वा को उलट कर जिह्वाग्र से कठोर तालु स्पर्श करने पर 'ड़' के समान होता है। ऴ तमिऴ् वर्णमाला का विशेष वर्ण है। यह मूर्धन्य वर्ण है। इसका उच्चारण जिह्वाग्र से तालु का स्पर्श कर, 'र' का उच्चारण कर ळ के समान ध्वनि उत्पन्न करता है।

**तमिल - देवनागरी वर्णमाला**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| அ | अ | ஆ | आ | இ | इ | ஈ | ई |
| உ | उ | ஊ | ऊ | எ | ऍ | ஏ | ए |
| ஐ | ऐ | ஒ | ऑ | ஓ | ओ | ஔ | औ |
| | | ஃ | अक् | | | | |
| க | क | ங | ङ | ச | च | ஞ | ञ |
| ட | ट | ண | ण | த | त | ந | न |
| ப | प | ம | म | ய | य | ர | र |
| ல | ल | வ | व | ழ | ऴ | ள | ळ |
| ற | ऱ | ன | ऩ | ஷ | ष | ஸ | स |
| ஹ | ह | ஜ | ज | க்ஷ | क्ष | | |

ज, श, ष, स, ह को संस्कृत अक्षर कहते हैं। ये अक्षर मूल रूप से तमिऴ् के नहीं हैं। शुद्ध तमिऴ् शब्दों के उच्चारण में इनका प्रयोग नहीं होता।

तमिऴ् में संयुक्ताक्षर के लिए पृथक् ध्वनि-चिन्ह नहीं होते अपितु व्यंजन के ऊपर ॱ चिन्ह लगा देने से वे हलन्त हो जाते हैं। क्, ङ्, च्, ञ्, ट्, त्, न्, प्, ऱ् ये अक्षर साधारणतः शब्दों के अंत में प्रयुक्त नहीं होते। अधिकांशतः शब्दों के अंत में ण्, य्, ऱ्, ल्, ऴ्, ऩ् इन व्यंजनों का प्रयोग होता है।

# वैदेहीश-विळास

१. ओड़िआ भाषा में देवनागरी वर्णमाला के समस्त अक्षरों के रूपान्तर हैं। परन्तु इसमें वर्ग्य 'ज' और अन्तःस्थ 'य' के अलावा एक अवर्ग्य 'ज' का रूप भी है जिसका उच्चारण ठीक 'ज' का जैसा है। उदाहरणस्वरूप हिन्दी में लिखित 'यदि', 'यवन', 'यादव', 'युवराज' आदि शब्द ओड़िआ लिपि में क्रमशः 'जदि', 'जबन', 'जादब', 'जुबराज' के रूपों में उच्चारित होते हैं। देवनागरी--लिप्यन्तरण में इस अवर्ग्य 'ज' को 'य़' के रूप में दिखाया गया है।

२. ओड़िआ वर्णमाला में 'ब' और 'व' दोनों के लिए एक 'ब' जैसा उच्चारण किया जाता है। 'वैदेहीश-विळास' में हर पाद को 'ब' अथवा 'व' अक्षर से ही आरम्भ किया गया है।

३. ओड़िआ वर्णमाला में 'ळ' अक्षर है। परन्तु व्यवहार में 'ळ' तथा 'ल' दोनों हैं। शब्द के आरम्भ में 'ळ' अक्षर का प्रयोग नहीं किया जाता। इसका शब्द के मध्य तथा अन्त में प्रयोग किया जाता है जैसे 'कळिकाळ', 'कमळा'। परन्तु 'ल' का प्रयोग शब्द के आद्य, मध्य तथा अन्त सभी स्थलों में होता है— जैसे 'लावण्य', 'कलम', 'मसाला' आदि।

४. तमिऴ आदि दक्षिणी भाषाओं के अनुरूप ही ओड़िआ में भी अकारान्त शब्द सस्वर उच्चारित होता है न कि जैसा हिन्दी में 'घर' (सस्वर) लिखकर 'घर्' हलन्त जैसा उच्चारण करते हैं।

**उड़िया - देवनागरी वर्णमाला**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ଅ अ | ଆ आ | ଇ इ | ଈ ई | ଉ उ |
| ଊ ऊ | ଋ ऋ | ଏ ए | ଐ ऐ | ଓ ओ |
| | ଔ औ | ଅଂ अं | ଅଃ अः | |
| କ क | ଖ ख | ଗ ग | ଘ घ | ଙ ङ |
| ଚ च | ଛ छ | ଜ ज | ଝ झ | ଞ ञ |
| ଟ ट | ଠ ठ | ଡ ड | ଢ ढ | ଣ ण |
| ତ त | ଥ थ | ଦ द | ଧ ध | ନ न |
| ପ प | ଫ फ | ବ ब | ଭ भ | ମ म |
| ଯ य | ର र | ଳ ळ | ଲ ल | ଵ व |
| ଶ श | ଷ ष | ସ स | ହ ह | କ୍ଷ क्ष |
| | ଡ଼ ड़ | | ଢ଼ ढ़ | |

५. ओड़िआ काव्य-कविताओं की रचना में गुरु-लघु मात्राओं का बन्धन नहीं है।

६. बैदेहीश-बिळास ग्रंथ तथा इसके रचयिता कविवर उपेन्द्रभञ्ज का परिचय 'वाणीसरोवर' के इसी अंक से धारा-वाहिक प्रकाशित होने वाले 'बैदेहीश-बिळास' के आरम्भ में दिया जा रहा है। हिन्दी में सानुवाद लिप्यन्तरणकार श्री सुरेशचन्द्र नन्द एम० ए०, कटक तथा इस व्यवस्था के सूत्रधार लखनऊ आर्ट्स कालेज के आचार्य श्री नित्यानन्द महापात्र, के प्रति भुवनवाणी ट्रस्ट एवं हिन्दी जगत् आभारी है। —सम्पादक,

# सम्पादकीय

## परिवर्द्धित देवनागरी

एक ओर, भारत में प्रयुक्त होनेवाली सभी भाषाओं और लिपियों का स्व-रूप में फलना-फूलना ज़रूरी है, तो यह भी कम ज़रूरी नहीं कि उनका प्रचार-प्रसार उनके निजी क्षेत्र में ही सीमित होकर न रह जाय। किसी ऐसी सम्पर्क-लिपि और भाषा का चयन ज़रूरी है जिसके माध्यम से सभी भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्य का अखिल भारतीय व्यापकत्व संभव हो। प्रत्येक लिपि और भाषा को इस सम्पर्क-माध्यम पर आसीन होने का समान अधिकार है—यह निर्विवाद होते हुए भी, राष्ट्र की अखण्डता में निष्ठा रखने वाला वर्ग, देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा को ही यह वरीयता देने पर एकमत है। व्यवहारिकता की दृष्टि से अपनी अन्य सहोदरा लिपियों और भाषाओं की अपेक्षा क्रमशः वह अधिक सक्षम है।

इसी पुनीत लक्ष्य को दृष्टि में रखकर, "केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय", दिल्ली ने "परिवर्द्धित देवनागरी" पुस्तिका प्रकाशित की। खेद है कि विभिन्न राज्यों ने उसको जैसे का तैसा अंगीकार कर लिया और इस विषय के परिवर्द्धन-परिमार्जन पर रुचि नहीं दिखलाई। इन पंक्तियों के लेखक ने आज से चार वर्ष पूर्व इस सम्बन्ध में एक परिपत्र प्रकाशित किया था जिसकी छः प्रतियाँ "केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय" ने भी मंगवाकर भविष्य में उन सुझावों पर विचार करने का आश्वासन दिया था।

आज 'वाणीसरोवर' के माध्यम से उर्दू, अरबी, फ़ारसी में नित्य व्यवहृत कुछ 'मुश्तबहुस्सौत' (सन्देहपरक ध्वनि वाले) अक्षरों के रूप देकर समझाया जा रहा है कि इनके व्यवहार के विना अनेक शब्दों के अर्थ का अनर्थ निश्चित है। क़ाफ़ (क़), ख़े (ख़), ग़ैन (ग़), ज़े (ज़) और फ़े (फ़) तो नवाबी-काल से प्रयुक्त होते आ रहे हैं। 'परिवर्द्धित देवनागरी' पुस्तिका में इनके अतिरिक्त फ़ारसी की तीन नुक्तः वाली ژ (झ़) के लिए 'झ़' अक्षर की अधिक सृष्टि ठीक ही की गई है। इस झ़ का दैनिक प्रयोग भारत में नगण्य सा है। किन्तु ऐन, से, बड़ी हे, जाल, स्वाद, ज़ाद, तो, ज़ो आदि अहर्निश हज़ारों बार प्रयोग में आते हैं। इनके विना, देवनागरी लिपि में निम्न-निर्दिष्ट उदाहरणों के अनुसार अर्थ का अनर्थ और विपरीत अर्थ सदैव संभव है। आशा है 'केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय' परिवर्द्धित देवनागरी लिपि को पूर्ण सक्षम बनाने के लिए इन अक्षरों के लिए क्रमशः अ़, स, ह़, ज, स़, ज़, त़, ज़ को सम्मिलित करेगा। ये अक्षर भुवन वाणी-लखनऊ से प्रकाशित क़ुर्आन शरीफ़ के लोकप्रिय देवनागरी-लिप्यन्तरण द्वारा प्रचलित होकर सारे देश में व्याप चुके हैं। बात इनके दैनिक प्रयोग की नहीं है, वरन् यथावश्यकता शास्त्रीय उच्चारणों को देवनागरी लिपि में सुलभ करने की है:—

| समान शब्द | सन्देहपरक अक्षर | समान शब्द | सन्देहपरक अक्षर |
|---|---|---|---|
| जलील - प्रतिष्ठित | जीम - जाल | अ़र्ज़ी - दरख़्वास्त | ऐन - हम्ज़: |
| ज़लील - निकृष्ठ | | अर्ज़ी - भूमि सम्बन्धी | |
| ग़ुल - शोर | ग़ैन - गाफ़ | अ़ालिम - विद्वान | |
| गुल - फूल | | आलिम - दुखदाई | |
| ग़लीज़ - गाढ़ा | ज़े - ज़ो | अ़मल - कर्म | |
| ग़लीज़ - विष्ठा | | अमल - आशा | |

हुस्न - सतीत्व    स्वाद - सीन
हुस्न - सौन्दर्य
तरतीब - क्रम    तो - ते
तरतीब - ठण्डा करना
क़सीर - कम; क़ाफ़-काफ़, स्वाद-से-सीन
कसीर - अधिक
कसीर - खण्डित
अत्तार - औषधि विक्रेता    तो - ते
अत्तार - साहसी शूर
कसरत - व्यायाम    सीन - से
कसरत - बाहुल्य
अज़ीज़ - प्रिय    जीम - ज़े
अज़ीज़ - क्लीव
फ़ौज - सेना
फ़ौज़ - भलाई
अीजाद - आविष्कार
अीज़ाद - ज्यादती
सवाब - पुण्य    से-स्वाद-सीन
स्वाब - यथार्थ
सूरत - आकृति
सूरत - अध्याय
ह़िरासत - काश्तकारी
ह़िरासत - निगरानी में
ज़रूर - अवश्य    ज़ाद-जाल-ज़े
जरूर - सफ़ूफ़
ग़िज़ा - ख़ूराक
ग़िज़ा - धर्मयुद्ध
क़ज़ा - मृत्यु
क़ज़ा - घासफूस
ज़ाहिर - प्रकट    जो-ज़े-जाल-ज़ाद
ज़ाहिर - उज्वल
ज़िल्लत - भूल चूक
जिल्लत - अपमान
ज़िल्लत - भटक जाना

तज्वीज़ - योजना    जीम - ज़े
तज्वीज - विवाह
दर्ज - लिखा हुआ
दर्ज़ - दरार
ख़बीस - कुटिल    से - सीन - स्वाद
ख़बीस - मसख़रा
ख़बीस - एक सुन्दर आहार
जड़ली - फ़र्ज़ी ड़; (आधा अ़ैन)और(ा)
जाली - चमकनेवाला
जज़ड़ - बेसब्री
जज़ा - अच्छा प्रतिकार
सफ़र - यात्रा    सीन - स्वाद
स़फ़र - हिजरी सं० का द्वितीय मास
सह़र - प्रात:काल    हे - बड़ी ह़े
सहर - जागरण
सिम्त - दिशा    ते - तो
सिम्त - मोती
ह़ाल - वृत्तान्त    हे - बड़ी ह़े
हाल - नृत्य
ह़जामत - बाल बनाना    जीम - ज़ाद
हज़ामत - प्रवीणता
ह़ज्म - मोटाई;हे-बड़ी ह़े;जीम-ज़ाद-ज़े
हज़्म - भोजन पचना
हज्म - परास्त सेना का पलायन
ह़ज्म - दूरदर्शिता
ह़ाजी - ह़ज करने वाला;  हे-बड़ी ह़े
हाजी - निन्दा करने वाला
हार - माला
ह़ार - तप्त
अिम्तह़ान-परीक्षा
अिम्तहान- अपमानित करना
अिज़हार - प्रकट करना    ज़ो-जीम-ज़े
अिजहार - ज़ोर से बोलना
अिजहार - दीपक जलाना

# शाहज़ादः दाराशिकोह

[ विक्टोरिया मेमोरियल कलकत्ता के सौजन्य से ]

की समझ को अलग-अलग पहचाना। उत्तम समझ यह है कि तू स्वयं को ब्रह्म जाने। हे शिष्य ! चाहिए कि तू ज्ञान, ज्ञाता, तथा ज्ञात को बस एक समझे। यदि तू ब्रह्म को साकार तथा देवताओं में से किसी पर आश्रित जानता है, तो यह भी भ्रम है, क्योंकि वह सब में है। यदि तू ने समझ लिया है कि वही मैं हूँ, तो यही सत्य है वही ब्रह्म है। समझा ? [१]

नाहं मन्ये सुवेदेति, नो न वेदेति वेद च।
यो नस् तद् वेद तद् वेद, नो न वेदेति वेद च ॥२॥

अनु०—मैं न तो यह मानता हूँ कि भली भांति जानता हूँ और न यही समझता हूँ कि नहीं जानता। हम में से जो उसे जानता है उसे [इस प्रकार] जानता है–'न तो नहीं जानता हूँ और [न] जानता हूँ'।(२)

व्या०–शिष्य ने कहा, मैं नहीं समझा। गुरु ने कहा, यदि तू नहीं समझा तो तू ने कैसे कहा था कि मैं नहीं समझा ? क्योंकि तेरे ऐसा कहने से ही विदित होता है कि तू ने अपने को जान लिया है, और अन्यथा कहा कि मैं ने नहीं जाना है। अस्तु तुझे दो वस्तुओं का ज्ञान हुआ—एक अपना, दूसरे अपने को न जानने का। इस प्रकार तुझ में दोनों ज्ञान सिद्ध हुए। और ज्ञान ही साक्षात् ब्रह्म है। अतः तू जब कहता है कि मैं ने ब्रह्म को नहीं जाना, तब तू ने ब्रह्म को जान लिया। [२]

यस्यामतं तस्य मतं, मतं यस्य न वेद सः।
अविज्ञातं विजानतां, विज्ञातमविजानताम् ॥३॥

अनु०—जिस को अज्ञात है उसी को ज्ञात है, जिस को ज्ञात है वह उसे नहीं जानता। 'विज्ञानियों' के लिए अज्ञात है, 'अज्ञानियों' के लिए विज्ञात। (३)

व्या०–इस गोष्ठी के बीच जिस में हम बैठे हैं, जो अपने को कहता है कि मैं ने नहीं जाना है उस न जानने वाले ने उतना ही [अधिक] जाना है, और जो कहता है कि मैं ने जान लिया है उस ने नहीं जाना है, क्योंकि बुद्धि की उस तक पहुँच नहीं है। जिस ने नहीं जाना उस ने जाना, और जिस ने जाना उस ने नहीं जाना। और जिस ने जाना उस ने वर्णन नहीं किया और

जिस ने वर्णन किया उस ने नहीं जाना। उस का न जानना ही ज्ञान है और जानना ही अज्ञान। [३]

प्रतिबोधविदितं मतममृतत्वं हि विन्दते।
आत्मना विन्दते वीर्यं, विद्यया विन्दतेऽमृतम् ॥४॥

अनु०—[जो उसे] प्रत्येक बोध में जानता है वह अमरत्व को प्राप्त कर लेता है। आत्मा से बल प्राप्त होता है, विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है। (४)

व्या०—जिस ने इस प्रकार समझा वह अमर हो गया, वह मुक्त हो गया, और अपने ऐश्वर्य और बल की पूर्णता को प्राप्त हो गया। और यह जो कहा गया है कि ज्ञान मुक्ति का कारण है वह यही है। ज्ञान है अपने-आप को पहचानना, और मुक्ति है अपने-आप को प्राप्त करना। [४]

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति, न चेदिहावेदीन् महती विनष्टिः।
भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः प्रेत्यास्माल् लोकादमृता भवन्ति ॥५॥

अनु०—यदि इस जन्म में जान लिया तो ठीक, यदि इस जन्म में न जाना तो भारी विनाश। धीर पुरुष [उसे] समस्त प्राणियों में उपलब्ध कर के संसार से छूट कर अमर हो जाते हैं। (५)

व्या०—यदि तू ने इस प्रकार जाना तो तू सत् और सत्य है, और यदि तूने इस प्रकार नहीं जाना तो तू असत् और मिथ्या है। जिस ने उसे सब में जाना, वह इस जगत् को त्याग कर मुक्त और अमर हो गया। [५]

॥ इति द्वितीयः खण्डः ॥

ब्रह्म ह देवेभ्यो विजिग्ये। तस्य ह ब्रह्मणो विजये देवा अमहीयन्त ॥१॥

अनु०—ब्रह्म ने देवताओं के लिए विजय प्राप्त की। उस ब्रह्म की विजय में देवताओं ने गौरव प्राप्त किया। (१)[1]

व्या०—जब देवों और असुरों में बखेड़ा और युद्ध हुआ और देवों की विजय हुई तो देवताओं ने जाना कि विजय उन्हों ने की है, यद्यपि इस विजय को ब्रह्म ने उन्हें प्रदान किया था। [१][2]

त ऐक्षन्त—अस्माकमेवायं विजयो, ऽस्माकमेवायं महिमेति। तद्धैषां विजज्ञौ, तेभ्यो ह प्रादुर्बभूव। तन् न व्यजानत किमिदं यक्षमिति ॥२॥

अनु०—उन्हों ने सोचा—हमारी ही यह विजय है, हमारी ही यह महिमा है। [वह ब्रह्म] उन के इस [अभिप्राय] को जान गया, उन के प्रति प्रादुर्भूत हुआ। [वे] न जान सके कि यह यक्ष (पूज्य) कौन है। (२)

व्या०—स्रष्टा ने जाना कि इन (देवों) के मन में अभिमान उत्पन्न हो गया है। प्रत्येक देवता एक दूसरे से समझने-बूझने में लग गया और उन में झगड़ा-बखेड़ा खड़ा हो गया। प्रत्येक यही कहता था कि यह विजय उस ने ही की है। स्रष्टा उन के झगड़े को समाप्त करने के निमित्ति एक अद्भुत पुरुष के रूप में जो पूज्य (यक्ष) था प्रकट हुआ। देवों ने उसे नहीं पहचाना। [२]

तेऽग्निमब्रुवञ्—'जातवेद ! एतद् विजानीहि किमिदं यक्षम्' इति। 'तथा' इति ॥३॥

अनु०—उन्हों ने अग्नि से कहा—'हे सर्वज्ञ ! पता लगाओ कि यह यक्ष कौन है ?' [उस ने कहा—] 'बहुत अच्छा'। (३)

---

१ देवताओं की असुरों पर विजय की आख्यायिका बृहदारण्यकोपनिषद् (१.३.१-७) में द्रष्टव्य है।

२ मूल ग्रंथ (सिर्रे अक्बर) में इस वाक्य का उत्तरार्द्ध द्वितीय मंत्र का पूर्वार्द्ध है।

व्या०—अग्निदेव से, जिस का प्रकाश उन का तथा समस्त प्राणियों का मार्ग-दर्शक है, देवों ने जा कर कहा कि हे मार्ग-दर्शक अग्ने ! जा कर ज्ञात कर कि यह जो नया-नया प्रकट हुआ है, कौन है ? अग्नि ने स्वीकार कर लिया । [३]

तदभ्यद्रवत् । तमभ्यवदत्–'कोऽसि' इति ? 'अग्निर् वा अहमस्मि' इत्यब्रवीज्, 'जातवेदा वा अहमस्मि' इति ॥४॥

अनु०—[अग्नि] उस के पास गया, उस [ब्रह्म] ने उस [अग्नि] से पूछा–'तू कौन है ?' 'मैं अग्नि हूँ', उस ने कहा, 'मैं निश्चय ही सर्वज्ञ हूँ' । (४)

व्या०—[अग्नि] गया । परन्तु उस पूज्य (यक्ष) से कुछ न पूछ सका । तब यक्ष ने अग्नि से पूछा–तू कौन है ? [अग्नि ने] उत्तर दिया–मैं अग्नि हूँ, प्रकाश करने वाला । [४]

'तस्मिꣳस् त्वयि किं वीर्यम् ?' इति । 'अपीदꣳ सर्वं दहेयं यदिदं पृथिव्याम्' इति ॥५॥

अनु०—[तब ब्रह्म ने पूछा–] 'उस तुझ में सामर्थ्य क्या है?' [अग्नि ने कहा–] 'पृथिवी में यह जो कुछ है उस को जला सकता हूँ' । (५)

व्या०—यक्ष ने पूछा कि तुझ में क्या शक्ति और सामर्थ्य है । अग्नि ने कहा कि मुझ में यह सामर्थ्य है कि मैं सब कुछ भस्म कर सकता हूँ । [५]

तस्मै तृणं निदधौ–'एतद् दह' इति । तदुपप्रेयाय । सर्व-जवेन तन् न शशाक दग्धुम् । स तत एव निववृते–'नैतदशकं विज्ञातुं यदेतद् यक्षम्' इति ॥६॥

अनु०—[ब्रह्म ने] उस [अग्नि] के लिए एक तिनका रख दिया [और कहा–] 'इसे जला' । [अग्नि] उस [तृण] के समीप गया । [परन्तु] अपने सारे वेग से भी उसे जलाने में समर्थ नहीं हुआ । वह तत्काल लौट आया [और बोला–] 'यह नहीं जान सका कि यह यक्ष कौन है ।' (६)

व्या०—यक्ष ने घास का एक तिनका उखाड़ कर उस के समक्ष रख दिया और कहा–इसे जला। अग्नि ने समस्त शक्ति और सामर्थ्य जो उस में थी, उस तिनके के जलाने के लिए लगा दी, [परन्तु] उस एक तिनके को न जला सका, लज्जित हो गया। [वह] देवों के पास आ कर बोला–मैं इस विचित्र प्राणी को नहीं जान सकता। [६]

अथ वायुमब्रुवन्–'वायवेतद् विजानीहि किमेतद् यक्षम् ?' इति। 'तथा' इति ॥७॥

अनु०—तदनन्तर, [उन देवताओं ने] वायु से कहा–'हे वायो ! पता लगाओ कि यह यक्ष कौन है ?' [उस ने कहा–]'बहुत अच्छा'। (७)

व्या०—देवता वायु के पास जा कर बोले, 'हे वायो ! तू जा कर इस अद्भुत पुरुष (यक्ष) का पता लगा कि यह कौन है।' [७]

तदभ्यद्रवत्। तमभ्यवदत्–'कोऽसीति' ? 'वायुर् वा अहमस्मि' इत्यब्रवीन्, 'मातरिश्वा वा अहमस्मि' इति ॥८॥

अनु०—[वायु] उस के पास गया। उस ने वायु से पूछा–'तू कौन है ?' 'मैं वायु हूँ' उस ने कहा, 'मैं निश्चय ही मातरिश्वा (अन्तरिक्षगामी) हूँ'। (८)

व्या०—वायु स्वीकार कर यक्ष के सम्मुख गया और उस से कुछ पूछ न सका। तब यक्ष ने वायु से पूछा, तू कौन है ? [वायु ने] उत्तर दिया कि मैं वायु हूँ और मैं आकाश और पृथ्वी के बीच भ्रमण करने वाला हूँ। [८]

'तस्मिंस्त्वयि किं वीर्यम् ?' इति। 'अपीदंसर्वमाददीय यदिदं पृथिव्याम्' इति ॥९॥

अनु०—[तब ब्रह्म ने पूछा–] 'उस तुझ में क्या सामर्थ्य है ?' [वायु ने कहा–] 'पृथिवी में यह जो कुछ है उस को ग्रहण कर सकता हूँ'। (९)

व्या०—यक्ष ने पूछा कि तुम में क्या शक्ति और सामर्थ्य है। वायु बोला कि मैं सब को उठाने और उड़ा देने वाला हूँ। [९]

तस्मै तृणं निदधौ–'एतदादत्स्व' इति। तदुपप्रेयाय। सर्वजवेन तन् न शशाकादातुम्। स तत एव निववृते–'नैतदशकं विज्ञातुं यदेतद् यक्षम्' इति ॥१०॥

अनु०—[ब्रह्म ने] उस [वायु] के लिए एक तिनका रक्खा [और कहा–] 'इसे ग्रहण कर।' [वायु] उस [तृण] के समीप गया। [परन्तु] अपने सारे वेग से भी वह उसे ग्रहण करने में समर्थ न हुआ। वह तत्काल लौट आया [और बोला–] 'मैं यह नहीं जान सका कि यह यक्ष कौन है'। (१०)

व्या०—यक्ष ने पूर्व की भांति घास का एक तिनका उखाड़ कर उस के सामने रख दिया [और कहा] कि इसको उठा। प्रवहमान वायु में जितनी भी शक्ति और सामर्थ्य थी उसे उस ने उस तिनके के उठाने में और उड़ाने में लगा दिया, परन्तु घास की उस एक पत्ती को उड़ा न सका। [वह] लज्जित हो कर देवताओं के पास आ कर बोला कि मैं इस प्राणी को नहीं जान सकता। [१०]

अथेन्द्रमब्रुवन्–'मघवन्नेतद् विजानीहि किमेतद् यक्षम्' इति। 'तथा' इति। तदभ्यद्रवत्। तस्मात् तिरोदधे ॥११॥

अनु०—तदनन्तर [देवताओं ने] इन्द्र से कहा–'मघवन् (बलशालि)! पता लगाओ कि यह यक्ष कौन है।' [उस ने कहा–] 'बहुत अच्छा' [वह] उस के पास गया। [किन्तु वह] उस [इन्द्र] के सामने से तिरोहित हो गया। (११)

व्या०—देवता इन्द्र के पास जा कर बोले—हे महाराज! आप जा कर इस प्राणी का पता लगायें कि यह अद्‌भुत यक्ष क्या है। इन्द्र स्वीकार कर यक्ष के निकट गया और इन्द्र के वहाँ पहुँचते ही इस से पूर्व कि इन्द्र कुछ पूछे वह यक्ष अकस्मात् अन्तर्द्धान हो गया। [११]

स तस्मिन्नेवाकाशे स्त्रियमाजगाम बहुशोभमानामुमाᳬहैमवतीम् । ताᳬहोवाच–'किमेतद् यक्षम् ।' इति ? ॥१२॥

अनु०—वह [इन्द्र] उसी आकाश में [जिस में यक्ष अन्तर्द्धान हुआ था] एक अत्यन्त शोभामयी, सुवर्णाभूषणभूषिता (अथवा हिमालय की पुत्री) स्त्री उमा (पार्वतीरूपिणी ब्रह्मविद्या) के पास आया। वह उस [स्त्री] से बोला–'यह यक्ष कौन है ?' (१२)

व्या०—इन्द्र ने यक्ष के स्थान पर एक सुन्दर स्त्री को देखा, जिस का नाम उमा था और जो महादेव की स्त्री और शक्ति पार्वती के समान थी । इन्द्र ने उस स्त्री से पूछा कि यह अद्भुत पुरुष जो अभी इसी स्थान पर था और अन्तर्हित हो गया कौन था । [१२]

॥ इति तृतीयः खण्डः ॥

सा 'ब्रह्म' इति होवाच, 'ब्रह्मणो वा एतद् विजये महीयध्वम्' इति । ततो हैव विदाञ्चकार—ब्रह्मेति ॥१॥

अनु०—उस [विद्यादेवी] ने कहा–'ब्रह्म, तुम ब्रह्म के ही विजय में महिमान्वित हुए हो ।' तभी से [इन्द्र ने] जाना कि यह ब्रह्म है । (१)

व्या०—उस स्त्री ने जिस का नाम उमा था कहा कि वह ब्रह्म अर्थात् सृष्टिकर्ता था । और असुरों पर जिस विजय का श्रेय तुम सब अपने लिए समझे थे और जिस विजय से प्रसन्न हुए थे उस विजय का देने वाला यही था । इन्द्र ने जान लिया कि यह यक्ष ब्रह्म था । [१]

तस्माद् वा एते देवा अतितरामिवान्यान् देवान् यदग्निर् वायुरिन्द्रस्; ते ह्येनन् नेदिष्ठं पस्पृशुस्, ते ह्येनत् प्रथमो विदाञ्चकार–ब्रह्मेति ॥२॥

अनु०—इसी लिए ये देवता—अग्नि, वायु, और इन्द्र—अन्य देवताओं से बढ़ कर हुए; क्योंकि उन्हों ने इस समीपस्थतम [ब्रह्म] का स्पर्श किया था, उन्हों ने ही उसे पहले जाना था–यह ब्रह्म है । (२)

व्या०—इसी कारण यह तीनों देवता–अग्नि, वायु, और इन्द्र, ब्रह्म को प्राप्त हुए और महान् देवता बन गये। इन तीनों देवों में भी इन्द्र सब से श्रेष्ठ हुआ क्योंकि उसी ने सर्वप्रथम यक्षरूपी ब्रह्म को समझा। [२]

तस्माद् वा इन्द्रोऽतितरामिवान्यान् देवान्; स ह्येनन् नेदिष्ठं पस्पर्श, स ह्येनत् प्रथमो विदाञ्चकार–ब्रह्मेति ।।३।।

अनु०—इसी लिए इन्द्र अन्य देवताओं से बढ़ कर हुआ; क्योंकि उसी ने इस समीपस्थतम [ब्रह्म] का स्पर्श किया था, उसी ने पहले जाना था–यह ब्रह्म है। (३)

व्या०—इन त्रिदेवों में इन्द्र सर्वश्रेष्ठ हुए, क्योंकि सर्वप्रथम उन्हीं ने यह ज्ञान प्राप्त किया कि यह यक्ष ब्रह्म है। [३]

तस्यैष आदेशो यदेतद् विद्युतो व्यद्युतदा ३ इतीन् न्यमीमिषदा ३ इत्यधिदैवतम् ।।४।।

अनु०—उस [ब्रह्म] का यह आदेश (उपमोपदेश)[1] है कि यह बिजली कौंधी–ओह !!! [उस से] पलक झपक गयी–ओह !!! यह [उस ब्रह्म का] अधिदैवत रूप है। (४)[2]

व्या०—और वह वेद उसी यक्ष की वाणी है जो विद्युत् के समान इन्द्र की दृष्टि से तिरोहित हो गया। समस्त इन्द्रियों में वही जीवात्मा ब्रह्मरूपी विद्युत् के समान है जो पुरुष के रूप में प्रकट हुई थी। [४]

---

१ आदेश का शब्दार्थ है उपदेश अथवा वर्णन। उपनिषद् में यह शब्द उपमान का आश्रय लेकर किये गये उपदेश अथवा वर्णन के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। शंकराचार्य के अनुसार, 'निरुपम ब्रह्म का जिस उपमान से उपदेश किया जाय वह आदेश कहा जाता है' (निरुपमस्य ब्रह्मणो येनोपमानेनोपदेशः सोऽयमादेश इत्युच्यते)।

२ यह एक रहस्यमय मंत्र है जिस का अनुवाद कठिन है। शंकर-भाष्य के आधार पर इस का अनुवाद यों किया जा सकता है—'उस [ब्रह्म] का यह आदेश (उपमोपदेश) है कि जो बिजली की चमक के समान तथा पलक मारने के समान प्रादुर्भूत हुआ, यह अधिदैवत रूप है।' ब्रह्म की उपमा विद्युत् से बृहदारण्यकोपनिषद् २.३.६;४.८ तथा मैत्रायण्युपनिषद् ७.११ में भी द्रष्टव्य है।

अथाध्यात्मं यदेतद् गच्छतीव च मनो, ऽनेन चैतदुपस्मरत्यभीक्ष्णꣳ सङ्कल्पः ॥५॥

अनु०—अब अध्यात्म [-विषयक आदेश] है, कि यह मन में जाता-सा है, और इसी से यह (मन) निरन्तर स्मरण करता रहता है। [यह] संकल्प है।

तद्ध तद्वनं नाम। तद्वनमित्युपासितव्यम्। स य एतदेवं वेदाभि हैनꣳ सर्वाणि भूतानि संवाञ्छन्ति ॥६॥

अनु०—उसी [ब्रह्म] का तद्वन[1] नाम है। उस की तद्वन [नाम] से उपासना करनी चाहिए। जो इसे इस प्रकार जानता है उसे सभी भूत भली भाँति चाहने लगते हैं। (६)

व्या०—मनुष्य के शरीर में वही मन जो गतिमान, प्रकाशक, तथा इच्छावान् है वही ब्रह्म है, जो अद्भुत पुरुष के रूप में प्रकट हुआ और जिस की इच्छा से उमा उत्पन्न हुई थी। वही मन जो जीवात्मा से एक (अनन्य) है उस को ब्रह्म समझ कर उस की साधना करता है। जो इस शिक्षा को जिस का वर्णन किया गया है जानता है, मन तथा जीवात्मा को ब्रह्म जान कर साधना करता है, वह समस्त प्राणियों का मित्र हो जाता है। [५-६][2]

'उपनिषदं भो ! ब्रूहि' इति। 'उक्ता त उपनिषद्, ब्राह्मी वाव त उपनिषदमब्रूम' इति ॥७॥

अनु०—'हे [गुरो] ! उपनिषद् कहिए।' [गुरु ने कहा] 'हम ने तुझ से उपनिषद् कह दी, निश्चय ही हम ने तुझ से ब्राह्मी उपनिषद् कही है'। (७)

---

**१ 'तद्वन' एक रहस्यमय पद है, जिस का अनुवाद कठिन है। शंकर इस का अर्थ यूं करते हैं—'तस्य वनं तद्वनम्; वननीयं संभजनीयम्। अतः तद्वनं नाम।' अर्थात् ब्रह्म का वननीय, भजनीय, होना।**

**२ मूल ग्रंथ (सि० अ०) में मंत्र ५ और ६ की व्याख्या एक साथ की गयी है।**

व्या०—सब देवता इन्द्र से जो सभी का राजा है बोले कि उपनिषद् का, जिस के द्वारा हम इस साधना को जानें और समझें उस का, हमें उपदेश कीजिए। [७]

तस्यै तपो, दमः, कर्मेति प्रतिष्ठा; वेदाः सर्वाङ्गानि; सत्यमायतनम् ॥८॥

उस (ब्राह्मी उपनिषद्) की तप, दम, कर्म प्रतिष्ठा (आधार) हैं, वेद सारे अंग हैं; और सत्य आयतन (निवास-स्थान) है। (८)

व्या०—इन्द्र ने कहा, तप करो, इन्द्रिय-निग्रह करो, सत्कर्म निरन्तर वेदानुसार करते रहो, वेदाध्ययन करो, और जो वेद-विहित है उसे करते रहो, और सत्य का, जो सब का मूल है, सदैव आचरण करते रहो। यही उपनिषद् है, अर्थात् सन्मार्ग-दर्शक। [८]

यो वा एतामेवं वेदापहत्य पाप्मानमनन्ते स्वर्गे लोके ज्येये प्रतितिष्ठति प्रतितिष्ठति ॥९॥

अनु०—निश्चय ही जो इस [उपनिषद्] को इस प्रकार जानता है [वह] पाप का नाश करके अनन्त और महान् स्वर्गलोक में प्रतिष्ठित होता है, प्रतिष्ठित होता है। (९)

व्या०—जो कोई इस उपनिषद् को जानता है, वह अपने समस्त पापों को दूर कर के परम पद को प्राप्त कर लेता है और परम पद में प्रतिष्ठित हो जाता है। [९]

अथर्ववेदीय केनोपनिषद् समाप्त हुई।

॥ इति चतुर्थः खण्डः ॥

[ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक्, प्राणश्, चक्षुः, श्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि। सर्वं ब्रह्मौपनिषदम्। माऽहं ब्रह्म निराकुर्याम्। मा मा ब्रह्म निराकरोत्। अनिराकरणमस्त्व-निराकरणमस्तु। तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु धर्मास् ते मयि सन्तु, ते मयि सन्तु।]

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

[ॐ]

# कठोपनिषद्

[ कृष्णयजुर्वेदीय-कठशाखीय ]

## प्रथमो ऽध्यायः

### प्रथमा वल्ली[1]

[ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै । तेजस्वि नावधीतमस्तु । मा विद्विषावहै ।]

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

[वह परमात्मा] हम [आचार्य और शिष्य] दोनों की साथ-साथ रक्षा करे। हम दोनों का साथ-साथ पालन करे। हम साथ-साथ [विद्या-सम्बन्धी] सामर्थ्य प्राप्त करें। हम दोनों का पढ़ा हुआ तेजस्वी हो। हम द्वेष न करें। त्रिविध ताप की शान्ति हो।

ॐ उशन् ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसं ददौ। तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस ॥१॥

अनु०—प्रसिद्ध है कि यज्ञ-फल के इच्छुक वाजश्रवा के पुत्र ने [विश्वजित् यज्ञ में] अपना सारा धन दान कर दिया। उस का नचिकेता नामक एक पुत्र था। (१)

सि०अ०[2]—वाजश्रबस नाम एक ऋषीश्वर का है। एक यज्ञ होता है जिस में जो कुछ भी पास में होता है उसे दान कर दिया जाता है। ऐसे यज्ञ का अनुष्ठान कर के उस ने अपनी सारी सम्पत्ति बेच कर और गायें क्रय कर के सब की सब ब्राह्मणों को दे डालीं। यह गायें जिन्हें उस ने ब्राह्मणों को दीं सब की सब बूढ़ी और बेकार थीं। इस ऋषीश्वर के नचिकेता नामक एक पुत्र था। [१]

---

१ यहाँ दी हुई आख्यायिका किञ्चित् भेद के साथ तैत्तिरीय ब्राह्मण (३.११.८.१-६) से ली गयी है।

२ सि० अ० = 'सिर्रे अक्बर', शाहज़ादः दाराशिकोह-कृत ५१ उपनिषदों की फ़ारसी-व्याख्या।

तꣳ ह कुमारꣳ सन्तं दक्षिणासु नीयमानासु श्रद्धाऽऽविवेश। सोऽमन्यत—॥२॥

अनु०—जिस समय दक्षिणाएँ (दक्षिणास्वरूप गायें) ले जायी जा रही थीं, उस में कुमार होते हुए भी श्रद्धा (आस्तिक्यबुद्धि) का आवेश हुआ। वह सोचने लगा—(२)

सि०अ०—यद्यपि वह छोटा और अल्पवयस्क था, तथापि जब उस ने देखा कि उस के पिता ने ऐसी गायें ब्राह्मणों को दान करने के लिए मंगायी हैं जो अब बच्चा भी नहीं दे सकतीं, तब उस के मन में आया कि मेरा पिता ऐसी गायें लोगों को दान देगा तो अच्छा नहीं होगा। [२]

पीतोदका, जग्धतृणा, दुग्धदोहा, निरिन्द्रियाः,—
अनन्दा नाम ते लोकास् तान् स गच्छति ता ददत् ॥३॥

अनु०—जो जल पी चुकी हैं, जिन का घास खाना समाप्त हो चुका है, जिन का दूध दुह लिया गया है, और जिन में प्रजनन-शक्ति का भी अभाव हो गया है उन गायों का दान करने से वह दाता, जो अनन्द (आनन्दशून्य) लोक हैं, उन को जाता है। (३)

सि०अ०—वह (पिता) अच्छे फल की इच्छा करता है किन्तु इस प्रकार की गायों का दान करने से ऐसे लोक को प्राप्त होगा जहाँ अच्छा फल और आनन्द नहीं प्राप्त करेगा। [३]

स होवाच पितरं—'तत! कस्मै मां दास्यसि?' इति। द्वितीयं, तृतीयम्। तꣳ होवाच—'मृत्यवे त्वा ददामि' इति ॥४॥

अनु०—तब वह अपने पिता से बोला—'हे तात! आप मुझे किस को देंगे?' [इसी प्रकार उस ने] दूसरी-तीसरी बार [भी कहा]। तब [पिता ने] उस से कहा—'मैं तुझे मृत्यु को दूंगा'। (४)

सि०अ०—फिर उस के हृदय में यह बात आयी कि उस (पिता) के पास जो कुछ था उस ने दान कर दिया, यदि मुझे भी भगवान् की राह में दान कर दे तो सम्भव है

कि अच्छा फल प्राप्त करे। इस भावना से वह पिता के पास जा कर बोला——हे पितः ! आप मुझे किसे दान करेंगे ? जब पिता ने उत्तर नहीं दिया, तो पुत्र ने यह बात तीन बार दुहरायी। पिता रुष्ट हो कर बोला——तुझे यमराज को दूँगा। [४]

बहूनामेमि प्रथमो, बहूनामेमि मध्यमः।
किꣳ स्विद् यमस्य कर्तव्यं यन् मयाऽद्य करिष्यति ॥५॥

अनु०—[नचिकेता का अनुताप–] मैं बहुत से [शिष्य या पुत्रों] में तो प्रथम (मुख्य वृत्ति से) चलता हूँ और बहुतों में मध्यम (मध्यम वृत्ति से) जाता हूँ। यम का ऐसा क्या कार्य है जिसे [पिता] आज मेरे द्वारा सिद्ध करेंगे ? (५)

सि०अ०——पिता से यह सुन कर नचिकेता हृदय में विचारने लगा कि मैं अपने पिता के सभी शिष्यों और पुत्रों से श्रेष्ठतर हूँ, मेरा क्या अपराध है कि पिता ऐसा बोले। और मुझे यमराज को दे डालने से उन्हें कौन सा लाभ पहुँचेगा ? [५]

'अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथाऽपरे–
सस्यमिव मर्त्यः पच्यते, सस्यमिवाजायते पुनः' ॥६॥[1]

अनु०—[नचिकेता ने पिता से कहा–] 'जिस प्रकार पूर्व पुरुष व्यवहार करते थे उस का विचार कीजिए तथा जैसे वर्तमानकालिक अन्य लोग प्रवृत्त होते हैं उसे भी देखिए। मनुष्य खेती की भाँति पकता (वृद्ध हो कर मर जाता) है और खेती की भाँति फिर उत्पन्न हो जाता है।' (६)

सि०अ०——पिता ने रोष में आकर ऐसी बात मुँह से निकाली अवश्य थी किन्तु वह उस से चिन्तित भी हो गया था। नचिकेता ने उसे चिन्तित पा कर कहा——हे पितः! आप अपने पूर्वजों की ओर दृष्टि ले जायँ, जिन्हों ने जो कुछ कहा उस से फिरे नहीं। आज भी सत्पुरुषों की यही परम्परा है। जो कुछ उत्पन्न हुआ है अन्ततः नश्वर है। अतएव उत्पन्न अनाज पकता है, उस के पश्चात् सूख जाता है। [६]

---

१ मौलाना रूम के इस पद्य से मिलान कीजिए——

'हफ़्त सद हफ़्ताद क़ालिब दीदः अम हम्चु सब्ज़ः बारहा रोईदः अम'

अर्थात् 'मैंने ७७० योनिआँ देखी हैं और वनस्पति के समान पुनः पुनः उत्पन्न हुआ हूँ।'

'वैश्वानरः प्रविशत्यतिथिर् ब्राह्मणो गृहान् ।
तस्यैताꣳ शान्ति कुर्वन्ति, हर वैवस्वतोदकम्' ॥७॥

अनु०—[यमराज के घर जा कर नचिकेता उपेक्षित रहा। तब लोगों ने यम से कहा–] 'ब्राह्मण-अतिथि हो कर अग्नि ही घरों में प्रवेश करता है। [साधु पुरुष] उस अतिथि की यह [अर्घ्य-पाद-दानरूपा] शान्ति किया करते हैं। [अतः] हे वैवस्वत (विवस्वान् की सन्तान)! [इस ब्राह्मण-अतिथि नचिकेता की शान्ति के लिए] जल ले जाइए। (७)

सि०अ०——इस अनाधार जगत् का यही व्यवहार है। अतः आप ने यह जो कहा है कि तुझे यमराज को दान कर दूँगा मुझे उसे दान कीजिए और असत्यभाषी न बनिए। पिता ने कहा——मैं ने तुझे यमराज के पास भेज दिया। नचिकेता यमराज के पास गया। जब वह यमराज के घर पहुँचा, तो यमराज घर में नहीं था, कहीं गया हुआ था। नचिकेता तीन दिन उस के घर पर रहा और कुछ भी नहीं खाया-पिया। जब यमराज अपने घर लौटा तो उस के घरवालों ने उस से कहा——जो ब्राह्मण किसी के घर अतिथि होता है वह अग्नि के समान होता है जिसे शुश्रूषा के जल से शान्त करना चाहिए। आप उस से कुशल-क्षेम पूछिए, उस की शुश्रूषा कीजिए, और पाँव पखारने के लिए जल लीजिए। [७]

'आशाप्रतीक्षे, संगतꣳ, सूनृतां च,
इष्टापूर्ते, पुत्रपशूꣳश् च सर्वान्--
एतद् वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो
यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे' ॥८॥

अनु०—'जिस के घर में ब्राह्मण बिना भोजन किये रहता है उस मन्द बुद्धि पुरुष की आशा, प्रतीक्षा, सम्बन्ध, प्रिय वाणी, [यागादि] इष्ट कर्म, [उद्यानादि] पूर्त कर्म, पुत्र, और पशु सभी को वह नष्ट कर देता है।' (८)

सि०अ०——जिस मूर्ख के घर ब्राह्मण अतिथि होता है और भूखा रहता है और वह ब्राह्मण की सेवा-शुश्रषा नहीं करता, उस से आशा दूर हो जाती है, जो वस्तु प्राप्त

होने वाली होती है वह हाथ नहीं आती, और वह सत्संग के पुण्य से वंचित हो जाता है। और यदि वह स्वयं भी अच्छी बात कहता है तो हृदयों में उस का प्रभाव नहीं होता, वह यज्ञ और दान के फल से भी वंचित रह जाता है, उस की सन्तान और सम्पत्ति भी कम हो जाती है, और वह इस प्रकार की विपत्तियों में फँस जाता है। [८]

'तिस्रो रात्रीर् यदवात्सीर् गृहे मे
अनश्नन् ब्रह्मन्नतिथिर् नमस्यः।
नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन्! स्वस्ति मेऽस्तु;
तस्मात् प्रति त्रीन् वरान् वृणीष्व' ॥९॥

अनु०—[तब यम नचिकेता से बोला—] 'हे ब्रह्मन्! तुम्हें नमस्कार हो; मेरा कल्याण हो। तुम नमस्कार-योग्य अतिथि हो कर भी मेरे घर में तीन रात्रि तक बिना भोजन किये रहे; अतः उस [तीन रात्रियों] के लिए [मुझ से] तीन वर माँग लो।' (९)

सि०अ०—यमराज यह सुन कर नचिकेता के पास गया और बोला—हे पूज्य ब्राह्मण! हे प्रिय अतिथि! तुम जो हमारे घर पर तीन दिन भूखे-प्यासे रहे मेरा यह पाप क्षमा करो, तुम्हें मेरा नमस्कार, तुम्हारे प्रताप से मेरे पाप दूर हों और मुझे सुख-समृद्धि प्राप्त हो। यतः तुम मेरे घर पर तीन रात भूखे रहे, जो वर चाहो वह माँगो। [९]

'शान्तसंकल्पः सुमना यथा स्याद्
वीतमन्युर् गौतमो माऽभि मृत्यो!
त्वत्प्रसृष्टं माऽभिवदेत् प्रतीत—
एतत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे' ॥१०॥

अनु०—[नचिकेता बोला—] 'हे मृत्यो! जिस से मेरे पिता वाजश्रवस मेरे प्रति शान्तसंकल्प, प्रसन्नचित्त, और क्रोधरहित हो जायँ तथा आप के भेजने पर मुझे पहचान कर बातचीत करें—यह [मैं] तीन वरों में से पहला वर माँगता हूँ।' (१०)

सि०अ०—नचिकेता ने कहा—मेरे पिता को मेरे आप के पास आ जाने से जो यह सोच कर दुख हुआ है कि मेरा हाल क्या होगा उस दुःख को आप उन से दूर कर दें,

उन्हें प्रसन्नचित्त कर दें, मेरे पिता को मेरे प्रति जो रोष उत्पन्न हुआ था उस से भी मेरे पिता को मुक्त कर दें, और मुझे पिता के पास वापस भेज दें। इस प्रकार भेजें कि मेरे पिता यह न समझें कि मैं आप के पास न आ कर रास्ते से ही लौट गया हूँ, और वे जानें कि आप ने मुझे पिता के पास वापस भेजा है। हे यमराज! यह मेरा एक वर है। [१०]

'यथा पुरस्ताद् भविता प्रतीत
औद्दालकिरारुणिर् मत्प्रसृष्टः।
सुखꣳ रात्रीः शयिता वीतमन्युस्
त्वां ददृशिवान् मृत्युमुखात् प्रमुक्तम्' ॥११॥

अनु०—[मृत्यु ने उत्तर दिया—] 'मुझ से प्रेरित होकर अरुणपुत्र उद्दालक-पुत्र वाजश्रवस तुझे पूर्ववत् पहचान लेगा और क्रोधरहित हो कर रात्रिओं में सुखपूर्वक सोयेगा; [यह सोच कर कि उस ने] तुझे मृत्यु के मुख से छूट कर आया हुआ देखा।' (११)

सि०अ०——यमराज ने कहा——तेरा पिता मेरे वचन से पुनः प्रसन्न हो जायगा जैसा कि वह तुझ से पहले प्रसन्न था और उस का क्रोध दूर हो जायगा और मृत्यु के मुख से छूटे हुए तुझ को देख कर प्रसन्नचित्त हो जायगा। तेरा यह वर पूर्ण हुआ। [११]

'स्वर्गे लोके न भयं किंचनास्ति,
न तत्र त्वं, न जरया बिभेति।
उभे तीर्त्वाऽशनायापिपासे
शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके' ॥१२॥

अनु०—[प्रथम वर माँगते हुए नचिकेता बोला—] 'स्वर्गलोक में कुछ भी भय नहीं है, वहाँ आप भी नहीं होते, और न वहाँ [कोई] वृद्धावस्था से ही डरता है। स्वर्गलोक में [पुरुष] भूख-प्यास दोनों को पार कर के, शोक से ऊपर उठ कर, आनन्दित होता है।' (१२)

सि०अ०——नचिकेता बोला——स्वर्गलोक में कोई भय नहीं है क्योंकि आप यमराज का उस में प्रवेश नहीं है। उस स्वर्ग में जरावस्था की भी चिन्ता नहीं है। वहाँ पुरुष क्षुधा और तृषा तथा शोक से मुक्त हो कर सदा आनन्द में रमण करते हैं। [१२]

# शुद्धि पत्र

'वाणी सरोवर' के जनवरी-अंक में 'मलयाळ्म-महाभारत' में छपते समय प्रमादवश अशुद्धियाँ रह गई हैं। उनका शुद्धिपत्र नीचे अंकित करते हुए उदार पाठकों से सविनय निवेदन है कि पुस्तक के मूल पाठ में संशोधन करते हुए अकिञ्चन का प्रथम प्रयास समझकर क्षमा प्रदान करें:—

—सम्पादक

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २८ | ७ | भवणल्गीता | भगवल्गीता |
| | १२ | माकवालितिनुटॅ | माकयालितिनुटॅ |
| ३१ | ५ | शापदियुं | शापादियुं |
| | ९ | सर्वङ्ङळ् | सर्पङ्ङळ् |
| ३२ | १३ | विद्यभ्यासवुं | विद्याभ्यासवुं |
| ३३ | ५ | वासिष्ठादिवुम् | वासिष्ठादियुम् |
| ३४ | ९ | देदव्यासन् | वेदव्यासन् |
| ३५ | १० | गोष्टिकळुन् | गोष्टिकळुम् |
| ३८ | ४ | तपोबलतुं | तपोबलवुं |
| ३९ | ९ | रामनाय | रामनाय् |
| ४० | ९ | ळॅळ्ळां | ळॅल्लां |
| | १० | परञ्ञातुम् | पऱञ्ञातुम् |

नोट—'ए' और 'ओ' की ह्रस्व और दीर्घ मात्राओं में भी अशुद्धियाँ रह गई हैं। भविष्य में सावधानी रखी जायगी।

मोरोरो नामं वेषं कैक्कॉण्टु छन्नन्माराय्
ओराण्टु वसिच्चनाळुळ्ळॉरु कथयॅल्लां ८९
राजसेवक-वृत्ति धौम्यन् चॉल्लियवारुम्
व्याजनिर्व्याजं मत्स्यनगरप्रवेशनं ९०
मल्लनिग्रहं पिन्नॆ कीचकादिकळ्वधं
निर्लज्जन् सुयोधनन्तन्नुटॆ निरूपणं ९१
गोग्रहणादिकळुं विजयविजयवुं
फाल्गुनितन्नालन्नाळुत्तराविवाहवुम् ९२
व्यक्तमाय् विराटपर्व्वं तन्निल् पाराशर्यन्
भक्तिवर्धनकरं सत्यमायरुळ्चॆय्तान् । ९३
अध्यायमरुपत्तेळॆत्रयुं मनोहरं
चित्रार्थं मूवायिरत्तञ्ञूरु पद्यङ्ङळुम् । ९४
स्वैरमायुपप्लाव्ये पाण्डवरिरुन्नतुम्
शौरियॆ वरिप्पान् दुर्योधनन् वन्नवारुम् ९५
चौर्यनिद्रयॆप्पूण्टु भगवान् किटन्नतुम्
शौर्यमेरीटुं पार्थन् कृष्णनॆ वरिच्चतुम् ९६

---

हैं। निकट से देखने में यह (भारत) उत्तम और अत्यन्त पवित्र है। चौथे पर्व में मुनि पाराशर्य ने निम्नलिखित कथाएँ कही हैं। ८५-८८ युधिष्ठिर आदिकों के नाम और वेष बदलकर प्रच्छन्नरूप में एक वर्ष विराट राज्य में रहते समय किये गये कार्यों का वर्णन, धौम्य का राजसेवक की वृत्ति[1] का उपदेश, व्याजनिर्व्याज[2] मत्स्यनगर प्रवेश, पहलवानों को हराना और कीचकादि का वध, निर्लज्ज सुयोधन के विचार, गायों को अधिकार में कर लेना और विजय (अर्जुन) की विजय, फाल्गुनि (अभिमन्यु) का उत्तरा के साथ विवाह—पाराशर्य (व्यास) ने विराटपर्व में यह सब भक्तिवर्द्धन कथाएँ स्पष्ट और यथार्थ रूप में कही हैं। इसमें सरसठ अध्याय और अत्यन्त मनोहर, सरसार्थ तीन हजार श्लोक हैं। ८९-९४ विद्वान् कृष्ण-द्वैपायन वेदव्यास ने उद्योगपर्व में ये कथाएं कही हैं—पाण्डवों का गुप्तवास-काल में उपप्लाव्य में आराम से रहना, श्रीकृष्ण को सहायक के रूप में वरण

---

१ राजा-सेवक के कर्त्तव्य का उपदेश देना  २ छल की भावना न रखते हुए भी छल-रूप से।

गान्धारीसुतन् यदुसैन्यत्तॆ वरिच्चतुम्
कान्तनां पद्माकान्तन् कोमळलीलकळुम् ९७
इन्दुशेखरवन्द्यनिन्दुबिम्बास्यांबुज-
निन्द्रादिवृन्दारकवृन्दवन्दितन् परन् ९८
इन्दिरावरन् नन्दनन्दनन् नारायणन्
चन्द्रिकामन्दस्मितसुन्दरन् दामोदरन् ९९
सुन्दरीजनमनोमन्दिरन् वासुदेवन्
वृन्दारण्यानुवासि कन्दर्पकळेबरन् १००
छन्दसांपति जगल्कन्दळभूतन् मुचु-
कुन्दनन्दितन् परमानन्दन् श्रीगोविन्दन् १०१
इन्द्रनन्दननुमाय् चॆन्नथ समवर्त्ति-
नन्दननुतनिक्कुळ्ळिलानन्दं वळर्त्तुं १०२
सञ्जयन् वन्नु पुनरंबिकासुतन्चॊल्ला-
लञ्जसा परञ्ञतु केट्टु धर्म्मात्मजनुम् १०३
कञ्जनेत्राज्ञापूर्वं खण्डिच्चु परञ्ञतुं
सञ्जयन् चॆन्नु धृतराष्ट्रनां कपटौघ- १०४

करने के लिए दुर्योधन का आगमन, कृत्रिम निद्रा में भगवान् का लेट जाना, अतिशौर्य वाले पार्थ (अर्जुन) का श्रीकृष्ण को वरण करना, गान्धारीसुत दुर्योधन का यदुवंशियों की सेना को वरण करना, लोकप्रिय पद्माकान्त (विष्णु) की कोमल लीलाएँ, इन्दुशेखर (शिवजी) के वन्द्य[1] चन्द्रसदृश कमलमुख वाले, इन्द्रादिदेवगणवन्द्य, पर, इन्दिरावर[2], नन्दनन्दन, नारायण, चन्द्रिका-सदृश मन्द मुस्कान से सुन्दर, दामोदर, सुन्दरीजनमनोमन्दिर,[3] वासुदेव, वृन्दावनविहारी, मदनसदृश शरीरवाले, वेदों के पति, जगत्कन्दल[4] मुचुकुन्दनन्दित परमानन्द श्रीगोविन्द का इन्द्रनन्दन (अर्जुन) के साथ जाकर धर्मराजपुत्र युधिष्ठिर का आनन्द बढ़ाना। ९५-१०२ अंबिकासुत (धृतराष्ट्र) की ओर से सञ्जय का एक सन्देश लाना, उसे सुनकर कमलनेत्र श्रीकृष्ण की अनुमति से धर्मपुत्र द्वारा उसका खण्डन, सञ्जय का युधिष्ठिर की

१ वन्दना के योग्य २ लक्ष्मीपति ३ सुन्दरियों के मन-मन्दिर अर्थात् सुन्दरी नारियों का मन जिसमें धरा रहता है। ४ संसार के लिए मीठे कन्दमूल के समान मधुर ५ मुचुकुन्द के द्वारा आनन्दप्राप्त।

पञ्जरं तन्निल् धर्म्मजोक्तिकळ् पकरातँ
विज्वरात्मना सर्व्वमरियिच्चतु केट्टु १०५
सज्वरात्मना निजमन्दिरं पुक्कवारुम्
छिद्रात्मावाय धृतराष्ट्रभूपतिश्रेष्ठन् १०६
निद्रयुमिल्लाञ्ञाधिमुळुत्तु चमञ्ञतुम्
अन्नेरं विदुररँ वरुत्ति रात्रियिङ्कल् १०७
मन्नवनवन् चॉन्न नयङ्ङळ् केट्टु केळा-
ञ्ञाध्यात्मं सनत्स्कुमारन् मुनि परञ्ञतु- १०८
मित्रनन्दनन् मुनि मित्रमाय् परञ्ञतु-
मंबुजमित्रात्मजनन्दनन् प्रार्थिक्कया- १०९
लंबुजासनसेव्यनंबुजनाभन् नाथन्
अंबिकावरप्रियनंबुजशरतातन् ११०
बिंबोष्ठन् कंबुधरन् अंबरचरनाथन्
अंबिकासुतालयं प्रापिच्चु सभयिङ्कल् १११
सन्धिप्पान् परञ्ञप्पोळन्धात्मा सुयोधनन्
बन्धिप्पान् भाविक्कयालन्धकान्वयजातन् ११२
बन्धुरकळेवरन् बन्धूकसमाधरन्
बन्धुलोकात्मानन्दकरनां धराधरन् ११३

---

उक्तियों को वैसे ही विना आवेग के छल तथा पाप की मूर्ति धृतराष्ट्र को बतलाना, धृतराष्ट्र का पीड़ित होकर अपने घर चले जाना, वहाँ उन दोषयुक्त भूपतिश्रेष्ठ को नींद न आना और बहुत ही चिन्तित हो जाना, तब रात को विदुर जी को बुलाना और उनकी नीतियों को सुनना, तदनन्तर मुनि सनत्कुमार की आध्यात्मिक बातों को सुनना, मित्र-पुत्र मुनि का मित्र बनकर कहना, अंबुजमित्रात्मजनन्दन[1] (युधिष्ठिर) की प्रार्थना से अंबुजासनसेव्य[2], अंबुजनाभ[3], प्रभु, अंबिकावरप्रिय[4], अंबुजशरतात[5], कुन्दरू के से लाल-लाल ओठ वाले, शंख लिए हुये, गरुड़ाधिपति श्रीकृष्ण का धृतराष्ट्र के घर पहुँचना १०३-१११ और वहाँ सभा में संधि करने के लिए कहना, तब अन्धात्मा

---

१ संस्कृत में कमल-मित्र सूर्य को कहा गया है तथा सूर्य के पुत्र यमराज प्रसिद्ध हैं, अतः युधिष्ठिर धर्मराज यमराज के पुत्र हुए। २ ब्रह्मा जी से सेवा किए गए ३ विष्णु ४ शिव के प्यारे ५ कामदेव (प्रद्युम्न) के पिता श्री कृष्ण।

बन्धमोक्षङ्ङळिल्लातुळ्ळॉरु परब्रह्मं
तन्तिरुवटि विश्वरूपं काट्टियवारुम् ११४
अश्वत्थामावुतन्नॆ रहसि चॆन्नु कण्टु
विश्वासत्तोटु परञ्ञावनॆक्कॉण्टु सेना- ११५
पत्यं चॆय्यरुतॆन्नु सत्यं चॆय्यिच्चवारुम्
पथ्यमॆल्लावरोटुंसत्यमाय् चॉन्नवारुम् ११६
विश्वनायकन् हरिदश्वनन्दननोटु
निश्शेषमाय् नयमरुळिचॆय्तवारुम् ११७
कुन्तीदेवियॆक्कण्टु मन्त्रिच्चु भयं तीर्त्तु
कुन्तीनन्दनन्मारॆ प्रापिच्चवारुमॆल्लां ११८
बद्धवैरत्तोटवरुद्धतबुद्धियोटुं
युद्धसन्नद्धन्माराय् सैन्यं कूट्टियवारुम् ११९
आन्ध्यमोटुलूकन् वन्नरियिच्चतुं केट्टु
कौन्तेयन् कॉल्लाक्कॉल चॆय्तयच्चतुमॆल्लां १२०
चॉल्लिनान् महारथगणने गंगादत्तन्
चॉल्लियोरंबोपाख्यानान्तपर्यन्तं कृष्णन् १२१

(अन्धे धृतराष्ट्र की सन्तान) सुयोधन का उनको बाँधने का यत्न करने के कारण अन्धकान्वयजात[1], वन्धुरकलेवर[2], बन्धूकसमाधर[3], बन्धु लोगों की आत्मा का आनन्द करनेवाले, पृथ्वी के भार को धारण करने वाले, बन्धन और मोक्ष के परे परब्रह्म (श्रीकृष्ण) का अपना विश्वरूप दिखलाना ११२-११४ और एकान्त में अश्वत्थामा से मिलना और उनसे प्रतिज्ञा करवाना कि वे सेनापति पद नहीं ग्रहण करेंगे, सब को यथार्थ पथ्य (हितकारी बात) बतला देना, विश्वनायक (श्रीकृष्ण) का हरिदश्वतनय (सूर्यपुत्र-कर्ण) से सारी नीति कह देना, कुन्तीदेवी से मिलकर उनसे सलाह कर उनका भय दूर करना, कुन्तीपुत्रों को प्राप्त करने का प्रकार, वैर बाँधे हुए और उग्रबुद्धि के साथ युद्ध के लिये तत्पर हो जाना और सेना एकत्र करना, ११५-११९ अन्धे होकर (विना समझे शकुनि-पुत्र) उलूक का संदेश लाना, उसे सुनकर कौन्तेय (भीम) का उलूक को मार

१ एक यदुवंशी राजा के कुल में उत्पन्न २ मनोहर मूर्ति ३ गुलदुपहरी नामक पुष्प के समान लाल ओठ वाले ।

विद्वानां वेदव्यासनुद्योगपर्व्वं तन्निल् ।
अध्यायमनुत्तमं नूऱ़ुपत्ताऱ़तिल् १२२
पद्यङ्ङळूनद्वयं निश्चयमेळायिरम्
हृद्यङ्ङळवेद्यङ्ङळनवद्यङ्ङळल्लो । १२३
पिन्नेतु भीष्मपर्वं चॉल्लुवन् चुरुक्कि ञान्
धन्यनां गावल्गणितनिक्कु वेदव्यासन् १२४
सर्व्वभूपालयुद्धमुर्व्वीशनऱ़ियिप्पान्
दिव्यलोचनं नल्कियॅळुन्नळ्ळियवारुम् १२५
सप्तद्वीपङ्ङळोटुं सप्तवारिधिकळुं
सप्तपर्व्वतङ्ङळुं सप्तलोकङ्ङळ् रण्टुं १२६
सप्ताश्वन् मुतलाय सप्तखेचरगत-
सप्तमामुनिगति सप्तमारुतगति १२७
सत्वरमिवयॅल्लां सत्यमाय् चॉन्नवारुं
पुत्रमित्रादिकळुं पित्राद्याचार्यन्मारुं १२८
शत्रुभावेन कण्टु युद्धार्थं युद्धभुवि
वृत्रारिपुत्रन् तत्र चित्तकारुण्यं कैक्कॉ १२९

---

भगा देना, इन सब बातों का गंगादत्त (भीष्म) ने महारथियों की गणना के अवसर पर वर्णन किया और विद्वान् वेदव्यास कृष्ण ने (काशिराज की पुत्री) अम्बा के आख्यान तक की कथाएँ उद्योग पर्व में कही हैं। उस पर्व में एक सौ छब्बीस उत्तमोत्तम अध्याय हैं जिनमें दो कम सात हजार श्लोक हैं, जो हृदय को सुख देने वाले, अवेद्य (दुर्लभ) तथा पापरहित हैं। १२०-१२३ इसके बाद मैं संक्षेप में भीष्मपर्व कहूँगा। श्री वेद-व्यास जी का गावल्गणि[1] अर्थात् सञ्जय को सारे भूपालों का युद्ध देखकर पृथ्वीपति (धृतराष्ट्र) को निवेदन करने के लिए दिव्यनेत्र प्रदान करना, सातों द्वीपों, सातों समुद्रों, सातों पर्वतों, दोनों प्रकार के सातो लोकों (पृथ्वी के नीचे तथा आकाश के ऊपर के १४ लोक), सप्ताश्व (सूर्य) आदि सातो ग्रहों की गति, सप्त ऋषियों की गति, सात मारुतों की गति—इन सब वस्तुओं का यथार्थ वर्णन, १२४-१२७ युद्धभूमि में पुत्र, मित्र, पिता, आचार्य आदि को शत्रु के रूप में देखकर वृत्रारिपुत्र (अर्जुन) का चित्त

---

१ ऋषि गवल्गण के पुत्र 'संजय' को गावल्गणि कहते हैं। (महाभारत आदिपर्व)।

ष्टॅत्रयुमशक्यमितुत्तमहिंसाकर्म्मं
इत्थमोर्त्तवनतिविस्तस्तहृदयनाय् १३०
बुद्धियुंकॅट्टु पार्त्थंन् तेरतिलिरुन्नप्पोळ्
भृत्यभाववुं वच्चु भक्तवत्सलन् कृष्णन्- १३१
भृत्यनोटरुळ्चॅय्तु सत्यमां वेदान्तार्त्थम् ।
नित्यानित्यादिकळां वास्तवं तर्क्कशक्त्या १३२
तत्त्वबोधार्त्थं सत्यज्ञानानन्तानन्दवुं १३३
सत्त्वादिगुणयुक्तप्रकृतिविलासवुं
सत्त्वङ्ङळुळ्ळिल् जीवात्मावाय् तानिरिप्पतुं १३४
क्षेत्रक्षेत्रज्ञभाववास्तवभेदङ्ङळुम्
शास्त्रसिद्धान्तङ्ङळ् वर्ण्णाश्रमाचारभेदं १३५
सूत्रतत्त्ववुं विभूतिप्रभाववुं पिन्नॆ
क्षेत्रकर्म्मवुं सांख्ययोगादि भेदङ्ङळुं १३६
द्वन्द्वभावङ्ङळ् कळञ्ञाद्वयमुऱप्पिच्चा-
नन्दवुमवनरुळ्चॅय्तितानन्दमूर्त्ति । १३७
विश्वविस्मयकरसमरचतुरनु
विश्वरूपवुं काट्टि विश्वासं वरुत्तिनान् १३८

---

करुणा से प्रभावित होकर अत्यन्त भय-त्रस्त हृदय हो जाना और हिंसाकर्म युद्ध से मुँह मोड़ लेना, अपना विवेक खो बैठना और उस समय भक्तवत श्रीकृष्ण जी का अपने भृत्यभाव को भूलकर अपने भृत्य को सत्य वेदान्त (यथार्थ ब्रह्मज्ञान) का उपदेश करना—यह सब उस (ग्रन्थ) में है। उपदेश यों है—१२८-१३२ कुछ तत्व नित्य हैं और कुछ अनित्य। त शक्ति के द्वारा तत्त्वबोध की प्राप्ति के लिए यह बतलाया गया कि ओर तो सत्य, ज्ञान, अनन्त और आनन्द है और दूसरी ओर सत्त्वादिग युक्त प्रकृति का विलास है। सत्त्वादि के अन्दर भगवान् जीवात्मा के में विराजमान है। क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ (शरीर और जीवात्मा) वास्तविक भेद, शास्त्रप्रतिपादित सिद्धान्त. वर्णाश्रमाचार-भेद, सूत्रोक्तत विभूतिप्रभाव, क्षत्रिय का कर्त्तव्य, सांख्य और योग में भेद, यह सब बत कर आनन्दमूर्ति भगवान् ने द्वैत को त्यागकर अद्वैत को स्थिर किय १३३-१३७ फिर समस्त जगत का विस्मय करने वाले, युद्ध में च

संगरकोलाहलं तुटङ्ङिप्पिन्नॅश्शेषं
गंगानन्दनन् देवव्रतनां कृष्णभक्तन् १३९
पतिनॉन्नक्षौहिणीसंख्ययां नानासेना-
पतिनायकन् महारथनोरोरोदिनं १४०
पतिनायिरं कालाळ् पतिनायिरमश्वं
पतिनायिरं गजं पतिनायिरं तेराळ् १४१
पतितमाक्कीट्टुवोनतुपोल् त्रिभुवन-
पतिवाञ्छितमिति मतिमानरिकयाल् १४२
अङ्ङनॅ पत्तुदिनं युद्धं चॅय्तितु भीष्मर्
मङ्ङातॅयतिन्निटॅ रण्टुनाळ् नारायणन् १४३
एॅट्टुत्तु सुदर्शनं पटुत्वमोटप्पोळ्
अट्टुत्तुकण्टिट्ट्टुळ्ळ भगवल्स्तुतिकळुम् १४४
अवन्तन्ननुग्रहाल् शिखण्डितन्नॅ मुम्पिल्
विबुधपतिसुतन् निर्त्तिनान् युद्धत्तिन्नाय् १४५
अतिनाल् भीष्मर् शरशयने वसिच्चतुं
वसुधात्मजमुनियरुळिचॅय्तानल्लो । १४६
अध्यायमतुमॉरुनूट्टॉरुपत्तॅट्टल्लो
पद्यङ्ङळेळायिरत्तॅण्णूट्टॅण्पत्तुनालुम् । १४७

अर्जुन को अपना विश्वरूप दिखलाकर उसमें विश्वास पैदा किया। इसके बाद युद्ध का कोलाहल प्रारम्भ हुआ और गंगानन्दन, कृष्णभक्त महारथ[1] ग्यारह अक्षौहिणी वाली सेना के सेनापति देवव्रत (भीष्म) ने प्रतिदिन दस हजार पैदल सिपाहियों, दस हजार घोड़ों, दस हजार हाथियों और दस हजार रथियों को गिराया, क्योंकि उन बुद्धिशाली ने समझ लिया था कि त्रिभुवनपति (भगवान्) की यही इच्छा है। इस प्रकार भीष्म जी ने दस दिन विना ग्लानि के युद्ध किया। इस समय के बीच दो दिन नारायण ने बड़ी कुशलता के साथ अपना सुदर्शन उठाया और उस समय (सर्वत्र) भगवान की स्तुति सुनी गई। भीष्म जी के अनुग्रह से विबुधपति (इन्द्र) के पुत्र अर्जुन ने शिखंडी को युद्ध के लिये सामने खड़ा किया। १३८-१४५ परिणाम यह हुआ कि भीष्म जी शरशय्या पर लेट गये। वसुधात्मज मुनि

१ दस हजार सैनिकों के साथ अकेला युद्ध करने वाला।

पतिनॉन्नान्नाळ् पिन्नॅ दुरियोधनन् सेना-
षतियायभिषेकं द्रोणाचार्यर्क्कु चॅय्तान् १४८
त्रिगर्तन् संशप्तकगणत्तोटॉरुमिच्च-
ङ्ङकट्टिक्कॉण्टुपोयान् विजयन्तन्नॅयतुम् १४९
अप्रतिरथनाय कुप्रभु भगदत्तन्
सुप्रतीकाख्यनाय गजत्तिन् कळुत्तेऱि १५०
कॅल्पोटु वृकोदरन्तन्नॉटु पॉरुततुम् ।
चिल्पुमानोटुंकूटि फल्गुननप्पोळ् वन्नि- १५१
ट्टप्रमेयास्त्रप्रयोगं तुटर्न्नतुनेरम्
मत्तहस्तीन्द्रबरमस्तकं भगदत्त- १५२
मस्तकचापमॉरु पत्रिकॉण्टरुत्ततुम् ।
अंभोजव्यूहं भेदिच्चुम्पर्कोन्मकन्मकन् १५३
वम्पट मुटिक्कयाल् कुंभसंभवादिकळ्
कम्पमानसन्माराय् संभ्रमत्तोडुमप्पोळ् १५४
अम्पॉळिञ्ञारु महारथन्मारॉरुमिच्चु
वम्पनामभिमन्युतन्नॅ क्कॉन्नतुमूलं १५५

(वेदव्यासजी) ने यह सब सुनाया। उस (भीष्म पर्व) में एक सौ अठारह अध्याय हैं और सात हजार आठ सौ चौरासी श्लोक हैं। १४६-१४७ ग्यारहवें दिन दुर्योधन ने द्रोणाचार्य का सेनापति के पद पर अभिषेक किया। त्रिगर्त[1] ने संशप्तकगण के साथ अर्जुन को दूर हटाया। अप्रतिरथ और कुप्रभु भगदत्त ने सुप्रतीक नाम के हाथी के कन्धे पर बैठकर बड़े जोर से वृकोदर (भीम) के साथ युद्ध किया। उस समय अर्जुन, चित्पुमान् (श्रीकृष्ण जी) के साथ आये और उन्होंने अप्रमेयास्त्र का प्रयोग आरम्भ किया और मतवाले हाथी के मस्तक, भगदत्त के मस्तक तथा चाप को एक बाण से काट डाला। अर्जुनपुत्र अभिमन्यु ने चक्रव्यूह को भेद कर शत्रुसेना का नाश किया। इसलिए द्रोणाचार्य आदि चकित हो गये और बड़े संभ्रम के साथ छै महारथियों ने निरन्तर वाणप्रयोग से शक्तिशाली अभिमन्यु का वध किया। १४८-१५५ इस वध से उत्पन्न युधिष्ठिर जी का दुःख दूर करने

१ यह शब्द महाभारत में राजा तथा नगरनिवासी और एक नगर—इन तीनों अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। यहाँ राजा के अर्थ में है।

धर्म्मजन्दुःखं तीर्प्पान् सृंजयोपाख्यानादि
निर्म्मलन् वेदव्यासनरुळिचॆय्तवारुम् १५६
निर्ज्जरेन्द्रात्मजनामर्ज्जुनशोकं तीर्प्पान्
दुर्ज्जनकालनाय कृष्णसान्त्वनङ्ङळुम् १५७
कृष्णसोदरियाय सुभद्रा मात्स्यपुत्रि
कृष्णयुमित्यादि नारीजनदुःखं तीर्प्पान् १५८
कृष्णसान्त्वनवचनामृतविशेषवुं
वृष्णिवंशोल्भूतनां तृष्णयोटरुळ्चॆय्तु १५९
पुत्रनिग्रहत्तिनु कारणभूतनाय
शत्रु गान्धारीपुत्रमित्रभूपरिल् मुम्पन् १६०
प्रत्यर्त्थि जयद्रथनाय सैन्धवन्तन्नॆ
मित्रनां देवन् नाळॆयस्तमिप्पतिन् मुम्पॆ १६१
मित्रपुत्रालयत्तिन्नयच्चीटुवनॆन्नुं
वृत्रनाशनपुत्रन् सत्यवुं चॆय्तानल्लो । १६२
एत्तीलॆन्नाकिल् पिन्नॆ विल्लुमाय् तीयिल्च्चाटि
मृत्युलोकत्तॆ प्रापिच्चीटुवनॆन्नु चॊन्नान् । १६३
स्वप्नत्तिल् जिष्णुवीरन् कृष्णनॆक्कण्टवारुम्
चिल्पुमानोटुं कूटि कैलासं प्रापिच्चतुं १६४

के लिये वेदव्यास जी ने सृंजयोपाख्यानादि सुनाया। और दुर्जनों के संहर्ता श्रीकृष्ण जी ने देवेन्द्र के पुत्र अर्जुन का दुःख समाप्त करने के लिए सांत्वन-वचन सुनाये, तथा अपनी भगिनी सुभद्रा, मात्स्यपुत्री द्रौपदी आदि नारीजन का दुःख दूर करने के लिये वृष्णिवंशोद्भूत (श्रीकृष्ण) ने सान्त्वना देने वाले अमृतवचनों को सुनाया। फिर वृत्रनाशक इन्द्र के पुत्र अर्जुन ने प्रतिज्ञा की कि अपने पुत्र (अभिमन्यु) के निग्रह का कारणभूत शत्रु गान्धारीपुत्र (दुर्योधन) के मित्र व भूपालों में मुख्य, शत्रु जयद्रथ को दूसरे ही दिन सूर्यास्त समय के पहले ही यमलोक भेज दूँगा। उन्होंने यह भी कहा कि अगर यह न हो सका तो मैं अपने धनुष के साथ अग्नि में प्रवेश कर यमलोक चला जाऊँगा। १५६-१६३ वीर जिष्णु (अर्जुन) का श्रीकृष्ण को स्वप्न में देखना, चित्पुमान् (श्रीकृष्ण जी) के साथ कैलास

१ शत्रु को जीतनेवाले।

शङ्करन् प्रसादिच्चु सङ्कटं तीर्त्तवारुम्
पङ्कजनेत्रपादपङ्कजार्च्चितपुष्पं १६५
शङ्करजटाभारं तङ्कले कण्टवारुम्
तिङ्कळ्तन्कुलजातन् शङ्कयॅक्कळञ्ञातुं १६६
मट्टुळ्ळनृपन्मारॅद्धर्म्मजरक्षय्क्काक्कि-
प्पिट्टेन्नाळ् युद्धत्तिनु कृष्णनुं तानुंकूटि १६७
जंभारिसुतन्तन्नॅ वम्पॉट्टु पॉरुततुं
अम्पिनाल् कुळंकुळिच्चबुनिर्म्माणादियुं १६८
शूरनामलंबुसन् जलसन्धादिकळुं
पोरिलेळक्षौहिणीप्पटयुं मुटिञ्ञातुं १६९
विष्णुचक्रच्छायकॉण्टुष्णांशु मरञ्ञातुं
जिष्णुनन्दननाय जिष्णुतान् जयिच्चतुं १७०
वृद्धक्षत्रात्मजन्तन्नुत्तमांगत्तॅक्कॉण्टु,
वृद्धक्षत्राख्यन्तण्टॅ हस्तत्तिलाक्कियतुं
अस्तमिप्पतिन्नुमुम्पे सत्यत्तॅ रक्षिच्चतुं १७१
रात्रियुद्धवुं घटोल्कचण्टॅ मरणवुं
पार्त्थिवन् धृष्टद्युम्नन् द्रोणरॅ वधिच्चतु- १७२

---

जाना, श्रीशंकर जी का प्रसन्न होकर दुःख दूर करना, श्रीकृष्ण के चरण-कमलों में चढ़े हुए पुष्पों को शिवजी की जटाओं में अर्जुन का देखना, सोमवंशोद्भव की शंकाओं को दूर करना, दूसरे दिन अन्य-भूपालों को युधिष्ठिर जी की रक्षा के लिए नियुक्त कर श्रीकृष्ण जी और अर्जुन का जंभारिसुत के साथ युद्ध करना, अर्जुन का बाणों के द्वारा तालाब खोदकर जल निकालना, युद्ध में शूर अलंबुस, जलसन्ध आदि का तथा सात अक्षौहिणियों का नाश, विष्णुचक्र की छाया से सूर्य का ढक जाना, जिष्णु[1] (अर्थात् इन्द्र) के पुत्र जिष्णु (अर्थात् अर्जुन) की विजय, वृद्धक्षत्र के पुत्र (जयद्रथ) के शिर को उसके पिता के हाथ में पहुँचाना, सूर्यास्त समय के पहले प्रतिज्ञा पालन करना। १६४-१७१ रात्रियुद्ध और घटोत्कच का वध, पार्थिव धृष्टद्युम्न द्वारा द्रोणाचार्य का वध, अश्वत्थामा का क्रुद्ध होकर अस्त्रों का प्रयोग करना, विश्वान्तकारी युद्ध का होजाना, यह सब सातवें द्रोण पर्व में

---

१ शत्रु के जीतनेवाले।

मश्वत्थामावु कोपिच्चस्त्र ङ्ङळयच्चतुं
विश्वान्तकारणमायुण्टाय युद्धङ्ङळु- १७३
मेळामताकुं द्रोणपर्व्वत्तिलरुळ्चॆय्तान्
कालीनन्दननाय मामुनि वेदव्यास- १७४
नध्यायमतिलुण्टु नूऱ्ऱॆळुपतु नल्ल
पद्यङ्ङळुण्टु पतिनायिरत्तिलु पुरं १७५
पिन्नॆयुं तोळ्ळायिरत्तम्पतॆन्नरिञ्ञालुम् ।
पुण्यवर्द्धनं पुरुषोत्तमलीलापूर्ण्णं १७६
कर्ण्णपर्व्ववुं चॊन्नानॆट्टामततु चॊल्लां
वर्ण्णिप्पान् पणियतिलुण्टाय विशेषङ्ङळ् । १७७
त्रिपुरदहनं, माद्रांगेशप्रतीवाद-
मरयन्नत्तोटॊरु वायसं तोऱ्ऱवारुम् १७८
तरणिसुतनोटु मारुति तोऱ्ऱवारुम्
तरणिसुतशरं धर्म्मजनेऱ्ऱवारुम् १७९
पार्त्थनाल् संशप्तकरॊटुक्कप्पॆट्टवारुम्
पार्त्थिवन् पार्त्थनोटु परुषं चॊन्नवारुम् १८०
पार्त्थिवन् तन्नॆकॊल्वान् पार्त्थनोङ्ङियवारुम्
पार्त्थसारथिचॊल्लाल् पार्त्थिवन्तन्नॆ पार्त्थन् १८१

काली (सत्यवती-) नन्दन महामुनि वेदव्यासजी ने वर्णित किया है। इसमें एक सौ सत्तर अध्याय हैं और दस हजार नौ सौ पचास श्लोक हैं। १७२-१७५ (शुकी ने कहा—) वेदव्यासजी ने पुण्यवर्धन और पुरुषोत्तमलीलापूर्ण आठवाँ कर्णपर्व भी कहा। वह भी मैं कहूँगी (यद्यपि) उसका विस्तृत वर्णन करना कठिन है। (१७६-१७७) त्रिपुरदहन, माद्र (शल्य) और अंगनरेश (कर्ण) का विवाद, एक कौए का हंस से हार जाना, तरणिसुत (कर्ण) से मारुति (भीम) का हार जाना, कर्ण-शरों को युधिष्ठिर जी का सहना, पार्थ के द्वारा संशप्तकों[1] का समाप्त हो जाना, पार्थिव (युधिष्ठिर) का अर्जुन से कठोर वचन कहना, पार्थिव को मारने के लिए अर्जुन का तलवार उठाना, पार्थसारथि (श्रीकृष्ण) के कहने से तू-तू कहकर

१ संशप्तकसंग्राम में प्रतिज्ञापूर्वक जाने और वहाँ से न लौटने वाला सैनिक वीर पुरुष।

पेर्त्तु नी नी नीयॅन्नु निन्दिच्चु चॉन्नवारु-
मार्त्तनाय् प्राणत्यागत्तिन्नॉरुम्पॅट्टवारुम् १८२
आर्त्तियॅब्भक्तन्मार्क्कु तीर्क्कुन्न कृष्णन्चॉल्लाल्
पार्त्थनुं वाचा तन्नत्तान् प्रशंसिच्चवारुम् १८३
धर्म्मजन् धनञ्जयन्मारॅयुं निरत्तीट्टु
धर्म्मस्थापनकरन् पोर्क्कॉरुमिप्पिच्चतुं १८४
शूरनां वृकोदरन् घोरसंगराङ्कणे
घोरनां दुश्शासनन्मार्विटं पिळर्न्नतुम् १८५
कर्ण्णफल्गुनयुद्धंतन्नुटॅ कट्टुप्पवुं-
कर्ण्णनागास्त्रप्रयोगादियुं धनञ्जयन् १८६
कर्ण्णनॅ वधिच्चतुं मट्टुमित्तरमॅल्लां ।
पुण्यात्मा वेदव्यासनरुळिच्चॅय्तीटिनान् । १८७
अध्यायमतिलरुपत्तॉन्पतरिञ्ञालुम्
पद्यङ्ङळ् नालायिरत्तिल्पुरं तॉळ्ळायिरम् १८८
पोरतिल् युधिष्ठिरन् शल्यरॅ वधिच्चतुं
मारुतिसुयोधनन्मार् गदायुद्धादियुं १८९
बलभद्रागमनं तीर्त्थमाहात्म्यङ्ङळु-
मलिवोटरुळ्चॅय्तु शल्यपर्व्वत्तिल् कृष्णन् १९०
अध्यायमतिलन्पत्तॉन्पतॅन्नरिञ्ञालुम्
पद्यङ्ङळ् मूवायिरत्तिरुनूट्टिरुपतुम् । १९१

---

उनकी निन्दा करना, फिर दुःखित होकर प्राणत्याग के लिए तैयार हो जाना, भक्तों की पीड़ा समाप्त करने वाले श्रीकृष्ण जी के कहने से अर्जुन का आत्मप्रशंसा करना, धर्मस्थापक श्रीकृष्णजी का युधिष्ठिर और अर्जुन को एक होकर युद्ध करने की प्रेरणा देना। (१७८-१८४) शूर वृकोदर (भीमसेन) का घोर युद्ध, रणभूमि में प्रचण्ड दुःशासन का वक्षःस्थल फाड़ डालना, कर्ण और अर्जुन का घोर युद्ध, कर्ण का नागास्त्र-प्रयोग, धनञ्जय द्वारा कर्ण का वध, इस प्रकार की और कथाएँ पुण्यात्मा वेदव्यासजी ने कहीं। उसमें उनहत्तर अध्याय हैं और चार हजार नौ सौ श्लोक हैं। (१८५-१८८) युद्ध में युधिष्ठिर का शल्य को मारना, मारुति और सुयोधन का गदायुद्ध, बलभद्र का आगमन, तीर्थों का माहात्म्य, यह सब

सौप्तिकपर्व्व तन्निल् चॉल्लियताॅट्टु चॉल्लां
व्याप्तियिलुेरचॅय्वान् वेलयुण्टरिञ्ञालुम् । १९२
कालॉटिञ्ञवनियिल् वीणॉरु सुयोधनन्
कालपाशानुगतनायतु कण्टनेरम् १९३
अश्वत्थामावादिकळ् निश्वासत्तोटुं कूटि
विश्वासं सुयोधनन् तन्नोटु चॅय्तवारुम् १९४
धृष्टद्युम्नादिकळॅ नष्टमाक्कीटुं मुन्पॅ
कॅट्टिय कवचं ञानळिक्कुन्तीलयॅन्तु १९५
पॅट्टॅन्नु सत्यं चॅय्तु रात्रियिल् चॅन्तवारुम्
सृष्टिपालनहरणादिकळ् चॅय्युं देवन् १९६
पाण्डवन्मारॅ वेऱॆ कॉण्टुपोय्क्कॉण्टवारुम्
ताण्डवप्रियनाय शङ्करननुग्रहाल् १९७
पञ्चद्रौपदेयन्मारोटु पाञ्चालनेयुं
पञ्चतचेर्त्तानिल्लो मिञ्चिच्च पटयाॅटुम् १९८
अश्वत्थामावादिकळ् दुरियोधनन्तन्नो-
टश्रुक्कळ् तुटच्चुटनिच्छयोटितु चॉन्नार् । १९९
मरिच्चु सुयोधनन् पाण्डवन्मारुमप्पोळ्
मरिच्चु मरियातॅ वार्त्तकळ् केट्टनेरं २००

---

कृष्ण द्वैपायनजी ने शल्यपर्व में सुन्दरता के साथ वर्णन किया है। उसमें उनसठ अध्याय हैं और तीन हजार दो सौ बीस श्लोक हैं। (१८९-१९१) जो सौप्तिक पर्व में कहा गया है वह भी संक्षेप में कहा जायगा, क्योंकि, जान लीजिये, विस्तार से कहना बड़ा काम होगा। टाँग टूटकर गिरे सुयोधन को मरणोन्मुख देखकर अश्वत्थामा आदिकों का निःश्वास लेकर सुयोधन को विश्वास दिलाना कि धृष्टद्युम्नादिकों को विना नाश किये अपना बँधा हुआ कवच मैं नहीं उतार दूँगा। ऐसी प्रतिज्ञा कर रात को चले जाना, सृष्टि, पालन और हरण करनेवाले भगवान् का पाण्डवों को अलग ले जाना। ताण्डवप्रिय शंकरजी के अनुग्रह से पाँच द्रौपदी के पुत्रों के साथ पाञ्चाल और बची हुई सेना को मार डालना—यह सब अश्वत्थामादिकों ने दुर्योधन के आँसू पोंछकर उनको सुनाया। (१९२-१९९) सुयोधन की मृत्यु हुई। जब पाण्डवों ने ये सब वार्त्ताएँ सुनीं तब पांचाली (द्रौपदी) ने

अतिनालनशनं दीक्षिच्चु मरिप्पति-
न्नतिशोकत्तोटारंभिच्चितु पांचालियुम् २०१
भीमनुं द्रौणिशिरोमणि कॉळ्ळुवान् पोयान्
भीमनॆत्तेटिप्पिन्पे माधवार्ज्जुनन्मारुम् २०२
चॆन्नतु कण्टुपेटिच्चश्वत्थामावुतानु-
मन्नेरं प्रयोगिच्चु ब्रह्मास्त्रमवारितम् २०३
इम्महीतलमपाण्डवमाय् चमकॆन्नु
चिन्मयन् नारायणन् रक्षिच्चानतिल्निन्नुम् २०४
बन्धुक्कळ्क्कुदककर्मादिकळ् चॆय्युन्नेरं
कुन्तियुं कर्णन् मम नन्दननॆन्नु चॊन्नाळ् । २०५
कुन्तीपुत्ररुमतु केट्टु सन्तापत्तोटे
चिन्तिच्चु चिन्तिच्चुदकक्रियकळुं चॆय्तार् २०६
अध्यायं पतिनॆट्टुण्टित्यादि सौप्तिकत्तिल्
पद्यङ्ङळॆण्णूट्ऱ्ळुपतुमुण्टॆन्नु चॊल्लाम् । २०७
पतिनॊन्नामतुपोल् स्त्रीपर्व्वमतिन्कथ
विधववनितमार्परिदेवनङ्ङळुम् २०८
गान्धारी यदुक्कळ्क्कु शापं नल्कियवारुम्
गान्धारीपति सुतन्मारॆप्पुल्कियवारुम् २०९

प्राणत्याग के लिए अनशन प्रारम्भ किया। भीम भी अश्वत्थामा का शिरोमणि[1] लेने के लिए गये और उनकी खोज के लिए माधव और अर्जुन ने गमन किया। यह देखकर अश्वत्थामा डर गये और उन्होंने व्यर्थ न जाने वाला ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया जिससे यह महीतल पाण्डवों से रहित हो जाय। परन्तु चिन्मय नारायण ने उससे भी बचाया। जब बन्धुओं के लिए उदकक्रिया[2] की जा रही थी तब कुन्ती ने कहा कि कर्ण मेरा पुत्र है। कुन्ती के पुत्र यह सुनकर दुःखित हुए और उन्होंने ध्यान करते हुए उदकक्रियाएँ कीं। सौप्तिकपर्व में अठारह अध्याय, और आठ सौ सत्तर श्लोक हैं। (२००-२०७) ग्यारहवाँ पर्व का नाम है स्त्रीपर्व और उसमें की कथाएँ इस प्रकार हैं—विधवा वनिताओं (स्त्रियों) का विलाप, गान्धारी द्वारा यदुओं को शाप, गान्धारीपति का पुत्रों को अपनाना, भीम

१ अश्वत्थामा के मस्तक में एक मणि थी २ तर्पण तथा पिण्डदान आदि।

विस्मयमयोमयमाय मारुतिरूपं
भस्ममाय् चमञ्ञातुं कश्मलनृपन्तन्नाल् २१०
सस्मितनाय कृष्णनरुळिच्चॆय्तवारु-
मश्मसारवञ्चित्तमन्धनु चमञ्ञातुं २११
धर्म्मजनियोगत्ताल् शवसंस्कारादिकळ्
तन्मनोदुःखत्तोटुं बन्धुक्कळ् चॆय्तवारुम् । २१२
अध्यायमिरुपत्तेळुण्टितॆन्नरिञ्ञालुं
पद्यङ्ङळ् चॊल्लामॆळुनूट्टॆळुपत्तञ्चल्लो । २१३
शान्तिदं शान्तिपर्व्वं पन्द्रण्टामतुं पिन्नॆ
श्शान्तनवोक्तिमयं मिक्कतुमोर्क्कुन्नाकिल् २१४
वर्ण्णधर्म्मङ्ङळ् पुनराश्रमधर्म्मङ्ङळुम्
पुण्यतीर्त्थादिफलं दानधर्म्मौघफलं २१५
जपहोमादिधर्म्ममापद्धर्म्मवुं पिन्नॆ-
त्तपसां नियमादिसांख्ययोगादिभेदं २१६
मोक्षधर्म्मवुं विशेषिच्चरियिच्चु भीष्मर्
साक्षाल् श्री नारायणन् तन्नुटॆ नियोगत्ताल् २१७
अध्यात्मज्ञानं मुहुर्व्विस्तरिच्चरियिच्चि-
तध्यायं मुन्नूट्टिन्मेल् मुप्पत्तॊन्पतुमुण्टु २१८

के स्थान पर उनके निर्मित लौह-शरीर[1] का नृप (धृतराष्ट्र) द्वारा भस्म करना, उस समय श्रीकृष्णजी का मुस्कराते हुए कथन, अन्धे (धृतराष्ट्र) के चित्त का लोहे के समान कठोर हो जाना, युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर बन्धुओं का बड़े दुःख के साथ शव-संस्कार करना। उसमें (स्त्रीपर्व में) जान लीजिये, सत्ताईस अध्याय और सात सौ पचहत्तर श्लोक हैं। (२०८-२१३) बारहवाँ पर्व शान्ति देने वाला शान्तिपर्व है और अधिकाँश वह भीष्म के कहे हुए उन्हीं के कथन के रूप में है। वर्णधर्म, आश्रमधर्म, पुण्यतीर्थों में यात्रा करने का फल, दान-धर्मों के समूह का फल, जप-होमादिधर्म, आपद्धर्म, तपों का नियम, सांख्य, योग आदि दर्शनभेद और विशेषतः मोक्षधर्म साक्षात् नारायण की अनुज्ञा से उपर्युक्त (पर्व) में भीष्म जी ने कहा है तथा वहां पर अध्यात्मज्ञान का विस्तार

१ भीम के स्थान पर 'लौह-भीम' धृतराष्ट्र के सम्मुख लाया गया मोह।

पद्यङ्ङळ् पतिन्नालायिरवुं पिन्पञ्ञूरुं
हृद्यङ्ङळतिन्नुमेल् इरुपत्तञ्चुमल्लो । २१९
पतिम्मूतामतनुशासनिकाख्यं पर्व्वं-
मतिङ्कल् धर्म्मस्थिति पलतुं पार्क्कुन्तोरुम् । २२०
दानङ्ङळुटॆ भेदमधिकारिकळ्भेदम्
दानधर्म्मनिष्ठादि विधिभेदङ्ङळ् पिन्नॆ २२१
पात्रभेदवुं कालभेदवुं देशभेदं
शास्त्रसिद्धान्तभेदं मन्त्रमूर्तिकळ्भेदं २२२
श्रौतस्मार्त्तादिभेदं तान्त्रिकभेदङ्ङळुम्
चेतनाजडभावभेदवुं मखभेदं २२३
सृष्टि पालनहरणङ्ङळुं तत्तल्कर्म्मा-
नुष्ठाननिष्ठापूर्व्वमवतारादिकळुं २२४
मौनसत्यादिभेदगतिकळिवयॆल्लां
मानसानन्दं वरुमारुळ्चॆय्तु कृष्णन् । २२५
अध्यायमिरुनूऱ्ऍण्पत्तारुण्टतिल्नल्ल
पद्यङ्ङळ् हृद्यङ्ङळायुण्टु पन्तीरायिरम् । २२६
पतिनालामतश्वमेधिकपर्व्वमल्लो
मतिमान्मारायुळ्ळोर्क्कधिकं मनोहरम् २२७

---

से प्रतिपादन हुआ है। उसमें तीन सौ छत्तीस अध्याय हैं और चौदह हजार पाँच सौ पच्चीस हृदय को सुख देने वाले छन्द हैं। (२१४-२१९) अनुशासनिक पर्व तेरहवाँ पर्व है। उसमें ठीक देखने से अनेक धर्म-स्थिति, दानों के भेद, अधिकारियों के भेद, फिर दानधर्मनिष्ठादि, विधि-भेद, पात्र-भेद, काल-भेद, देश-भेद, शास्त्रसिद्धान्त भेद, मन्त्रमूर्त्तियों के भेद, वेद तथा स्मृति सिद्धान्तों के भेद, तान्त्रिक भेद, चेतनभाव और जड़भाव के भेद, यज्ञ के भेद, सृष्टि, पालन और हरण, निष्ठापूर्वक विविध प्रकार के कर्मों का अनुष्ठान, भिन्न-भिन्न अवतार, मौन और सत्य के भेद—यह सब श्रीकृष्ण द्वैपायन ने इस प्रकार बतलाया है जिससे मन में आनन्द प्राप्त हो। उसमें दो सौ छियासी अध्याय है और अच्छे हृयद को सुख देने वाले बारह हजार श्लोक हैं। २२०-२२६ चौदहवाँ पर्व है अश्वमेधिक जो बुद्धिशालियों के लिए अधिक मनोहर है। उसमें निम्नलिखित

यदि मोरे छाड़ प्रभु आमि ना छाड़िब ❋ बाजन नूपुर ह'ये चरणे बाजिब
राम नदी ब'ये जाय, देखह नयने ❋ तथा गिया स्नान कर कूले बसि केने
हेदे रे पामर लोक पार हबे यदि ❋ पिओ राम नामामृत, ब'ये जाय नदी
मृत्युकाले एक वार राम बले डाके ❋ सेइ स्वर्गे जाय, यम दाण्डाइया देखे
एमन रामेर गुण वर्णिते कि पारि ❋ हेलाय तरिया जावे मुखे बल हरि१९

रावण-कर्त्तृक सीताके श्रीरामेर मायामुण्ड-प्रदर्शन

शार्दूल बलिछे, राजा कर अवधान ❋ रामेर विक्रम कथा शुन विद्यमान
खर आर दूषण त्रिशिरा तिनजन ❋ राक्षस सहस्र चतुर्द्दशेर मिलन
एके एके संहारिला एका रघुनाथ ❋ केमने दाँड़ाबे रणे ताँहार साक्षात्
देखिनु शुनिनु जे, कहिते भय करि ❋ बुझिया करह कार्य लंका-अधिकारि
शुक आर सारण कहिल तव हित ❋ अपमान करिले तादेर यथोचित
आपनि सुबुद्धि राजा विचारे पण्डित ❋ बुझिया करह कर्म ये हय उचित २०
शार्द्दूलेर कथाय रावण राजा हासे ❋ राजार प्रसाद देय यत मने आसे

तुम मुझको त्याग भी दो प्रभु ! तो मैं तुमको छोड़ने वाला नहीं। तुम्हारे पैरों की पजनिया बनकर बजा करूँगा। नयनों से देखो, राम-सरिता बह रही है, उसमें चल कर स्नान करो, किनारे क्यों बैठे हो। अरे पामर, यदि पार ही होना है तो राम-नाम का अमृत पी लो, नदी बहती चली जा रही है। मृत्यु के समय यदि एक बार भी राम का नाम लेकर कोई पुकार ले तो यम खड़ा देखता रह जाता है और वह ( प्राणी ) स्वर्ग चला जाता है। ऐसे राम के गुणों का बखान करना क्या मेरे सामर्थ्य में है, मुँह से 'हरि' का नाम लो, सुगमता से नौका पार लग जायगी ॥ १६ ॥

रावण-द्वारा सीता के सम्मुख श्रीराम के मायामुंड का प्रदर्शन

शार्दूल कह रहा है, हे राजन् ! ध्यान से राम की पराक्रम-कथा सुनिए। खर, दूषण और त्रिशिरा ने चौदह हजार राक्षसों सहित सामना किया तब अकेले रघुनाथ ने एक-एक कर प्रत्येक का संहार किया। रण में उनके सम्मुख कैसे खड़े हो सकिएगा। जो कुछ देखा और सुना उसे कहने में डर लगता है। हे लंकाधिपति ! समझ-बूझकर काम कीजिए। शुक और सारण ने आपके हित के लिए कहा और आपने उनका सर्वथा अपमान किया। हे राजा ! आप स्वयं बुद्धिमान हैं, विद्वान हैं, समझ-बूझकर जो समुचित लगे वही काम कीजिए ॥ २० ॥

शार्दूल की बातों पर राजा रावण हँस पड़ा और जी-भर कर प्रसाद देने

वलय कंकण दिल माणिक रतन ❋ पञ्चशंख वाद्य दिल राजार बाज
विचित्र निर्म्माण दिल हार ओ केयूर ❋ नाना रत्न मणि दिल चरणे नूपुर २१
चरेर वचन जेइ हैल अवसान ❋ अन्तरे हइल चिन्ता उड़िल परा
दशानन पात्र मित्रे दिलेक मेलानि ❋ विद्युज्जिह्व निशाचरे डाकिल तखनि
तोरे बलि विद्युज्जिह्व मायार सागर ❋ तुमि त अलंघ्य पात्र लंकार भित
मैथिलीके आनिलाम बड़ सुख आशे ❋ अद्यापि ना हय सुख हइबे कि शे
एत दिन सीता ना हइल अनुगता ❋ निकट आगत स्वामी शुनि हरषित
पात्र-कार्य्यं करि मोर कुलाओ आरति ❋ रामेर धनुक-मुण्ड करह सम्प्री
धनु-मुण्ड देखि सीता पाइवेक त्रास ❋ स्वामि देवरेर तरे हउक निराश २
एत यदि विद्युज्जिह्व राज-आज्ञा पाय ❋ रामेर धनुकमुण्ड गठिवारे जा
बसिल जे विद्युज्जिह्व करिया धेयान ❋ गुरुर चरण बन्दि जोड़े ब्रह्मज्ञा
बसिल से विद्युज्जिह्व ध्यान नाहि टूटे ❋ ब्रह्मज्ञान तेजेते धनुकमुण्ड उ
विचित्र निर्म्माण सेइ धनुकेर गुणे ❋ कुण्डल निर्म्मित रत्ने शोभे दुइ का
मुकुता जिनिया तार दशनेर ज्योति ❋ अविकल बिम्बफल ओष्ठाधर द्यु

लगा। उसने वलय ( कड़े ) और कंगन दिये, माणिक्य और रत्न दिये राजा का वाद्य पंचशंख दिया। विचित्र ढंग से निर्मित हार, बाजूबन्द, विवि मणि-रत्नादि तथा पैरों के लिए नूपुर दिये ॥ २१ ॥

चर का कथन ज्यों ही समाप्त हुआ त्यों ही रावण के मन में चिन्ता उदय हुआ और होश उड़ गये। दशानन ने सभासदों को विदा किया। फि उसी समय विद्युज्जिह्व नामक निशाचर को बुलवाया। हे विद्युज्जिह्व! तु हम माया का सागर कहते हैं—लंका में कोई तुमसे पार पाने वाला नहीं मैथिली को मैं बड़ी ही सुखद आशा से ले कर आया था। अभी तक वह आ पूर्ण नहीं हुई, अन्त में जाने क्या हो। इतने दिनों में भी सीता (मेरी) अनुग न बन सकी, और पति निकट आ गया है सुनकर वह प्रसन्न हो उठी (इसलिए तुम) सखा का कर्तव्य कर मेरी मनोकामना पूर्ण करो। तुम राम का मायारूपी धनुष और मुंड बनाओ। धनुष-मुंड देखकर सीता जायगी और पति एवं देवर के सम्बन्ध में निराश हो जायगी ॥ २२ ॥

इतनी राजाज्ञा पाकर विद्युज्जिह्व राम के सदृश धनुष-मुंड निर्माण लिए चल पड़ा। गुरु के चरणों की वन्दना कर ध्यान लगाकर विद्युजि बैठ गया और ब्रह्मज्ञान को केन्द्रित करने लगा। ब्रह्मज्ञान के तेज से मा धनुष और माया-मुंड का आविर्भाव हुआ। उस धनुष की प्रत्यंचा की निम कला भी विचित्र थी। दोनों कानों में मणिमय कुण्डल शोभित हैं और द

चाँपा नागेश्वर दिया वान्धिलेक चूड़ा ❋ अतिशुभ्र वसने रामेर जटा बेड़ा
श्रीरामेर मुण्ड सेइ करिल निर्म्माण ❋ जे देखेछे सेइ जाने रामेर समान
रामेर समान धनु करिया निर्म्माण ❋ रावणेर आगे लये करिल योगान
श्रीरामेर मुख देखि दशानन हासे ❋ राजार प्रसाद देय यत मने आसे २३
विद्युज्जिह्व निशाचरे थुइलेक द्वारे ❋ प्रवेशिल आपनि अशोक वनान्तरे
मिथ्या-सत्य करि पाड़े कथार पातन ❋ ये प्रकारे सीतार प्रतीत हय मन
मोर वाक्य नाहि शुन बाड़ाओ जञ्जाल ❋ तोर अपेक्षाय राखियाछि एत काल
हेन मने करि तोरे काटि एइ दण्डे ❋ तोर रूप देखिया तखनि कोप खण्डे
मने मने भाव ये रामेर कत गुन ❋ आजिकार रणकथा मन दिया शुन
वहिल पाथर गाछ यत कपिगन ❋ हइलेक ताहारा निद्राय अचेतन
निद्राय वानरगण गड़ागड़ि जाय ❋ मुण्डे-मुण्डे ठेकाठेकि मूर्च्छितेर प्राय
एइ सब वार्त्ता आमि शुनि चर मुखे ❋ रात्रियोगे गेलाम ये केह नाहि देखे
वानर-उपरे आगे करि हानाहानि ❋ वाणेते काटिया करिलाम दुइ खानि
वानरेर मध्ये राम हैल आगुयान ❋ खड्गाघाते मुण्ड काटि करि दुइ खान

की आभा ऐसी कि मोतियों को भी निष्प्रभ कर दे। बिम्बफल की भाँति उनके होठों की द्युति है। चम्पक और नागेश्वर फूलों से केश का जूड़ा मंडित है और जटा अति शुभ्र वस्त्र से बँधी हुई। श्रीराम का इस प्रकार का मायामुंड उसने निर्मित किया—जिसने भी देखा उसी ने कहा यह मुंड राम जैसा ही है। राम के समान धनुष का निर्माण कर रावण के सम्मुख ला पहुंचाया। श्रीराम का मुख देखकर दशानन हँसने लगा और दिल खोलकर राज-प्रसाद प्रदान किया ।।२३।।

विद्युज्जिह्व निशाचर को द्वार पर छोड़कर रावण ने स्वयं अशोक-वन में प्रवेश किया। मिथ्या को इस प्रकार सत्य जैसा रूप दिया कि सीता को विश्वास हो जाय। मेरी बात तुम सुनती नहीं और झंझट बढ़ाये चली जा रही हो। तुम्हारी ही प्रतीक्षा में इतने दिन बिता चुका हूँ। जी करता है कि तुमको इसी क्षण काट कर फेंक दूँ लेकिन तुम्हारा रूप देखकर तुरन्त गुस्सा ठंडा पड़ जाता है। मन ही मन सोचा करती हो कि राम के कितने गुण हैं तो तनिक आज के युद्ध का हाल भी ध्यान लगाकर सुन लो। सारे बन्दर पेड़-पत्थर ढोकर थककर अचेत सो गये। नींद में वे लोग लुढ़क रहे थे और उनके मुड आपस में टकरा रहे थे; मानों वे सब मूर्च्छित हो गये हों। चरों के मुँह यह सुनकर रात को मैं वहाँ गया, कोई मुझे नहीं देख पाया। बन्दरों पर पहला आक्रमण कर उनको बाण के द्वारा दो-दो टुकड़े कर डाला। बन्दरों में से निकलकर तुम्हारा राम आगे बढ़ आया। खड्ग से मैंने उसका मुंड

पड़िल तोमार राम, लक्ष्मण कातर ❋ देशे गेल लइया से सकल वानर
वानरेर मध्ये एक सुग्रीव प्रधान ❋ प्रहारे जर्जर अति आछे मात्र प्राण
महेन्द्र देवेन्द्र छिल कपि एक जोड़ा ❋ काटिलाम दुइ पद तारा दोंहे खोंड़ा
वानरेर मध्ये यार करिस बाखान ❋ हस्त पद काटिलाम पड़े हनूमान
एइमत करिलाम वानरेर दण्ड ❋ एइ देखि जानकि रामेर काटामुण्ड
कोथा गेलि विद्युज्जिह्व-नाम निशाचर ❋ जानकीर सम्मुखे रामेर मुण्ड धर
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व बाखान ❋लंकाकाण्डे गाहे मायामुण्डेर आख्यान२४

मायामुण्ड दर्शने सीतार विलाप

देखिया रामेर मुण्ड जानकी दुःखिता ❋ विलाप करेन बहु धरणी-पतिता
कुक्षणे पोहाले प्रभु आजिकार राति ❋ अभागिनी हारालाम तोमा हेन पति
आपदे पड़िले प्रभु सहोदर छाड़े ❋ लक्ष्मण वानर-सैन्य लये देशे नड़े
विदेशे आसिया प्रभु हाराले जीवन ❋ देशेते लक्ष्मण गेल एड़िया मरण
सहोदर छाड़िया देवर देशे गेलि ❋ राक्षसेर हातेते प्रभुरे दिया डालि
शुनिया कौशल्या देवी तोमार मरण ❋ त्यजिवेन प्रभु, तव शोकेते जीवन

काट डाला। तुम्हारे राम के गिरते ही लक्ष्मण उन बन्दरों को लेकर अपने देश लौट गया। बन्दरों में प्रधान है सुग्रीव। उसकी तो इतनी पिटाई हुई है कि वह बेहाल है—शरीर में केवल प्राण रह गया है। देवेन्द्र और महेन्द्र नाम के दो कपि थे उन दोनों के मैंने पैर काट लिये और वे लुंज हो गये हैं। बन्दरों में जिसकी प्रशंसा करती रहती हो उस हनुमान के हाथ और पैर काट लिये। इस प्रकार मैंने बन्दरों को दंड दिया। अरी जानकी! यह देख राम का कटा मुंड। क्यों रे बिद्युज्जिह्व निशाचर! तू कहाँ गया, जानकी के सम्मुख राम का कटा मुंड तो रख। कृत्तिवास पंडित के कवित्व का क्या कहना है, लंकाकांड में वह माया-मुंड का आख्यान गा रहा है॥ २४॥

माया-मुंड देखकर सीता का विलाप

राम का मुंड देखकर जानकी शोकमग्न हो गयी और धरती पर लोटकर विलाप करने लगी। हे प्रभु, किस बुरे क्षणों में आज प्रभात आया कि मैंने तुम जैसा पति खो दिया। हे प्रभु, विपत्ति आने पर सहोदर भी छोड़ जाता है, लक्ष्मण वानरी सेना लेकर देश की ओर खिसक गया। हे प्रभु, तुमने विदेश में आकर प्राण गवाँया और लक्ष्मण मृत्यु से कतराकर देश चला गया। अरे देवर, तू अपने सहोदर को राक्षसों के हाथ सौंपकर देश चला गया! हे प्रभु, तुम्हारी मृत्यु का संदेश पाते ही कौशल्या देवी तुम्हारे शोक में प्राण त्याग

जनकेर घरे छिनु अभागिनी सीता * जनम दुःखिनी आमि, नाहि माता-पिता
चरण सेविते तव आइलाम वने * आमारे त्यजिया कोथा गेले हे एक्षणे
अग्निते प्रवेश करि त्यजिब जीवन * एक वार देखा देह कमललोचन
राज्यनाश वनवास स्त्री निल रावणे * केन विधि विड़ंबिल राम हेन जने
सर्व्वलोके बले मोरे अविधवा सीता * आमारे विधवा कैला केमन देवता
अकारणे आछ रे रावण मोर आशे * गलाय काटारि दिया जाब प्रभुपाशे
ये खाण्डाय प्रभुरे करिलि दुइ खान * सेइ खड्गे काट मोरे जाउक परान
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व शोभन * गाहिलेन सीतादेवी-हृदय-वेदन २५

श्री रामेर प्रशंसापूर्व्वक सीतार खेद

एमनि वाणेर शिक्षा, मुनिगणे कैले रक्षा, ताड़का मारिले एक वाणे।
सुबाहु राक्षस मारि, मुनि-यज्ञ रक्षा करि, गेल प्रभु जनक भवने ॥
शिवेर धनुक भंगे, लोके चमत्कार लागे, करेछिले ए पाणिग्रहण।
परशुरामे करि जय, गेला प्रभु अयोध्याय, जय-जय सकल भुवन ॥

---

दूँगी। मैं अभागिन सीता जनक के घर पर थी। जन्म की दुखियारी हूँ—मेरे पिता-माता नहीं। वन में तुम्हारे चरणों की सेवा करने आई, अब मुझको छोड़कर तुम कहाँ चले गये ? आग में कूदकर अपने प्राण दे दूँगी—हे कमल-लोचन एक बार तो दर्शन दे दो। राज्य से हाथ धोया, वन आना पड़ा, रावण पत्नी उठा ले आया—विधाता ने राम जैसे व्यक्ति को इतने कष्ट-भोग क्यों दिये। सभी लोग मेरे लिए कहते हैं कि सीता अविधवा है। यह किस प्रकार देव ने मुझको विधवा बना दिया। ऐ रावण, तू व्यर्थ ही मेरी आशा में बैठा है, मैं गले में कटारी मार कर अपने स्वामी के पास चली जाऊँगी। जिस खड्ग से मेरे प्रभु को तुमने काटा है उसी से मुझको भी काट डालो, मेरा प्राण चला जाय। कृत्तिवास पंडित का कवित्व शोभन है—उसने सीतादेवी के हृदय की वेदना गाकर सुनाई ॥ २५ ॥

श्रीराम की प्रशंसा करती हुई सीता का विलाप

तुमको धनुर्विद्या में ऐसी ही दक्षता थी कि एक वाण से ताड़का का वध कर तुमने मुनियों की रक्षा की। सुबाहु राक्षस को मारकर, मुनियों के यज्ञ की रक्षा कर तुम जनक-भवन में पधारे। लोगों को आश्चर्य-चकित करते हुए तुमने शिव-धनुष तोड़कर मेरा पाणिग्रहण किया था। परशुराम पर विजय प्राप्त कर तुम अयोध्या लौट गये और तीनों लोकों में तुम्हारी जय-जयकार होने लगी। मैं कैसी अभागिन पत्नी हूँ कि तुम सरीखे पति को खो दिया।

आमि स्त्री अभाग्यवती, हारालाम हेन पति, काँदे सीता मायामुण्ड लैया।
दैव-घटना-कारणे, एले प्रभु तपोवने, कोथा गेले आमारे त्यजिया ॥
परे निल राज्यखण्ड, विधि मोरे कैल दण्ड, भाग्ये मोर दैवेर लिखन।
दारुण कैकेयी ताते, वाद साधे विधिमते, हाराइनु आमि रामधन ॥
त्यजिया राज्येर आश, करिले हे वनवास, पञ्चवटी एले तिनजन।
शूर्पनखा नाक कान, केटे कैले अपमान, राक्षस विपक्ष से कारण ॥
करिला विषम रण, मारिला खरदूषण, चौद्द हाजार निशाचर जिनि।
मारीच राक्षसे मारि, पाठाइला यमपुरी, हेन प्रभु लोटाय धरणी ॥
बालि वानरेरे मारि, सुग्रीवेरे मित्र करि, सागर शुषिले एक वाणे।
करिला विषम रण, वधि कत शत जन, कार वाणे हाराइला प्राणे ॥
स्मरिते से सब कथा, अन्तरे लागिछे व्यथा, सहने ना जाय एइ दुःख।
धन-जन-सुसम्पद, किछु नहे चिरपद, आर ना देखिब चाँदमुख ॥
अनले प्रवेश करि, कलेवर परिहरि, आमार जीवने नाहि काम।
एइ कृत्तिवास वाणी, शुन सीता ठाकुराणी, पाइबे आपन प्रभु राम ॥ २६

सीता मायामुंड लेकर विलाप करने लगी। हे प्रभु, दैवयोग से तुम तपोव[न] आये, मुझको त्यागकर कहाँ चले गये हो ? बाद में राजपाट भी जाता रहा-यह सारा दण्ड मेरे भाग्य का ही फेर है। निष्ठुर कैकेयी के बीच में पड़ने [के] कारण मैंने रामधन खोया। राज्य की आशा त्यागकर वनवास करने ह[म] तीनों पंचवटी आये। शूर्पनखा के नाक-कान काटकर तुमने उसका अपमा[न] किया और इसी कारण राक्षस तुम्हारे विरोधी हो गये। तुमने घनघोर यु[द्ध] किया, खर-दूषण को मारकर चौदह हजार निशाचरों को परास्त किया। तुमने मारीच राक्षस को भी यमलोक पहुँचा दिया। हाय! ऐसे (पराक्रमी) प्रभु, आज तुम धरती पर लोट रहे हो। वानर बालि का बध कर, सुग्रीव [से] मित्रता कर, एक वाण के प्रहार से सागर को भी सोख लिया। तुमने घ[न]घोर युद्ध किया, कितनों के प्राण लिये। तुम्हारा प्राण किसके वाण से च[ला] गया। ये सब बातें स्मरण करने पर हृदय व्यथा से भर जाता है और य[ह] क्लेश सहा नहीं जाता। धन-जन-सम्पदा—कुछ भी चिरस्थायी नहीं है-दुःख है कि तुम्हारा चाँद सा मुखड़ा अब देखने को नहीं मिलेगा। मुझ[को] अपने जीवन से कोई मोह नहीं, मैं आग में प्रवेश कर अपना शरीर त्याग दूँगी। कृत्तिवास का कहना है, हे सीता-माता! चिन्ता न करो, अपने प्रभु राम [को] फिर से पा जाओगी ॥ २६ ॥

निकषा ओ माल्यवान कर्त्तृक रावणेर प्रति उपदेश एवं सरमा कर्त्तृक सीतार सान्त्वना

कातर हइया सीता करेन रोदन * विमुख हइया हासे राजा दशानन
करिले परेर मन्द अवश्य प्रमाद * रामजय बलिया पड़िल सिंहनाद
वानरेर सिंहनादे काँपे लंकापुरी * मुण्ड लये पलाय लंकार अधिकारी
दशानन गिया शीघ्र वैसे सिंहासने * ताहारे बेड़िया बसे पात्रमित्रगणे २७
कान्देन अशोक वने श्रीराम प्रेयसी * हेनकाले आइल से सरमा राक्षसी
सीता बलिलेन, एस सरमा बहिनी * तव अपेक्षाय आमि राखियाछि प्राणी
विषपाने मरि किंवा, अनले प्रवेशि * एतक्षण आछे प्राण तोमारे आश्वासि
जाह देखि, रावण कि करिछे मंत्रणा * सत्य कि प्रभुर प्रति दिलेक से हाना
जानाइया स्वरूपे आमारे कर रक्षा * प्राण राखियाछि आमि तोमार अपेक्षा
सीता वाक्ये सरमा हइल एक पाखी * रावण निकटे गेल चतुर्दिक देखि
रावण कहिछे, मन्त्रिगण, कह सार * केमने रामेर सैन्य करिब संहार
मंत्री बले सीता दिले हबे अपमान * स्वयं करिया युद्ध लह रामेर प्राण २८

निकषा और माल्यवान द्वारा रावण के प्रति उपदेश और सरमा द्वारा सीता को सान्त्वना-दान

दुखी होकर सीता क्रन्दन कर रही थीं और राजा दशानन मुँह घुमाकर हँस रहा था। दूसरे की बुराई करने से अपने पर ही विपत्ति आती है। इतने में ही राम-जय का सिंहनाद लंकापुरी को कंपित करने लगा। झट मुंड लेकर लंकेश वहाँ से भाग खड़ा हुआ और जाकर सिंहासन पर बैठ गया। उसको घेर कर सभी सभासद बैठ गये ॥ २७ ॥

श्रीराम की प्रियतमा अशोक वन में रो रही थी कि ऐसे ही समय वहाँ सरमा राक्षसी आई। सीता ने कहा, आओ बहन सरमा, तुम्हारी ही प्रतीक्षा में मैंने अभी तक प्राण रख छोड़ा है। या तो विष खाऊँगी, अन्यथा अग्नि में प्रवेश करूँगी; केवल तुम्हारी ही आशा में अभी तक प्राण रखे हुए हूँ। जाओ, जाकर देखो कि रावण कौन सी मंत्रणा कर रहा है, क्या यह सच है कि उसने प्रभु पर हमला किया था। सारी बातों को जानकर मुझको बताओ, तुम्हारे ही कारण मैंने प्राण बचा रखा है। सीता के कहने पर सरमा एक पखेरू का रूप धारण कर चारों ओर देखते-भालते रावण के निकट पहुँची। रावण कह रहा है, मंत्रियो ! अब मूल बात बताओ कि राम की सेना का कैसे संहार किया जाय। मंत्री ने कहा, सीता को देने पर अपमान होगा, अतः स्वयं युद्ध कर राम का वध कीजिए ॥ २८ ॥

हेनकाले रावणेर माता अति बुड़ी ❋ रावणेर काछे गेल अति ताड़ाताड़ि
आशे पाशे चाहे बुड़ी रावणेर पाने ❋ रावणेरे बेड़ियाछे यत मंत्रिगणे
सवार हइते पोड़े मायेर परान ❋ कहिते लागिल बुड़ी हये आगुयान
देवता गन्धर्व नहे सीता त मानुषी ❋ कत बड़ देखियाछ ताहारे रूपसी
राक्षस हइया केन मनुष्येते साध ❋ एखन ये देखितेछि पड़िबे प्रमाद
चतुर्द्दश सहस्र राक्षस मारे वाणे ❋ त्रिशिरा, दूषण आर खर पड़े रणे
से राम कृतान्त-दण्ड-तुल्य-दण्डधारी ❋ कि बुझिया आन तुमि से रामेर नारी
आमार वचन शुन पुत्र लंकेश्वर ❋ सीतादेवी देह गिया रामेर गोचर
सीता दिया रामेर सहित कर प्रीति ❋ नतुवा तोमार नाहि देखि अव्याहति २९
एत यदि बले बुड़ि मनेर सन्तापे ❋ शुनिया बुड़ीर कथा राजा मने कोपे
मायेर गौरव राखि ते कारणे सइ ❋ अन्यजन हइले ताहार प्राण लइ
कुड़ि चक्षु रांगा करि चाहे लंकेश्वर ❋ नड़ि भर करि बुड़ी उठि दिल रड़ ३०
बुड़ि यदि पलाइल पेये अपमान ❋ रावणेरे बुझाय तखन माल्यवान
एतदिन नाति, तव विक्रम बाखानि ❋ बुझिया आपन बल करह आपनि

ऐसे ही समय रावण की अत्यन्त वृद्धा माँ (निकषा) रावण के पास तुरंत गई। अगल-बगल देखकर बुढ़िया ने रावण की ओर देखा—सारे मंत्रियों ने रावण को घेर रखा है। लेकिन माँ का हृदय अपने पुत्र के लिए सबसे अधिक कातर होता है। आगे बढ़कर बुढ़िया कहने लगी, सीता कोई देवता या गन्धर्व नहीं, मामूली मानुषी है; वह तुमको कितनी रूपवती लगने लगी ? राक्षस होकर मनुष्य की साध क्यों होने लगी, इससे तो विपत्ति आ पड़ेगी। वाणों से चौदह हजार राक्षसों के प्राण जा चुके हैं—युद्ध में त्रिशिरा, खर और दूषण काम आ गये। वह राम यम-दंड-धारी कृतान्त के समान हैं। पता नहीं क्या समझ कर तुम ऐसे राम की नारी उठा लाये हो। हे लंकेश ! तुम मेरा कहना मानो, जाकर सीतादेवी को राम के अर्पण करो। सीता देकर राम से मित्रता कर लो वर्ना तुम्हारा निस्तार तो दिखाई नहीं पड़ता ॥ २९ ॥

बुढ़िया ने मन के सन्ताप के वश इतना कहा तो रावण क्रोध से भर गया। माँ के सम्मान के कारण कुछ कह न सका, दूसरा होता तो उसके प्राण ले लेता। लंकेश्वर ने लाल-लाल बीसों नेत्रों से देखा तो बुढ़िया लकुटी के सहारे उठ कर भाग खड़ी हुई ॥ ३० ॥

बुढ़िया जब अपमानित होकर चली गयी तो रावण को माल्यवान समझाने लग गया। हे नाती ! अब तक तो तुम्हारे बल-विक्रम का बखान

यत यत राजा हैल चन्द्र-सूर्यकुले ※ कोन राजा भासाइल पाषाण सलिले
सागर हइल पार हइया मानव ※ हेन रामे घाँटाइला ए कि असम्भव
एतदिन शुनितेछ रामेर विक्रम ※ सुजनेर बन्धु राम दुर्ज्जनेर यम
कुड़ि चक्षु रांगा करि चाहिल रावण ※ माल्यवान रहिल हइया भीतमन ३१
रावण राक्षसगणे डाक दिया आने ※ दिके दिके राखिल से लंकार रक्षणे
महोदरे दक्षिणे राखिल दशानन ※ एक लक्ष राक्षस से द्वारेते भिड़न
पश्चिमे राखिल इन्द्रजिते ये प्रधान ※ राक्षस अर्व्वुद-कोटि पर्व्वत प्रमान
पूर्व्वद्वारे राखिल प्रहस्त सेनापति ※ तिनकोटि राक्षस ये ताहार संहति
रहिल उत्तरद्वारे आपनि रावण ※ तिन द्वारे यत, तार द्विगुण भिड़न
ताहार छत्रिश कोटि मुख्य सेनापति ※ रहिल उत्तरद्वारे रावण संहति
अक्षौहिणी-सत्तर सहित से रावण ※ सतर्क सशंक सदा सब पुरजन ३२
सरमा जानिया इहा चलिल सत्वर ※ सकलि कहिल गिया सीतार गोचर
रावण कहिल मिथ्या ना करे संग्राम ※ सर्व्वथा कुशले तव आछेन श्रीराम

करता रहा। अब अपना बल कूत कर ही जो कुछ करना है करो। चन्द्रवंश, सूर्यवंश में अब तक जितने राजा हुए, बताओ उनमें कौन ऐसा है जिसने पानी में पत्थर तैराया। मनुष्य होकर भी जिसने सागर पार कर लिया ऐसे राम को तुमने छेड़ दिया, यह कैसी अनहोनी कर डाली तुमने। इतने दिनों से राम के पराक्रम के बारे में सुन रहे हो कि राम सुजन का मित्र है और दुर्जन का यम है। (इस पर) बीसों आँखें लाल-लाल करते हुए रावण ने देखा तो माल्यवान भयभीत बैठा रह गया ॥ ३१ ॥

रावण ने राक्षसों को बुलवाकर उपस्थित किया और उनको लंका की सुरक्षा में चारों ओर नियुक्त किया। दक्षिण द्वार पर उसने महोदर को नियत किया जिसके साथ एक लाख राक्षस डटे थे। पश्चिम द्वार पर इन्द्रजीत को प्रधान बनाया और वहाँ अर्बुद-कोटि राक्षस तैनात कर दिये गये। पूर्वी द्वार पर प्रहस्त को सेनापति बनाया—उसके अधीन तीन-कोटि राक्षस सन्नद्ध हो गये। उत्तरी द्वार पर स्वयं रावण ने मोर्चा लगाया और तीनों द्वार पर जितनी सेना थी उसकी दुगुनी इस द्वार पर नियुक्त हुई। रावण के छत्तीस करोड़ मुख्य सेनापति उसके संग उत्तरी द्वार पर रहे। सत्तर अक्षौहिणी सेना के साथ रावण तथा सारे पुरवासी सदा चौकन्ने और सशंक बने रहे ॥ ३२ ॥

इतना सब जान-समझकर सरमा झटपट चल पड़ी और सीता के निकट पहुँचकर सब कुछ बताया। रावण ने झूठ कहा है, उसने कोई भी युद्ध नहीं

तोमा दिते बलिल निकषा रावणेरे ❋ कतमत बुझाइल रामे भजिवारे
मातार वचन दुष्ट ना शुनिल काने ❋ सेइमत ताड़ाइल बुड़ा माल्यवाने
कारो युक्ति ना शुनिया युद्ध करे सार ❋ विना युद्धे सीता तव नाहिक उद्धार
बहुकष्ट गेल सीता अल्पमात्र आछे ❋ देखिया रामेर मुख सुख पावे पिछे
क्रन्दन सम्बर सीता त्यज अभिमान ❋ दिन दुइ चारि बादे जाबे प्रभुस्थान
सरमार वाक्ये सीता सम्वरि क्रन्दन ❋ चिन्तेन श्रीराम पाद पद्म अनुक्षण
श्रीराम बलिया सीता छाड़ेन निःश्वास ❋ लंकाकाण्डे मायामुण्ड गाय कृत्तिवास ३३

सुग्रीव कर्त्तृक लंकार चारि द्वारे वानर-सैन्य-सन्निवेश

सुमेरुर चूड़ा येन आकाशेते लागे ❋ सेइमत उच्चगिरि शोभा पाय आगे
गड़ेर बाहिर गिरि तिरिश योजन ❋ ताहाते उठिले हय लंका दरशन
पर्व्वते चड़ेन राम सह सेनागण ❋ संगेते सुग्रीव राजा आर विभीषण
पर्व्वत उपरे राम करेन देयान ❋ देखेन से लंका विश्वकर्म्मार निर्म्माण
स्वर्ण रौप्य घर सब देखिते रूपस ❋ छादेर उपरे शोभे कनक-कलस

---

किया, तुम्हारे श्रीराम बिलकुल कुशल से हैं। निकषा ने रावण को समझाया कि तुम्हें वह लौटा दे और कितने ही ढंग से कहा कि वह राम को प्रसन्न करे। पर इस दुष्ट ने माँ का कहना भी नहीं सुना और वृद्ध माल्यवान को भी इसी प्रकार से दुत्कार दिया। किसी का भी परामर्श न मानकर उसने युद्ध करना ही निश्चित कर लिया है—बिना युद्ध के सीता तुम्हारे उद्धार की कोई आशा नहीं। सीता, तुमने बहुत क्लेश झेले हैं अब केवल तनिक सा रह गया है। अन्त में राम का मुखड़ा देखकर सुख पाओगी। सीता, अपना रुदन-क्रन्दन रोको, क्षोभ का त्याग करो। दो-चार दिनों बाद ही अपने प्रभु के पास पहुँच जाओगी। सरमा के वाक्य से सीता ने रोना बन्द किया। श्रीराम के चरण-कमलों का निरन्तर चिन्तन करने लगी। श्रीराम कहकर सीता ने गहरी साँस ली। लंकाकाण्ड में कृत्तिवास मायामुंड-आख्यान गा रहा है ॥ ३३ ॥

सुग्रीव द्वारा लंका के चारों द्वार पर वानर-सैन्य नियुक्ति

सुमेरु की चोटी मानों आकाश को छू रही है। इसी प्रकार का ऊँचा पर्वत सम्मुख शोभा पा रहा है। गढ़ के बाहर तीस योजन का पर्वत है। इस पर चढ़ने पर लंका का दर्शन हो जाता है। राम ससैन्य इस पर्वत पर चढ़े। उनके साथ राजा सुग्रीव और विभीषण भी चले। पर्वत के ऊपर राम ने सभा की। उन्होंने विश्वकर्मा निर्मित लंका को देखा। सोने और चाँदी के बने मकान देखने में बड़े सुन्दर हैं जिनकी छतों पर कनक-कलश

ध्वजा आर पताका उड़िछे चतुर्द्दिके ❊ राजगृह पात्रगृह शोभे एके एके
पुरी देखि रामचन्द्र करेन बाखान ❊ पृथिवीमण्डले नाहि हेन रम्यस्थान
ए पुरीर राजा केन हयेछे रावण ❊ तबे शोभे यदि राजा हय विभीषण
रघुवंशे यदि आमि राम नाम धरि ❊ विभीषणे करिब लंकार अधिकारी
विभीषण मिताके लंकाय भाल साजे ❊ विभीषणे राजा करि लोके येन पूजे
आनन्दित विभीषण रामेर आश्वासे ❊ गिरि हैते उलेन सकले रात्रिशेषे ३४
पर्व्वत उपरे राम वञ्चि कत राति ❊ नामिलेन सत्वर सहित सेनापति
पोहाइते आछे अल्प यखन रजनी ❊ हेनकाले लंका वेड़िलेन रघुमणि
पाइया सुग्रीव श्रीरामेर अनुमति ❊ चारि द्वारे राखिल वानर-सेनापति ३५
नील सेनापति बलि घन-घन डाके ❊ एकेरे डाकिते सबे धाय झाँके झाँके
सुग्रीव [illegible] नील तुमि सेनापति ❊ लंकाय जुझिते तव प्रथम आरति
बा[illegible]र लह रणेते प्रधान ❊ भालमते राख गिया पूर्वद्वारखान
नील [illegible] पूर्व्वद्वारे जाय हरषित ❊ डाक दिया अंगदेरे आनिल त्वरित ३६

शोभायमान हैं। चारों ओर ध्वज और पताका लहरा रहे हैं। राजगृह और सभासद-भवन एक-एक कर शोभायमान हैं। लंकापुरी देखकर श्री रामचन्द्र ने कहा कि पूरे भूमंडल में ऐसा सुरम्य स्थान नहीं है। ऐसी पुरी का राजा रावण क्यों बना! यदि विभीषण इसका राजा बन जाय तभी इसकी शोभा है। यदि रघुवंश में (जन्म और) मेरा नाम राम है तो मैं विभीषण को इस लंका का राजा बनाऊँगा। मित्र विभीषण ही इस लंका में शोभा देंगे। विभीषण को राजा बनाकर लोग उसकी पूजा करेंगे। राम के आश्वासन पर विभीषण को बड़ी खुशी हुई। सभी लोग रात्रि के अन्त में पर्वत के नीचे उतर आए॥ ३४॥

पर्वत पर रात बिताकर रामचन्द्र अपने सेनापति के साथ नीचे उतर आए। उस समय रात समाप्त होने में थोड़ी देर थी, रघुमणि ने लंका को चारों ओर से घेर लिया। श्रीराम की सम्मति पाकर सुग्रीव ने चारों दरवाजों पर वानर सेनापति नियत कर दिये॥ ३५॥

नील-सेनापति का नाम लेकर वह बारम्बार पुकारने लगे। एक को बुलाने पर सभी झुंड के झुंड उस ओर लपके। सुग्रीव ने कहा! नील, तुम सेनापति हो, लंका के युद्ध में तुम्हारी ही पहली नियुक्ति है। अपने मन के अनुसार श्रेष्ठ वानर चुनकर पूर्वी द्वार पर जाकर उनका समावेश भलीभाँति करो। वीर नील सहर्ष पूर्वी द्वार के लिए चल पड़ा। अंगद को भी झटपट बुलाकर लाया गया॥ ३६॥

सुग्रीव बलेन, हे अंगद युवराज ❋ तोमार अधीन सर्व्व वानर समाज
बाछिया कटक तुमि लह सारात्सार ❋ भालमते राख गिया दक्षिणेर द्वार
चले अंगदेर ठाट सबे बाछेर बाछ ❋ एक हाते पर्व्वत द्वितीय हाते गाछ
धूलि उड़ाइया तारा करे अन्धकार ❋ मार मार शब्दे धाय दक्षिणेर द्वार
दक्षिणे अंगद गेल हये हरषित ❋ डाक दिया हनूमाने आनिल त्वरित ३७
सुग्रीव बलेन शुन वीर हनूमान ❋ सबा हैते राखि आमि तोमार सम्मान
शिशुकाले लाफ दिले धरिते भास्कर ❋ साहस करिया बाछा डिंगाले सागर
संग्रामे पशिले तुमि विक्रमे प्रधान ❋ पश्चिमेर द्वार रक्षा कर सावधान
येखाने थाकेन राम-लक्ष्मण दु-भाइ ❋ सावधान हये तुमि थाकिबे तथाइ
धाय हनूमानेर कटक महाबल ❋ किलकिल शब्देते व्यापिल नभःस्थल
धूलि उड़ाइया जाय करि अन्धकार ❋ मार मार करि गेल पश्चिमेर द्वार ३८
पूर्व्वे नील वीरे दिया ना हय प्रत्यय ❋ डाकिया कुमुद वीरे आनिल तथाय
सुग्रीव बलेन, हे कुमुद सेनापति ❋ सहस्र वानर आछे तोमार संहति

सुग्रीव ने कहा, हे युवराज अंगद ! तुम्हारे ही अधीन सारा वानर-समाज है, तुम अच्छे-अच्छे योद्धाओं को चुनकर अपना कटक लेकर दक्षिण का द्वार जाकर सँभालो। अंगद का सैन्य-समूह चला जिसमें उत्तमोत्तम चुने हुए योद्धा थे। इनके एक हाथ में वृक्ष तो दूसरे हाथ में पर्वत थे। धूल उड़ाकर इन लोगों ने चारों दिशाओं में अन्धकार फैला दिया और मार-मार का नाद करते हुए वे दक्षिणी द्वार की ओर दौड़ पड़े। अंगद सहर्ष दक्षिण की ओर चल पड़ा। हनुमान को भी तत्काल बुलाया गया॥ ३७॥

सुग्रीव ने कहा, हे वीर हनुमान ! सुनो। मैं तुम्हारा सब से अधिक सम्मान करता हूँ। बचपन ही में तुमने उछलकर सूर्य को पकड़ लिया था। हे वत्स ! साहस कर तुम (अलंघ्य) सागर लाँघ गये। संग्राम में जुटने पर तुम्हारे पराक्रम का क्या कहना। सावधान होकर पश्चिमी द्वार को संभालो। जहाँ राम-लक्ष्मण दोनों भाई रहेंगे, तुम वहीं सावधान होकर डटे रहोगे। हनुमान का महाबलशाली कटक भी दौड़ा—उनके पद-चाप के शब्द से नभमण्डल भर गया। धूल उड़ाते, चारों ओर अंधेरा छाते हुए उनके योद्धा मार-मार शब्द करते हुए पश्चिमी द्वार की ओर लपके॥ ३८॥

पूर्वी द्वार पर नील वीर को तैनात कर भी सुग्रीव के मन को भरोसा नहीं हुआ; उन्होंने कुमुद-वीर को वहाँ बुलवाया। कहा, हे कुमुद सेनापति, तुम्हारे पास एक सहस्र वानरों की टुकड़ी है। इन वानरों को लेकर तुम पूर्वी

से सब वानर लये पूर्व्वद्वारे चल * नीलेर कटके गिया हओ अनुबल
तोमा सत्वे यद्यपि नीलेर सैन्य भागे * तार भाल मन्द दाय तोमरे ये लागे
सुग्रीवेर आदेश लंघिबे कोन जन * नीलेर काछेते करे कुमुद गमन ३९
दक्षिणे अंगदे राखि प्रतीति ना जाय * डाक दिया महेन्द्रेर तथाय पाठाय
महेन्द्र देवेन्द्र शुन सुषेणनन्दन * आशी कोटि कपि दुइ भायेर भिड़न
से सकल लइया दक्षिण द्वारे चल * अंगद कटके गिया हउ अनुबल
तोमा विद्यमाने यदि तार सैन्य भागे * भद्राभद्र ताहार तोमार प्रतिलागे
सुग्रीवेर आदेश लंघिबे कोन जना * अंगद पश्चाते गेल महेन्द्रेर थाना ४०
पश्चिमे हनूके दिया ना हय प्रतीत * डाक दिया सुषेणेर आनिल त्वरित
सुग्रीव बलेन शुन सुषेण सुहृत् * तिनकोटि वृन्द कपि तोमार सहित
से सबे लइया जाह पश्चिमेर द्वार * वायुतनयेर कर साहाय्य एवार
आपनि थाकिते यदि कोन मन्द घटे * अपयश तोमारि से, लोके धर्म्म टुटे
सुग्रीवेर आदेशे सुषेण महावीर * हनुर पश्चाते गिया हइलेक स्थिर ४१
उत्तरे काहारे दिया ना हय प्रतीत * आपनि सुग्रीव रहे वानर सहित

---

द्वार पर चले जाओ और जाकर नील के कटक की सहायता करो। तुम्हारे होते हुए भी यदि नील की सेना के पैर उखड़ जाते हैं तो उसके भले-बुरे का दायित्व तुम पर है। सुग्रीव के आदेश का लंघन कौन कर सकता है, कुमुद ने नील की ओर प्रस्थान किया ॥ ३६ ॥

दक्षिण में अंगद को रखकर भी मन को भरोसा नहीं हुआ। सुग्रीव ने महेन्द्र को वहाँ बुलवा भेजा। सुषेण-नन्दन महेन्द्र और देवेन्द्र सुनो, तुम दोनों भाइयों के पास अस्सी कोटि कपि हैं। इनको लेकर दक्षिणी द्वार पर पहुँच जाओ और वहाँ अंगद के कटक की सहायता करो। तुम्हारे रहते हुए उसकी सेना के यदि पैर उखड़ते हैं तो सारी जिम्मेदारी तुम पर है। सुग्रीव के आदेश का कौन लंघन कर सकता है। महेन्द्र की सेना ने जाकर अंगद के पीछे छावनी डाली ॥ ४० ॥

हनुमान को पश्चिम में नियुक्त कर भी मन में पूर्ण विश्वास नहीं हुआ। सुषेण को वहाँ तुरन्त बुलवा भेजा। सुग्रीव ने कहा, हे मित्र सुषेण सुनो, तुम्हारे पास तीन-कोटि वृन्द वानर हैं। उनको लेकर पश्चिमी द्वार पर जाओ और इस समय पवनसुत हनुमान की सहायता करो। तुम्हारे रहते हुए यदि कोई अनिष्ट हो गया तो तुम्हारा ही अपयश होगा। सुग्रीव के आदेश से महावीर सुषेण जाकर हनुमान के पीछे स्थित हो गये ॥ ४१ ॥

उत्तर में किसी को भी नियुक्त कर निश्चिन्तता नहीं, सो सुग्रीव स्वयं

सागरेर कूलेते ये वानरेर घर ❋ जांगाल बहिया पाछे पलाय वानर
बहुकोटि सेनापति पात्र-मित्र लये ❋ रहिल सुग्रीव राजा उत्तर चापिये ४२
औषध आनिते रहे वीर हनूमान ❋ मंत्रणा कर्म्मेते थाके मंत्री जाम्बवान
प्रहरी हइया थाके द्वारे विभीषण ❋ चारि द्वार सुग्रीव देखेन घनेघन
येइ द्वार सुग्रीव देखेन हीन बल ❋ दुना करिदेन सैन्य समरे अटल
चारि द्वारे सुग्रीव से दितेछे आश्वास ❋ चारि द्वार रक्षा विरचिल कृत्तिवास ४३

देवगणेर अन्तरीक्षे आगमन ओ हर-पार्व्वतीर कोन्दल

साजिछे यतेक वीर बाजिछे बाजना ❋ अन्तरीक्षे अमरगणेर हय थाना
आइल गन्धर्व्व यक्ष किन्नर चारण ❋ आसिलेन विधाता मराले आरोहण
ऐरावत आरोहणे आसे पुरन्दर ❋ मकर वाहने आसे जलेर ईश्वर
वृषभ वाहने आसिलेन पशुपति ❋ केशरि वाहने चड़ि आसिला पार्व्वती
बसिलेन देवगण सबे सारि सारि ❋ गन्धर्व्वेरा गीत गाय नाचे विद्याधरी ४४
पृष्ठ दिया पार्व्वती बसेन एक दिके ❋ क्रोध करि महादेवे कहेन सम्मुखे

---

वानरों के साथ वहीं रहे। सागर-तट पर ही वानरों के घर हैं। कहीं सेतु पार कर वानर भाग खड़े हों इस आशंका से बहुकोटि सेनापति और पार्षद लेकर सुग्रीव राजा उत्तरी द्वार पर डट गये ॥ ४२ ॥

वीर हनुमान दवा लाते रहे, मंत्री जाम्बवान मंत्रणा-कार्य में रत रहे, विभीषण द्वार पर प्रहरी बनकर रहे और सुग्रीव बार-बार चारों द्वारों का निरीक्षण करते रहे। जिस द्वार को भी सुग्रीव ने हीन-बल देखा उसी में सैन्य-संख्या दुगुनी कर उसको दृढ़ बनाते रहे। चारों द्वारों पर सुग्रीव सब को आश्वासन देते रहे। चारों-द्वारों की सुरक्षा पर कृत्तिवास ने यह विवरण लिखा ॥ ४३ ॥

देवताओं का अन्तरिक्ष में आगमन और शिव-पार्वती में कलह

सारे वीर सज्जित हो रहे हैं और रण-वाद्य बज रहा है। अन्तरिक्ष में अमर-वृन्द देवगण विराजमान हैं। गन्धर्व, यक्ष, किन्नर, चारण सभी समवेत हो गये। ब्रह्मा हंस पर सवार वहाँ आ पहुँचे। ऐरावत पर सुरराज इन्द्र और जल-देवता बरुण, मकर पर सवार होकर आ गये। वृषभ-वाहन पर शंकर और सिंह पर आसीन पार्वती आईं। देवगण पंक्तियों में विराजमान हुए, गन्धर्व लोग गीत गाने लगे और विद्याधरियाँ नृत्य करने लगीं ॥ ४४ ॥

पार्वती एक ओर पीठ फेर कर बैठ गईं और सामने बैठे महादेव से सक्रोध बोलीं। तुम तो भंगेड़ी हो, श्मशान में सदा फिरते रहते हो। यह

तुमि त भांगड़ सदा बेडाओ श्मशाने ❋ कोन गुणे पूजे तोमा लंकार रावणे
धने-प्राणे मजिल लंकार अधिकारी ❋ केमने आछ हे स्थिर, बुझिते ना पारि
आपनार माथा काट आपनार करे ❋ दुःख नाहि हय केन सेवकेर तरे
आर कोन सेवक छुँइबे तव छाया ❋ रावण सेवके तव नाहि किछु दया ४५
एत यदि बलिलेन क्रोधे भगवती ❋ पार्व्वतीर वचने कुपिला पशुपति
वामा जाति, तोमार तिलेक नाहि शंका ❋ आपनि राखह गिया स्वर्णपुरी लंका
तपस्या करिल दश हाजार वत्सर ❋ अमर हइते नाहि पाइलेक वर
एखन मरण-पथ चिन्तिल रावण ❋ त्रिभुवने हेन कर्म्म करे कोन जन
स्वयं विष्णु जन्मिलेन दशरथ-घर ❋ आपनि दिलेन पृष्ठ अलंघ्य सागर
द्वारे राम, रावणेर जीवन-संशय ❋ बल देखि, रावणेर किसे रक्षा हय
मानुष हइया राम विष्णु अधिष्ठान ❋ श्रीरामेर हाते किसे पावे परित्राण
मिथ्या अनुयोग मोरे ना कर पार्व्वति ❋ रावणे राखिते नाहि आमार शकति
विधातार निर्व्वन्ध ये नारि घुचाइते ❋ आपनि ये आछि आमि आपनार मते
शंकर-शंकरी दुइ जनेते कोन्दल ❋ विमुख हइया हासे देवता सकल

लंकाधीश तुम्हारे किस गुण पर रीझकर तुम्हारी पूजा करता है। लंकेश तो धन-प्राण से विनष्ट हो जाने वाला है। पता नहीं, तुम कैसे स्थिर बैठे हो। मस्तक काट-काट कर चढ़ानेवाले अपने भक्त के प्रति तुमको दुःख नहीं। सेवक रावण के प्रति जब तुमको इतनी भी दया नहीं है तब आगे कोई भी सेवक तुम्हारी परछाहीं से कतरायेगा ॥ ४५ ॥

क्रोध में आकर जब भगवती ने इतना कहा तो महादेव भी कुपित हो गये। तुम नारी जाति की ठहरीं, तुमको बात करते तिल भर शंका नहीं, तुम स्वयं ही जाकर स्वर्णपुरी लंका की रक्षा कर लो। रावण ने दस हजार वर्ष तक तपस्या की, फिर भी उसको अमर होने का वरदान नहीं मिला। अब रावण ने मृत्यु का पथ स्वयं ही चुन लिया। तीनों लोक में कौन ऐसा आदमी है जो ऐसा ( निन्द्य ) काम करता है। दशरथ के घर पर स्वयं विष्णु ने जन्म लिया। उन्होंने ही अलंघ्य सागर पर सेतु बनवा डाला। द्वार पर राम खड़े हैं और रावण के प्राण संशय में हैं। बताओ भी, रावण के प्राणों की रक्षा कैसे हो सकती है! मनुष्य होकर भी राम विष्णु का अवतार हैं, ऐसे राम के हाथ रावण को कैसे त्राण मिलेगा। पार्वति! मुझसे नाहक शिकायत मत करो, रावण को बचाने की मुझमें शक्ति नहीं। विधाता का लिखा मैं नहीं मेट सकता हूँ—मैं स्वयं अपने ही तरंग में रहा करता हूँ। शंकर-शंकरी में यह कलह देखकर सारे देवता मुँह फेरकर हँसने लगे। धूर्जटि महादेव

धूर्ज्जटिर कोपे देखि हासे देवगण ❋ आजि कालि रावणेर हइबे मरण
रावण मरिबे, सर्व्व-देवतार हास ❋ हर-गौरी-कोन्दल रचिल कृत्तिवास४६
पंच दिन उभय सैन्येर समावेश ❋ परस्पर केह कारे नाहि करे द्वेष
श्रीराम बलेन, तत्व जान विभीषण ❋ कि कारण नाहि रण देय दशानन
विभीषण बले, प्रभु, कर अवगति ❋ उभय सैन्येर शब्दे स्तब्ध लंकापति
ताइ विपक्षेर प्रति नाहि देय हाना ❋ निश्चय जानिते दूत या'क् एक जना
विभीषण-सह राम युक्ति करि सार ❋ हनूमाने डाकिया कहेन समाचार
आइस बाछा हनूमान पवननन्दन ❋ लंकाते जानिया एस कि करे रावण
सभामध्ये उठिया बलिछे जाम्बवान् ❋ एकवार गियाछिल वीर हनूमान्
येइ जाइवेक हनू लंकार भितर ❋ हनूमाने देखिया कुपिबे लंकेश्वर
मनेते करिबे एइ आसे बार-बार ❋ इहा बिना राम सैन्ये वीर नाहि आर
दक्षिण द्वारेते आछे अंगदेर थाना ❋ ताहारे आनिते दूत जाक् एक जना
हनूमान हइते अंगद वीर बड़ ❋ ताहारे पाठाउ, ये बलिबे दड़ वड़ ४७

का कोप देखकर सारे देवता हर्ष मनाने लगे। आज ही कल में रावण का मरण समीप है। रावण-मरण और देवताओं का उल्लास ! इस प्रकार कृत्तिवास ने हर-गौरी कलह का विवरण प्रस्तुत किया ॥ ४६ ॥

पाँच दिन तक दोनों सैन्यों का जमाव होता रहा। किसी ने भी एक दूसरे को छेड़ा नहीं। श्री राम ने कहा, विभीषण ! जरा इस बात का रहस्य बताओ कि दशानन लड़ाई में उतर क्यों नहीं रहा है। विभीषण ने कहा, प्रभु, जान लीजिये कि लंकापति दोनों सैन्यों के शब्द से स्तंभित रह गया है, इसीलिए विपक्ष पर धावा नहीं बोल रहा है। (फिर भी) सही बात का पता लगाने के लिए एक दूत भेजना चाहिए। विभीषण के साथ ऐसा परामर्श कर राम ने हनुमान को बुलवा कर यह समाचार सुनाया और कहा, हे प्रिय पवननन्दन, तुम एक बार लंका जाकर यह पता लगा आओ कि रावण क्या कर रहा है। सभा में जाम्बवान उठ कर खड़ा हो गया और बोला, एक बार वीर हनुमान वहाँ गये थे; जैसे ही वह फिर लंका में जायँगे तो उसे देखकर लंकेश कुपित हो जायगा। वह ( यह भी ) सोचेगा कि यही बार-बार यहाँ आता है, शायद इसके अतिरिक्त राम-सेना में कोई अन्य वीर नहीं है। दक्षिण-द्वार पर अंगद का मोर्चा है, उसे बुलवाने के लिए एक पायक चला जाय। हनुमान से भी अंगद अधिक वीर है, उसको भेज दो। वह खूब खरी-खोटी सुनाये गा ॥ ४७ ॥

[ ॐ ]

सन्त तिरुवळ्ळुवर द्वारा प्रणीत

# तिरुक्कुरळ्

देवनागरी-लिप्यन्तरण एवं हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद—

## प्रस्तावना

केवल हिन्दी ही नहीं, अपितु भारत की समस्त क्षेत्रीय भाषाओं के पाठकों के लिए आज अनुपम सुअवसर है कि तमिऴ भाषा के समृद्ध प्राचीन वाङ्मय के अनमोल रत्न "तिरुक्कुरळ्" का सानुवाद देवनागरी लिप्यन्तरण प्रस्तुत किया जा रहा है। श्रीमद्भगवद्गीता के सदृश आदृत और रामचरितमानस के सदृश, तमिऴ प्रदेश में घर-घर नित्य पढ़े जाने वाले, इस नीतिग्रंथ के अंग्रेज़ी तथा विभिन्न यूरोपीय भाषाओं में अनेक अनुवाद हो चुके हैं। कैसा आश्चर्य है कि तमिऴ के अतिरिक्त, भारत के अन्य भाषा-भाषी क्षेत्र अब तक इसके पठन-पाठन से बञ्चित रहे! आशा है प्रस्तुत प्रयास से इस अवाञ्छनीय अभाव की पूर्ति होगी। सुदूर-सीमित तमिऴ भाषा, देवनागरी लिपि के माध्यम से, भारत के कोने-कोने में सुपरिचित होकर प्रत्येक व्यक्ति को सदाचार प्रदान करेगी।

ग्रंथ 'तिरुक्कुरळ्' का विशद परिचय एवं विवेचन तो ग्रंथ के सम्पूर्ण प्रकाशन के उपरांत ही दिया जायगा, किन्तु पाठकों को सामान्यतया परिचित कराने के लिए सुयोग्य अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार की ही लेखनी से निस्सरित कुछ अंश नीचे उद्धृत किये जा रहे हैं:—

"वेद, धर्मशास्त्रादि में वर्णित एवं प्रतिपादित धर्म के विविध तत्त्वों का सम्यक् विवेचन हमें सन्तशिरोमणि तिरुवळ्ळुवर के अमर नीति-ग्रंथ तिरुक्कुरळ् में मिलता है। तमिऴ साहित्य के श्रेष्ठतम ग्रन्थों में से यह प्रमुख है। इसकी विशेषताओं के आधार पर ही इसे 'तमिऴ मरै' या 'तमिऴ-वेद' कहते हैं। इसकी रचना लगभग २००० वर्ष पूर्व हुई।

"प्रस्तुत ग्रंथ में धर्म, अर्थ, काम—इन तीनों शीर्षकों पर आधारित तीन ख हैं। धर्म-काण्ड में ३८, अर्थ-काण्ड में ७० तथा काम-काण्ड में २५ अध्याय है प्रत्येक अध्याय में—दस कुऱळ्-पद्यों में एक-एक तथ्य का प्रतिपादन किया गया है इस प्रकार १३३० कुऱळ् में धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं व्यक्ति विषयों की व्यापक व्याख्या की गई है। छोटे से कुऱळ् छंद में सारगर्भित तत्त्वों समावेश के विषय में यह कथन प्रसिद्ध है कि 'तिरुवळ्ळुवर ने राई को छेदकर उस सप्त सागरों को भर दिया है।'

"इस ग्रंथ के प्रत्येक छंद में जीवन का चिरन्तन सत्य समाहित है। जीवन समस्त कल्याणकारी तत्त्वों का विश्लेषण कर प्राणिमात्र के जीवन-पथ को प्रशस्त बना के हेतु मार्ग-निर्देश किया है। निष्काम कर्मयोग पर विशेष बल देने वाले इस ग्र के प्रत्येक कुऱळ् को वेदों की ऋचा के समान स्वीकार कर इसे तमिऴमरै (तमिऴ-वेद सत्य ही कहा गया है।

"तिरुवळ्ळुवर के जन्म, कुल एवं धर्मादि के संबंध में विद्वानों में मतभेद है शैव, वैष्णव, बौद्ध, जैन सभी धर्मों के अनुयायियों ने तिरुवळ्ळुवर को अपने धर्म क अनुयायी सिद्ध करने का प्रयास किया है, परन्तु वस्तुतः वे किसी संप्रदाय-विशेष क संपत्ति न थे। अपनी रचना में उन्होंने मानव-मात्र को ही अपना लक्ष्य माना है इसीलिए उनका अन्यतम ग्रंथ भी सार्वजनीन एवं सर्वकालीन है।

"इस अलौकिक नीति-ग्रन्थ के तत्त्वों से हिन्दी-भाषा-भाषी भी अवगत होकर भारतीय भावात्मक एवं सांस्कृतिक एकीकरण को पूर्णरूपेण सिद्ध कर सकें—इस उद्देश्य से सम्पादक—वाणी सरोवर (श्री नन्दकुमार अवस्थी) के सुझाव पर, मैं हिन्दी अनुवाद के साथ ही साथ ग्रंथ के मूल तमिऴ रूप के देवनागारी लिप्यन्तरण में प्रवृत्त हुई।"

अनुवादक के इन उद्‌गारों को व्यक्त करने के उपरांत भगवान् से प्रार्थना है कि वह इस सद्-ग्रंथ के प्रकाशन के उद्देश्य को सफलता प्रदान करे।

जय तमिऴ्नाड ! जय भारत !!

—प्रकाशक

# तिरुक्कुरळ्

## धर्मकाण्डम्

### अदिकारम् (अध्याय) १

### कडवुळ्-वाऱ्त्तु ( ईश-वन्दना )

अकर मुदल ऍळुत्तॆल्लाम् आदि
भगवन् मुदट्ऱे उलगु ॥ १ ॥

'अ' अक्षर है सकल अक्षरों का जिस भाँति मूल आधार;
सकल विश्व का उसी भाँति 'भगवान्' आदि है जगदाधार ॥ १ ॥§

समस्त अक्षरों का आदि स्रोत अक्षर 'अ' है उसी प्रकार विश्व का आदि स्रोत भगवान् है ॥ १ ॥

कट्ऱदनाल् आय पयनॆऩ्कॊल् वालऱिवन्
नट्ऱाळ् तॉळा अर् ऍनिन् ॥ २ ॥

सुफल कहाँ पाण्डित्य वहाँ, जिनमें उपजा न भक्ति-सञ्चार,
ज्ञानागार-दिव्य चरणों में नहीं किया पूजा-सत्कार ? ॥ २ ॥

उन लोगों के अध्ययन का क्या लाभ, जिन्होंने ज्ञानागार [भगवान्] के दिव्य चरणों की आराधना नहीं की ॥ २ ॥

मलर्मिसै एगिनान् माणडि सेर्न्दार्
निलमिसै नीडुवाळ् वार् ॥ ३ ॥

कुसुमित-मनमन्दिर में जिनके, जगमग कृपा-चरण-भगवन्त,
शाश्वत जीवन के अधिकारी उनको ही सुख-शांति अनन्त ॥ ३ ॥

---

§ सन्त तिरुवळ्ळुवर का यह नीति-काव्य हिन्दी भाषा में भी कण्ठाग्र करने योग्य उपलब्ध हो, इस दृष्टि से प्रत्येक कुऱळ् का, विविध अनुवादों के आधार पर हिन्दी पद्यानुवाद श्री नन्दकुमार अवस्थी द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।

जो भगवान् के चरण-कमलों को अपने हृदय-कमल में स्थापित करते हैं, वे भूतल पर आनंद भोगते हुए [अन्ततः] शाश्वत जीवन प्राप्त करते हैं ॥ ३ ॥

वेण्डुदल् वेण्डामै इलान् अडि सेर्न्दार्क्कु
याण्डुम् इडुम्बै इल ॥ ४ ॥

**सदा भरोसा प्रभु का रखते, जिनके मन में राग न द्वेष,**
**भव-बाधा से दूर, व्यापता पाप-दुःख का उन्हें न लेश ॥ ४ ॥**

रागद्वेष - रहित होकर भगवान् के चरणों के आश्रित रहने वाले जनों को सांसारिक वाधा [अर्थात् जन्म-मरण] का रोग नहीं लगता ॥ ४ ॥

इरुळ्सेर् इरुविनैयुम् सेरा इऱैवन्
पॉरुळ्सेर् पुगळ्पुरिन्दार् माट्टु ॥ ५ ॥

**एक मात्र भगवान्-भजन में रहते भक्त सर्वदा लीन;**
**पाप-पुण्य के युगल कर्मबन्धन-तापों से सदा विहीन ॥ ५ ॥**

जो व्यक्ति सदैव भगवान् के भजन में लीन रहते हैं उन्हें अज्ञान पर आश्रित दोनों प्रकार के कर्म-बन्धन* लिप्त नहीं करते ॥ ५ ॥

पॉऱिवायिल् ऐन्दवित्तान् पॉय्दीर् ऑळुक्क
नॅऱिनिन्ऱार् नीडुवाळ् वार् ॥ ६ ॥

**पंच इन्द्रियों पर संयम हो चुके भस्म वासना-विकार,**
**प्रभु में पगे इन्हीं सन्तों का चिदानन्द पर है अधिकार ॥ ६ ॥**

जो पाँचों इन्द्रियों का संयम करके भगवान् के धर्म-मार्ग का अनुगमन करते हैं वे चिदानन्द प्राप्त करते हैं ॥ ६ ॥

तऩक्कुवमै इल्लादान् ताळ्सेर्न्दार्क् कल्लाल्
मऩक्कवलै माट्रल् अरिदु ॥ ७ ॥

**जिनको अनुपम ईश-चरण के आश्रय की है मिली न शक्ति,**
**त्रिविध ताप की दुसह वेदना से निश्चय है उन्हें न मुक्ति ॥ ७ ॥**

* दो प्रकार के कर्म—पाप-पुण्य।

जो व्यक्ति, अनन्य भगवान् के चरणों का आश्रय ग्रहण करते हैं उनके अतिरिक्त, यह निश्चय है कि [अन्य को] दुःख और मानसिक अशान्ति से मुक्त होना संभव नहीं ॥ ७ ॥

अऱवाऴि अन्दणन् ताळ्सेर्न्दार्क् कल्लाल्
पिऱआऴि नीन्दल् अरिदु ॥ ८ ॥

**गुणागार प्रभु धर्मसिन्धु के पदपंकज के बिना पखार,**
**छोर न पाओ जन्म-मरण का, अहह ! अगम यह पारावार[1] ॥ ८ ॥**

धर्म-सिन्धु गुणनिधान भगवान् के शरणागत के अतिरिक्त और कोई इस दुःख-रूपी भवसागर को पार नहीं कर सकता ॥ ८ ॥

कोळिल् पॉऱियिल् गुणम् इलवे ऍण्गुणत्तान्
ताळै वणङ्गात् तलै ॥ ९ ॥

**अष्टलक्षणी§ ब्रह्मपाद में जिसका सविनय झुका न शीश,**
**शीश नहीं, निष्क्रिय है, जड़ है, नाम-रूप का केवल शीश ॥ ९ ॥**

अष्टलक्षणी§ भगवान् के चरणों को जिस 'सिर' ने अभिवादन नहीं किया वह निष्क्रिय इन्द्रियों [अथवा निर्जीव पुतलियों] के समान केवल नाम मात्र का 'सिर' है ॥ ९ ॥

पिऱविप् पॅरुङ्कडल् नीन्दुवर् ; नीन्दार्
इऱैवन् अडिसेरा दार् ॥ १० ॥

**'प्रभु-पद-प्राप्त' पार होते हैं जन्म-मरण का पारावार[1];**
**विना प्रभु-चरण भवसागर से कभी न संभव है निस्तार ॥ १० ॥**

विशाल भवसागर* को वे (ही) लोग पार कर पाते हैं जो भगवान् के शरणापन्न हो जाते हैं। ईश्वर की शरण के बिना, लोग इसे पार नहीं कर पाते ॥ १० ॥

---

§ अष्टलक्षण—स्वतंत्रत्त्व, विशुद्धदेहत्व, अनादि बोध, सर्वज्ञत्त्व, निरामयत्त्व, अलुप्तशक्ति, अनंतशक्ति, तृप्ति। अथवा स्वयमाधार, निर्मल, विवेकमय, ज्ञानमय, निस्पृह, अनन्त करुणामय, सर्वशक्तिमान, चिदानन्द।

* टीकाकारों ने 'जन्म-मरण (आवागमन) का सिन्धु', भी लिखा है।

१ समुद्र।

अदि्कारम् (अध्याय) २

वान् सिऱप्पु ( वर्षा-महत्व )

वाऩिन् ऱुलगम् वऴङ्गि वरुदलाल्
ताऩ् अमिऴ्तम् ऍऩ्ऱुणरऱ् पाऱ्ऱु ॥ १ ॥

**समयोचित वर्षा के बल पर जीवन पाता है संसार;**
**इसीलिए आकाश-सलिल को कहता लोक 'अमृत की धार' ॥ १ ॥**

संसार [उचित समय की] वर्षा से जीवित है, इसीलिए आकाश-वृष्टि को अमृत की धार कहा जाता है ॥ १ ॥

तुप्पार्क्कुत् तुप्पाय तुप्पाक्कित् तुप्पार्क्कुत्
तुप्पाय बूउम् मऴै ॥ २ ॥

**अन्नादिक आहार सकल की वर्षा ही है सिरजनहार;**
**अन्न सिरज कर स्वयं अन्न बन जाती है पावस की धार ॥ २ ॥**

आहार के लिए वर्षा ही खाद्य [पदार्थ] देती है; वर्षा, स्वयं ही [अन्नादिक] आहार बन जाती है ॥ २ ॥

विण्णिन्ऱु पॉय्प्पिन् विरि नीर् वियऩुलगत्
तुण्णिन् ऱुडऱ्ऱुम् पसि ॥ ३ ॥

**अवसर पर जो जलद विमुख हों, बन्द करें देना जलदान,**
**क्षुधा-प्रपीड़ित सिन्धु-घिरा यह धरालोक बन जाय मसान ॥ ३ ॥**

यदि समुद्र के द्वारा घिरी हुई धरती पर वर्षा [समय से] न हो तो [अकाल-ग्रस्त] संसार क्षुधा से प्रपीड़ित हो उठे ॥ ३ ॥

एरिन् उऴाअर् उऴवर् पुयल्ऍन्नुम्
वारि वळङ्कुन्ऱिक् काल् ॥ ४ ॥

**वारिद वारि न बरसायें, हो वसुन्धरा पर वारि-अभाव,**
**खेतों में हल चलें न कृषकों में उपजे खेती का भाव ॥ ४ ॥**

यदि बादलों से [समयोचित] वर्षा की उपलब्धि न होती तो कृषक जन खेत में हल नहीं चला सकते ॥ ४ ॥

कॅडुप्पदूउम् कॅट्टार्क्कुच् चार्वाय्मट्राङ्गे
एॅडुप्पदूउम् एॅल्लाम् मळै ॥ ५ ॥

**प्रलयंकर पावस-प्रकोप ही से होता जब-तब संहार;**
**सुख-समृद्धि का मानव में वर्षा ही फिर फिरती संचार ॥ ५ ॥**

वर्षा ही [अति प्रचण्ड होकर] सब को नष्ट कर देती है, और फिर दुखियों का अवलम्ब बनकर वही उन्हें सम्पन्न भी करती है ॥ ५ ॥

विसुम्बिन् तुळिवीळिन् अल्लाल्मट्राङ्गे
पसुम्पुल् तलैकाण् परिदु ॥ ६ ॥

**नभमण्डल से मेघ न करते भूतल पर जो पावन वृष्टि,**
**शस्य-श्यामली हरियाली की सृष्टि न छिति पर आती दृष्टि ॥ ६ ॥**

मेघों से जलबुन्द गिरे बिना पृथ्वी पर हरे-भरे तृणों की नोक भी अंकुरित नहीं हो सकती ॥ ६ ॥

नॅडुङ्कडलुम् तऩ्नीर्मै कुऩ्ऱुम् तडिन्तॅळिलि
ताऩल्का तागि विडिऩ् ॥ ७ ॥

**जलदों[1] का जलदान जलधि[2] को करता रहे न जो परिपूर्ण,**
**रत्नाकर[2] विपन्न की निधियाँ हों क्रमशः विनष्ट संपूर्ण ॥ ७ ॥**

यदि बादल सागर [से प्राप्त हुए जल] को [सागर को पुनः] दान न करें तो विशाल सागर की [रत्न, जलचर आदि] सम्पत्ति नष्ट हो जाय ॥ ७ ॥

सिऱप्पॉडु पूसऩै चॅल्लादु वाऩम्
वऱक्कुमेल् वाऩोर्क्कुम् ईण्डु ॥ ८ ॥

**हा! गगन-घन नीर न देते, धरती पर मिटता उल्लास;**
**देवार्चन हविष्य पाने की देवों की मिट जाती आस ॥ ८ ॥**

यदि आकाश से वृष्टि न हो तो पृथ्वी पर दैनिक या विशेष देवार्चना लुप्त हो जाय ॥ ८ ॥

दाऩम् तवम् इरण्डुम् तङ्गा वियऩुलगम्
वाऩम् वळङ्गा तॅऩिऩ् ॥ ९ ॥

---

१ मेघ २ समुद्र ।

**मेघविहीन गगनमण्डल हो, भूतल अनावृष्टि से व्याप्त;**
**दान और तप सकल कर्म शुभ, यह जग से हो जायँ समाप्त ॥ ९ ॥**

यदि इस विशाल भूतल पर वर्षा न हो तो दान-पुण्य-तप§ [आदि शुभ] कर्म समाप्त हो जायँ ॥ ९ ॥

नीरिऩ्ऱु अमैया तुलकॅऩ्ऩिऩ् यार्याक्कुम्
वाऩिऩ्ऱु अमैया तॉऴुक्कु ॥ १० ॥

**जल जीवन है जल पर निर्भर सारे जग का है व्यापार;**
**उसी भाँति वर्षा पर निर्भर सदाचरण सब धर्माचार ॥ १० ॥**

जिस प्रकार बिना जल के संसार का जीवन नहीं चलता उसी प्रकार बिना वर्षा के कोई भी सदाचार संभव नहीं ॥ १० ॥

## अदिकारम् (अध्याय) ३

### नीत्तार् पॅरुमै ( संन्यासी-महिमा )

ऑऴुक्कत्तु नीत्तार् पॅरुमै विऴुप्पत्तु
वेण्डुम् पऩुवल् तुणिवु ॥ १ ॥

**जग से लिया विराग धन्य हैं त्यागी संन्यासी विद्वान्;**
**धर्मशास्त्र सब ही करते हैं संन्यासी का विरद बखान ॥ १ ॥**

[आचारशील] संन्यासी, जो [संसार से] असंलग्न हो चुके हैं, सभी धर्मशास्त्र उनकी श्रेष्ठ महिमा का बखान करते हैं ॥ १ ॥

तुऱन्दार् पॅरुमै तुणैक्कूऱिऩ् वैयत्तु
इऱन्दारै ऍण्णिक्कॉण् डट्ऱु ॥ २ ॥

**मरे हुओं की गिनती का इस जग में कितना कठिन शुमार !**
**किन्तु कठिनतर संन्यासी-महिमा का अंकन अतिव अपार ॥ २ ॥**

संन्यासी के महत्व का अंकन वैसा ही [असंभव] है जैसा इस संसार में मृतकों की गणना करना ॥ २ ॥

इरुमै वगैतॅरिन् तीण्डऱम् पूण्डार्
पॅरुमै पिऱङ्गिट्ऱु उलगु ॥ ३ ॥

§ दान और तप से न केवल मानव वरन् जीवमात्र की तुष्टि होती है।

**बन्धन[1]- मोक्ष-मर्म के ज्ञाता, जग से ग्रहण किया संन्यास,**
**उनकी महिमा का जगमग जगती पर रहता अमर प्रकाश ॥ ३ ॥**

जन्म और मोक्ष के ज्ञान से युक्त जिन महान् आत्माओं ने संसार से संन्यास ग्रहण किया है, उनकी महिमा विश्व में चिरंतन प्रकाशित होती है ॥ ३ ॥

उरनॅत्तुम् तोट्टियान् ओरैन्दुम् काप्पान्
वरनॅत्तुम् वैप्पिर्कोर् वित्तु ॥ ४ ॥

**ज्ञानशक्ति के अंकुश से इंद्रियाँ पञ्च जिसके आधीन,**
**दिव्यलोक की ज्योति-उर्वरक बीज स्वयं वह ज्ञान-प्रवीन ॥ ४ ॥**

जो सुदृढ़ ज्ञानरूपी अंकुश से पाँच विषयेन्द्रियों पर नियन्त्रण रखता है वह ज्ञानी स्वयं, दिव्यलोक का बीज बनता है ॥ ४ ॥

ऐन्दवित्तान् आट्रल् अगल्विसुम्बु ळार्कोमान्
इन्दिरने सालुङ्करि ॥ ५ ॥

**पंच इन्द्रियों पर संयम है, उस तपसी की शक्ति अनन्त;**
**स्वयं साक्षी सुरपति हैं [देखो गौतम-शापित[2] का अन्त] ॥ ५ ॥**

इन्द्रियजयी की अगाध शक्ति होती है; स्वर्गलोक के अधिपति इन्द्र स्वयं इसके साक्षी हैं[2] ॥ ५ ॥

सॅयर्करिय सॅय्वार् पॅरियर् ; सिऱियर्
सॅयर्करिय सॅय्गला दार् ॥ ६ ॥

**कर्मठ और कठिन तप करनेवाले ही हैं व्यक्ति महान्;**
**साधारण असमर्थ जनों का निम्नकोटि में है अनुमान ॥ ६ ॥**

दुष्कर और विरल कार्य महान् लोग ही करते हैं; उन महान् कार्यों को न कर सकने वाले निम्न कोटि के लोग हैं ॥ ६ ॥

सुवैऑळि ऊऱोसै नाट्रम्एॅन् ऱैन्दिन्
वगैतॅरिवान् कट्टे उलगु ॥ ७ ॥

---

१ आवागमन २ संयमी तपस्वी गौतम के शाप-वश सुरराज इन्द्र की दुर्दशा की ओर संकेत करते हुए संन्यासी की अपार शक्ति का परिचय दिया है ।

**शब्द रूप रस गंध और स्पर्श पंच इन्द्रियज-विकार,**
**इन्हें समझने वाले ही के वशीभूत है यह संसार ॥ ७ ॥**

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध—इन पंच-इन्द्रियविषयों को जानने वाले ही के वश में संसार है ॥ ७ ॥

निऱैमॉऴि मान्दर् पॅरुमै निलत्तु
मऱैमॉऴि काट्टि विडुम् ॥ ८ ॥

**वचन-अमोघ[1] बोलने वाले ऋषियों की महिमा है सिद्ध;**
**उनसे मुखरित गूढ़ मंत्र ही होते हैं संसार-प्रसिद्ध ॥ ८ ॥**

अमोघ वचन बोलने वाले तपस्वियों द्वारा कथित गूढ़ मंत्रों ही से संसार में उनकी महिमा सिद्ध है ॥ ८ ॥

गुणमॅन्नुम् कुन्ऱेऱि निन्ऱार् वॅगुळि
कणमेयुङ् कात्तल् अरिदु ॥ ९ ॥

**धर्म-रूप अविचल पर्वत पर दृढ़ासीन जो महिमावान्,**
**उसके क्षणिक क्रोध को झेले, ऐसा दुर्लभ है इंसान ॥ ९ ॥**

जो धर्म रूपी पर्वत पर आरूढ़ होते हैं, उनका क्षण भर का क्रोध भी सहन करना कठिन है ॥ ९ ॥

अन्दणर् ऍन्बोर् अऱवोर् मट्रॅव्वुयिर्क्कुम्
सॅन्दणमै पूण्डॉऴुकलान् ॥ १० ॥

**प्राणि मात्र के प्रति करुणामय सब पर दया-क्षमा के रूप;**
**इसीलिए मानवजन में हैं सिद्ध संयमी सन्त अनूप ॥ १० ॥**

प्राणिमात्र के साथ प्रेम और करुणा का सद्व्यवहार करते हैं, इसी लिए वे साधु धर्म और सत्य के रूप कहलाते हैं ॥ १० ॥

## अदिकारम् (अध्याय) ४

### अऱन् वलियुऱुत्तल् (धर्म पर आग्रह)

सिऱप्पीनुम् सॅल्वमुम् ईनुम् अऱत्तिनूङ्गु
आक्कम् ऍवनो उयिर्क्कु ? ॥ १ ॥

---

१ कभी निष्फल न जानें वाले ।

**धर्म मुक्तिदायी, समृद्धि-धन-वैभव का दाता है धर्म;**
**तज कर ऐसा धर्मतत्व, है भला कौन जग में सत्कर्म ? ॥ १ ॥**

धर्म मोक्ष का दाता है तथा धर्म, अर्थ (धन) भी देता है। इससे अधिक श्रेयस्कर तत्त्व और कौन वस्तु है ? [अर्थात् धर्म सर्वोपरि श्रेय है§] ॥ १ ॥

अऱत्तिऩूउङ् काक्कमुम् इल्लै अदऩै
मऱत्तलि ऩूङ्गिल्लै केडु ॥ २ ॥

**साधन श्रेष्ठ धर्म ही है, मानव का इससे ही कल्यान;**
**अकल्यान सर्वथा विपथ जो हुआ धर्मपथ से इंसान ॥ २ ॥**

धर्म से बढ़कर प्राणी के लिए अन्य कुछ भी श्रेय नहीं है; और यदि जीव धर्म को भूल गया तो इस धर्म-विस्मरण से बढ़कर अन्य अकल्याण नहीं है ॥ २ ॥

ऑल्लुम् वगैयाऩ् अऱविऩै ओवादे
सॅल्लुम्वाय् ऍल्लाम् सॅयल् ॥ ३ ॥

**इसीलिए सर्वदा शक्ति भर समुचित हमको सर्व प्रकार,**
**तन से, मन से और वचन से, है करणीय धर्म - आचार ॥ ३ ॥**

पूरी सामर्थ्य से धर्मयुक्त ही कर्म करना चाहिए; तन से, मन से, वचन से—सब प्रकार से, सर्व स्थिति में धर्म-मार्ग पर चलना चाहिए ॥ ३ ॥

मऩत्तुक्कण् मासिलऩ् आदल् अऩैत्तऱऩ्
आगुल नीर पिऱ ॥ ४ ॥

**हृदय कालिमा-हीन; वही मानव है अहा ! धर्म का रूप;**
**इसके बिना आचरण सारे हैं आडम्बर मात्र विरूप ॥ ४ ॥**

निष्कलुष (पवित्र-) हृदय होना ही धर्म का स्वरूप है। [इसके बिना] शेष कर्म तो केवल आडम्बर मात्र हैं [अर्थात् व्यर्थ हैं] ॥ ४ ॥

अळुक्का ऱवावॅगुळि इऩ्ऩाच्चॉल् नाऩ्गुम्
इळुक्का इयऩ्ऱ तऱम् ॥ ५ ॥

**मत्सर,[१] लोभ, क्रोध, कटुवानी—ये चारों वासना-विकार;**
**इनसे रहित मानवी जीवन मानो हुआ धर्म - साकार ॥ ५ ॥**

---

§ धर्म से इहलोक और परलोक दोनों सफल होते हैं। १ ईर्ष्या।

ईर्ष्या, लोभ, क्रोध एवं कटु वचन—इन चारों वासनाओं से रहित जीवन ही धर्म है [इन चारों कुविकारों का त्याग ही धर्म का तत्त्व है] ॥ ५ ॥

अऱ्ऱिवाम् ऍऩ्ऩा तरुञ् सॅय्ग ; मट्ऱदु
पॉऩ्ऱुङ्गाऌ् पॉऩ्ऱात् तुणै ॥ ६ ॥

**आज करो, अब करो, न यावज्जीवन तजो धर्म-सत्संग;**
**मृत्यु समीप न सहचर कोई केवल धर्म मात्र चिरसंग ॥ ६ ॥**

धर्म अभी करो [तथा अंत समय तक धर्म के कार्यों से वंचित न रहो], उन्हें आगे करने के लिए न रख छोड़ो; क्योंकि मृत्यु-काल में [तथा मृत्यु-उपरांत] धर्म ही चिरसंगी रहता है ॥ ६ ॥

अऱत्ता ऱिदुवॅऩ्ऩ वेण्डा सिविकै
पॉऱुत्ताऩो टूर्न्दात् इडै ॥ ७ ॥

**सत्कर्मी के पुरस्कार की, उभय लोक में देखो शान;**
**पुण्य-पालकी पर मानो मंजिल तय करता हो श्रीमान् ॥ ७ ॥**

धर्म-कर्म के प्रतिफल [अर्थात् पारितोषिक] में और क्या चाहिए ? शिविका (पालकी) में आरूढ़ की स्थिति के समान स्थिति धर्मात्मा की है ॥ ७ ॥

वीळ्नाळ् पडाअमै नऩ्ऱाट्ऱिऩ् अक्दॉरुवऩ्
वाळ्नाळ् वऴियडैक्कुम् कल् ॥ ८ ॥

**दिवस न जाये व्यर्थ, निरन्तर चलो धर्म का मार्ग विशुद्ध;**
**पुनर्जन्म-पीड़ापथ को कर देगी धर्मशिला, अवरुद्ध ॥ ८ ॥**

प्रति दिन निरंतर धर्माचरण करते रहने पर वह धर्म-रूपी शिला पुनर्जन्म का मार्ग रोक देगी [अर्थात् धर्म द्वारा ही आवागामन से रहित होकर मोक्ष-लाभ हो सकता है] ॥ ८ ॥

अऱत्ताऩ् वरुवदे इऩ्बम्मट् ऱॆल्लाम्
पुऱत्त ; पुगऴुम् इल ॥ ९ ॥

**धर्म-कर्म ही से हासिल है मानव को सच्चा आनन्द;**
**अन्य कर्म हैं व्यर्थ कि जिनसे द्वार कीर्ति का, सुख का बंद ॥ ९ ॥**

धर्म-कर्म से ही वास्तवकि सुख की प्राप्ति होती है। अन्य कर्मों का फल अनुताप और अपयश ही है ॥ ९ ॥

सॅयऱ्पाल दोरुम् अऱत्ते ; ऑरुवऱ्
कुयऱ्पाल दोरुम् पऴि ॥ १० ॥

**धर्म-कर्म करणीय कर्म हैं, चलना सदा धर्म की रीत;**
**अकरणीय हैं, वर्जनीय हैं सारे काम धर्म-विपरीत ॥ १० ॥**

धर्म-कार्य ही मनुष्य के लिए करणीय कर्म हैं। [धर्म-विपरीत] अकरणीय कर्म सदैव वर्जनीय हैं [त्याज्य हैं।] ॥ १० ॥

## अदिकारम् (अध्याय) ५

### इल्वाऴ्क्कै ( गार्हस्थ्य-धर्म )

इल्वाऴ्वान् ऍन्बान् इयल्बुडैय मूवर्क्कुम्
नल्लाट्रिन् निन्ऱ तुणै ॥ १ ॥

**चार आश्रमों में गृहस्थ का—है जीवन आदर्श विशाल;**
**शेष तीन आश्रमी सदा जिससे पाते रहते प्रतिपाल ॥ १ ॥**

वही गृहस्थाश्रमी व्यक्ति आदर्श है जो [गृहस्थाश्रमी के अतिरिक्त] अन्य तीन आश्रमस्थित* लोगों का आश्रयदाता होता है ॥ १ ॥

तुऱन्दार्क्कुम् तुव्वा दवर्क्कुम् इऱन्दार्क्कुम्
इल्वाऴ्वान् ऍन्बान् तुणै ॥ २ ॥

**दीन, अनाथ, आश्रयहीनों का पोषक जो मित्र महान्**
**धन्य ! गृहस्थ-आश्रम सर्वोपरि गृहस्थ है गरिमावान् ॥ २ ॥**

गृहस्थ, दीन-अनाथ-आश्रयहीनों का सहायक होता है ॥ २ ॥

तॅन्बुलत्तार् दॅय्वम् विरुन्दॉक्कल् तानॅन्ऱाङ्
कैम्बुलत्ता ऱोम्बल् तलै ॥ ३ ॥

**बन्धु-बान्धव, पितृ, देव, बलिवैश्व, स्वयं, ऋषि, अतिथि-सुकर्म—**
**आजीवन गृहस्थ-जीवन का पञ्चयज्ञ§ है पावन धर्म ॥ ३ ॥**

---

* गृहस्थाश्रम के अतिरिक्त ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ एवं संन्यास—यह तीन आश्रम।

§ गृहस्थ के लिए दैनिक कर्त्तव्य—पंच महायज्ञ (ब्रह्म, पितृ, देव, बलिवैश्व और नृ अर्थात् अतिथि यज्ञ) कदाचित् यहाँ अभीष्ट हैं।

पितृ, देवता, बन्धु-बान्धव, अतिथि एवं स्वयं—इन पाँचों के प्रति कर्त्तव्य करना गृहस्थ का परमधर्म है ॥ ३ ॥

पऴि अञ्जिप् पात्तूण् उडैत्तायिऩ् वाऴ्क्कै
वऴि ऍञ्जल् ऍञ्ञाऩ्ऱुम् इल् ॥ ४ ॥

**पाप-भीरु, समुचित व्यय करता धन उपार्जन के उपरांत,**
**वंश-बेलि ऐसे गृहस्थ की फलती है सर्वदा अनन्त ॥ ४ ॥**

जो गृहस्थ पाप से सदैव बचता और उपार्जित धन का यथोचित विभाजन कर के भोग करता है उसका वंश सदैव फलता-फूलता रहता है ॥ ४ ॥

अऩ्बुम् अऱऩुम् उडैत्तायिऩ् इल्वाऴ्क्कै
पण्बुम् पयऩुम् अदु ॥ ५ ॥

**धर्म-प्रेम से युक्त अहो ! जिसका गृहस्थ जीवन है, धन्य !**
**[लोक और परलोक] सुफल सर्वदा वही है सफल अनन्य ॥ ५ ॥**

जिसका गृहस्थ-जीवन प्रेम एवं धर्ममय है वही धन्य है, तथा उसे ही सुफल प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

अऱत्ताऱ्ऱिऩ् इल्वाऴ्क्कै आऱ्ऱिऩ् पुऱत्ताऱ्ऱिल्
पोऑय्प् पॆऱुव दॆवऩ् ? ॥ ६ ॥

**जो गृहस्थ-आश्रम में रहते पूरा करे धर्म-आचार,**
**पूर्ण सफल; फिर शेष आश्रमों की उस जन को क्या दरकार ॥ ६ ॥**

यदि गृहस्थ, धर्म-मार्ग पर चल कर अपना कर्त्तव्य पालन करता है तो उसको अन्य आश्रमों के धर्मों के पालन से क्या प्रयोजन ? [उसके कल्याण के लिए एक मात्र गृहस्थ-धर्म ही पर्याप्त है।] ॥ ६ ॥

इयल्बिऩाल् इल्वाऴ्क्कै वाऴ्बवऩ् ऍऩ्बाऩ्
मुयल्वारुळ् ऍल्लाम् तलै ॥ ७ ॥

**जो गृहस्थ निज आश्रम के सब धर्म-कर्म पर है आसीन,**
**सकल मुमुक्ष[1] साधकों में है श्रेष्ठ; मुक्ति उसके आधीन ॥ ७ ॥**

[क्योंकि] जो गृहस्थ, धर्मपथ पर चल कर गृहस्थ-जीवन व्यतीत

१ मोक्ष चाहने वाला ।

करता है वह अन्य मोक्षाभिलाषी साधकों में अग्रगण्य माना जाता है ॥ ७ ॥

आट्रिन् ऑळुक्कि अऱनिळुक्का इल्वाळ्क्कै
नोऱ्पारिन् नोन्मै उडैत्तु ॥ ८ ॥

जो गृहस्थ-जीवन स्वधर्म-रत, हों प्रेरित जिससे अन्यान्य,
वह तपस्वियों में तपसी है, उस गृहस्थ का जीवन धन्य ॥ ८ ॥

वह गृहस्थ जो निज धर्म [और निज आश्रम] पर आचरण करता है उसका जीवन, कठिन तपस्वियों के जीवन से अधिक श्रेष्ठ है ॥ ८ ॥

अऱन् ऍनप् पट्टदे इल्वाळ्क्कै ; अक्दुम्
पिऱन् पळिप्प दिल्लायिन् नन्ऱु ॥ ९ ॥

जन-निन्दा से रहित, लोकप्रिय, यदि गृहस्थ-जीवन है शुद्ध,
सर्वोपरि जीवन पुनीत वह, वही सर्वथा धर्म विशुद्ध ॥ ९ ॥

गृहस्थ-जीवन ही श्रेष्ठ धर्म है, और यदि वह जन-निन्दा से रहित होकर पवित्र है तो [अन्य आश्रमों से] श्रेष्ठतर है ॥ ९ ॥

वैयत्तुळ् वाळ्वाङ्गु वाळ्बवन् वानुऱैयुम्
दॅय्वत्तुळ् वैक्कप् पडुम् ॥ १० ॥

जो गृहस्थ, आदर्श-धर्ममय जीवन का करता निर्वाह,
देवोपम-पद-प्राप्त उसी को खुली स्वर्ग की सीधी राह ॥ १० ॥

जो गृहस्थ इस संसार में आदर्श धर्मनिष्ठ जीवन व्यतीत करता है वह स्वर्ग में देवोपम स्थान का अधिकारी है ॥ १० ॥

## अदिकारम् (अध्याय) ६
### वाळ्क्कैत्तुणै नलम् ( सहधर्मिणी-गुण )

मनैत्तक्क माण्बुडैयळ् आकित्तऱ् कॉण्डान्
वळत्तक्काळ् वाळ्क्कैत् तुणै ॥ १ ॥

पति की आय गृहस्थी का व्यय-जिसको तालमेल का ज्ञान,
गुणवन्ती सहचरी, यही आदर्श सुगृहिणी की पहचान ॥ १ ॥

जो सुगृहिणी के गुणों से युक्त, पति की आय के अनुसार गृह का व्यय चलाती है वही सुयोग्य गृहिणी है ॥ १ ॥

मनैमाट्चि इल्लाळ्कण् इल्लायिन् वाळ्क्कै
ऍनैमाट्चित् तायिनुम् इल् ॥ २ ॥

**यदि गृहस्थ के धर्म-कर्म के गुण से गृहिणी हुई विहीन,**
**कितना ही सम्पन्न घरेलू जीवन भी हो जाता दीन ॥ २ ॥**

यदि गृहिणी में गृहस्थ धर्म-कर्म के अनुसार गुणों का अभाव है तो संपन्न से संपन्न गृहस्थ-जीवन भी व्यर्थ हो जाता है ॥ २ ॥

इल्लदॅन् इल्लवळ् माण्बानाल्, उळ्ळदॅन्
इल्लवळ् माणाक् कडै ? ॥ ३ ॥

**पत्नी जो धर्मिणी, कमी क्या ? ऋद्धि-सिद्धि-सर्वत्र प्रभाव;**
**धर्महीन गृहिणी के रहते कौन वस्तु का नहीं अभाव ॥ ३ ॥**

यदि गृहिणी सुधर्मिणी है तो फिर किस वस्तु का अभाव है ? [और] यदि गृहिणी सुधर्मिणी नहीं है तो फिर क्या अभाव नहीं है ? [अर्थात् अभाव ही अभाव है] ॥ ३ ॥

पॅण्णिऱ् पॅरुन्दक्क यावुळ कऱ्पॅन्नुम्
तिण्मैउण् डाकप् पॅऱिन् ? ॥ ४ ॥

**सती-साध्वी के पातिव्रत से जगमग है जहाँ प्रकाश,**
**उससे बढ़कर दिव्य वस्तु संभव क्या जिसकी होय तलाश ॥ ४ ॥**

यदि पत्नी में अनन्य सतीत्व-धर्म विद्यमान है तो पुरुष के लिए इससे बढ़कर प्राप्त करने योग्य निधि क्या है ? ॥ ४ ॥

दॅय्वम् तॉळा अळ् कॉळुनऱ् ऱॉळुतॅळुवाळ्
पॅय्यॅनप् पॅय्युम् मळै ॥ ५ ॥

**पतिपूजन में मगन, न मन में अन्य देव का यदि सत्कार,**
**पतिव्रता के वचनमात्र पर बरस चले पावस की धार ॥ ५ ॥**

जो पतिव्रता नारी अन्य देवों की पूजा में अनुराग नहीं रखती, केवल अपने पति की ही पूजा में सर्वदा निरत रहती है, तो उस सती के आदेश मात्र से तुरन्त वर्षा हो जायगी ॥ ५ ॥

नक़्शाकशी की ज़रूरत है, वह क्योंकर सीख सकते हैं। उसमें आलात[1] के बक्स की ज़रूरत है। ग़रज़ कि मुफ़लिसी ने हमारी तरक़्क़ी की राहें मस्दूद[2] कर दी हैं। कुछ बन नहीं पड़ता, क्या किया जाय। मगर कुछ न कुछ करना चाहिए। बेकार बैठना अच्छा नहीं। अब तो आडिट आफ़िस चलना चाहिए।

एक बजे के क़रीब आडिट आफ़िस पहुँचे। अर्ज़ी पर वही मामूली जवाब मिला, (नो वैकेन्सी) कोई जगह खाली नहीं। इस जवाब के मिलने से उन्हें कुछ ऐसा रंज नहीं हुआ। इसलिए कि उसकी तवक़्क़ो[3] पहले ही से थी। दफ़्तर से बाहर निकल कर यह चलने ही को थे कि रज़ाहुसैन इनके स्कूल का एक तालिबइल्म जिसने चौथे दरजे तक पढ़ के छोड़ दिया था, उससे मुलाक़ात हो गई।

आबिदहुसैन—तुम यहाँ कहाँ ?

रज़ाहुसैन—जी मैं तो यहाँ नौकर हूँ।

आबिदहुसैन—काहे में नौकर हो ?

रज़ाहुसैन—ट्रेसरों में

आबिदहुसैन—भई ट्रेसर किसे कहते हैं ?

रज़ाहुसैन—नक़्शों का अक्स उतारता हूँ।

आबिदहुसैन—क्योंकर ?

रज़ाहुसैन—ऐ लीजिए। आप को आज तक यही नहीं मालूम। चलिये दिखा दूँ।

रज़ाहुसैन इनको अपने दफ़्तर में ले गया। यहाँ इन्होंने देखा कई ऊँची ऊँची मेज़ें लगी हैं। उन पर नक़्शे बिछे हुए हैं। उन पर एक क़िस्म का बारीक मोमजामा (जिसे यह पहले काग़ज़ समझे थे) बिछाकर पीतल की कीलों से जड़ दिया है जिससे नीचे जो कुछ बना हुआ है ऊपर साफ़ नज़र आता है। औज़ारों के बक्स खुले हुए रखे हैं। कुछ लोग खड़े और कुछ ऊँची तिपाइयों पर बैठे ख़त पर ख़त खींच रहे हैं और हरफ़ पर हरफ़ लिख रहे हैं। कोई रंग की प्यालियाँ आगे रखे रंग दे रहा है। इन्होंने यहाँ की हर चीज़ को बड़े ग़ौर से देखा और जो बात समझ में न आई उसको उन लोगों ने बड़ी मेहरबानी से बताया। इतने में चपरासी ने कहा—साहब आते हैं। उन्होंने इरादा किया कि दफ़्तर से बाहर चला जाऊँ। उन लोगों ने कहा कि जी नहीं, साहब कुछ नहीं कहेंगे। आप ठहर जायँ। एक तिपाई पास रखी थी उस पर इन्हें बिठा दिया। साहब दफ़्तर में आया। सब लोगों का काम देखा। यह एक अजनबी आदमी थे। इनसे दरयाफ़्त किया—आप कौन ? यह घबरा से गए। रज़ाहुसैन ने जवाब दिया—मेरे पास

---

१ औज़ार २ बन्द ३ उम्मीद।

आते हैं। साहब ने पूछा—ट्रेसर का काम जानता है? रज़ाहुसैन ने झूटमूट कह दिया अजी अभी सीखते हैं। साहब तो दफ़्तर से चले गए।

आबिदहुसैन—तुमने खूब कही कि सीखते हैं।

रज़ाहुसैन—फिर और क्या कहता?

आबिदहुसैन—अच्छा तो अगर मैं सचमुच सीखूं तो सिखा दोगे?

रज़ाहुसैन—मैं तो क्या, मगर उस्ताद नबीबख़्श से कहो। उस्ताद नबीबख़्श नक़्शानवीस रुड़की कालेज के सनदयाफ़्ता पास बैठे काम कर रहे थे। उन्होंने मज़ाक़ से कहा—मगर हज़रत मिठाई देना होगी।

आबिदहुसैन—मिठाई हाज़िर है मगर यह तो बताइये कितने दिनों में काम आ जायगा?

नबीबख़्श—यह भी उसी वक़्त बता दिया जायगा जब मिठाई दीजियेगा।

आबिदहुसैन—वाक़ई मज़ाक़ नहीं। मेरा इरादा इस काम के सीखने का है। अगर आप मेहरबानी करें तो मैं ममनून हूँगा।

नबीबख़्श—मैं भी मज़ाक़ से नहीं कहता। अक्सकशी तो कोई चीज़ नहीं। अगर आप सीखने का क़स्द करें तो नक़्शाकशी सिखा दी जायगी। और आप तो अंगरेजी पढ़े हैं। आपको बहुत अच्छी जगह मिल जायगी।

आबिदहुसैन—अच्छा तो मैं कल से हाज़िर हूँगा। मिठाई लेता आऊँगा।

रज़ाहुसैन—यह कल क्यों? क्या मिठाई के लिए दाम नहीं हैं? आबिदहुसैन कुछ चुप से हो गए।

रज़ाहुसैन—(एक रुपया जेब से निकाल के एक चपरासी से) अमाँ नौरोज़अली एक रुपये की मिठाई तो ले आओ। उस्ताद भी क्या कहेंगे कि मुँह मीठा नहीं किया। नौरोज़अली रुपया ले के गया और चन्द ही मिनट के बाद मिठाई की टोकरी ले के आ गया। जितने अक्सकश चपरासी वग़ैरः वहाँ मौजूद थे, सब में दो चार डलियाँ तक़सीम हो गईं। आबिदहुसैन नबीबख़्श नक़्शानवीस के शागिर्द हुए।

नबीबख़्श—सुनिये मिर्ज़ा साहब! अक्सकशों की आजकल है ज़रूरत। साहब आप को देख ही चुके हैं। आज के आठवें दिन आप बीस रुपया महीने के नौकर हो जायँगे। अक्सकशी कोई चीज़ नहीं है। रही नक़्शानवीसी। उसके लिए एक उम्र चाहिये। जितनी मुझे मालूम है उसके बताने में दरेग़ न करूँगा। बाक़ी अगर आप को शौक़ होगा तो अपने आप सीखते रहियेगा।

आबिदहुसैन आठवें दिन नौकर हो जाने की खुशख़बरी सुन के क़रीब था कि

शादीमर्ग[1] हो जाते। मगर वह रुपया जो रज़ाहुसैन ने उनकी तरफ़ से दे दिया था उसकी अदायगी की फ़िकर ने किसी क़द्र उनकी मसर्रत को बेलुत्फ़ कर रखा था। इतने में एक टुकड़ा ट्रेसिंग क्लाथ का उठा के नबीबख़्श ने इनके सामने रखा। और एक जदवल[2] क़लम में स्याही भर के बता दिया कि ऐ लीजिये इस तरह से ख़त खींचिये। इन्होंने खतकशी शुरू की। घंटे डेढ़ घंटे के अरसे में मोटे महीन खत उनके हाथ से निकलने लगे। इस असना में नबीबख़्श ने इनकी अंगरेज़ी तहरीर देखी। इनका अंगरेज़ी खत बहुत पाकीज़: था। मुन्शी नबीबख़्श ने छापे के हुरूफ़ लिखने का तरीक़ा बता दिया और एक बारीक क़लम और थोड़ा रद्दी ट्रेसिंग क्लाथ दिया कि इस पर इन हुरूफ़ों के लिखने की मश्क़ कीजिये। चार बजे तक इन्होंने बड़ी मिहनत से काम किया। जब दफ़्तर बरखास्त हुआ और लोग अपने अपने घरों को चले यह भी उनके साथ हो लिये।

आज इनको मालूम होता था कि गोया मैं नौकर हो गया। रज़ाहुसैन शाहगंज की तरफ़ के रहने वाले थे। उनका साथ बहुत दूर तक हुआ। रास्ते में बातें होती थीं। पाँच बजते बजते यह घर पहुँचे।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन को अपनी ज़िन्दगी में जिस क़द्र कामयाबियाँ हुईं (जिसका हाल इस किताब के मुलाहिज़े से मालूम होगा) उसमें उनकी नेकबख़्त बीवी की सलाहीयत[3] का बड़ा दखल था। इन मियाँ बीवी के बाहमी मुहब्बत के उसूल में से एक यह बात थी कि एक दूसरे की नेकी पर पूरा भरोसा था। मियाँ के कामों पर बेहूदा नुक़्ताचीनी करना जो एक उम्द: सिफ़त हमारे मुल्क की औरतों में है इनकी बीवी में न थी। बीवी मियाँ की इज़्ज़त करती थीं और समझती थीं कि उनको घर का ख़याल और बच्चों की मुहब्बत उसी तरह है जिस तरह मुझे है। आबिदहुसैन में रात देर तक घर से ग़ाएब रहने की आदत न थी। अगर हुस्न इत्तफ़ाक़ से कहीं देर होती थी तो बीवी को किसी क़िस्म की बदगुमानी न होती थी। न यह कि अगर कहीं मियाँ को देर हो गई, अब घर में आए तो बीवी ने मानामत डाली। क़ियामत बरपा की। "नहीं तुम रण्डी के यहाँ गए थे।" मियाँ अगर वाक़ई ख़तावार हैं तो ख़ैर। अगर नाकरद: गुनाह[4] उस सरज़निश[5] के मुस्तवजिद[6] ठहरते हैं तो अब जज़-बज़ हो रहे हैं, क़समें खाते हैं, क़ुरान उठाते हैं, वहाँ समाअत ही नहीं।

मियाँ—बीवी! तुम्हारे सर की क़सम मस्जिद से नमाज़ पढ़ के मौलवी साहब क़िब्ला के पास गया था। शक्कियात नमाज़ में कुछ दरयाफ़्त करना था।

---

१ हर्षातिरेक से मृत २ ख़त खीचने का ख़ास क़लम ३ गुणों ४ गुनाह नहीं किया है ५ सज़ा ६ हक़दार।

बीवी—वह कौन सा मौलवी उजड्डा है जो तुम्हें नौ नौ बजे तक बिठा रखता है। यह नहीं कहते अपनी चहेती के यहाँ गए थे। ख़ुदा ग़ारत करे मोटी को। हैज़ा खाए। ढाई घड़ी की मौत आए। जोर से एक दो हत्तड़ ज़मीन पर मारा। देख लेना। हूँ असल नस्ल की सय्यदानी। मोटी को अठवारा न गुज़रेगा। कोस कोस के खा जाऊँगी।

मियाँ—यह किस को ?

बीवी—यह उसको जो तुम्हें आधी आधी रात तक बिठा रखे।

मुफ़लिसी के ज़माने में बीवी के ज़ेवर और असबाब को बेंच बेंच कर, वह जो अपने बाप के घर से लाई थीं, बहुत दिनों तक काम चलता रहा। यहाँ तक कि एक चाँदी का तार और ताँबे का कटोरा तक बाक़ी न रहा। अब तक बहुत दिनों से बीवी की मिहनत के ज़रिये से घर का काम चलता था जिसका हाल नाज़रीन[1] को मालूम हो चुका है मगर उसका ताना कभी मियाँ को नहीं दिया। आज जब सरेशाम आबिदहुसैन खुश खुश दफ़्तर से फिरे हैं तो उनको ख़याल था कि बीवी से कुल हाल बयान कर दूँगा। फिर यह ख़याल आया कि अब एक ही दफ़ा बा मुराद कहेंगे जिस दिन नौकर हो जायँगे।

रात को उन्होंने नक़्शा बनाने की स्याही एक छोटी सी प्याली में घोली और दस ग्यारह बजे तक प्रिण्ट (नक़्शे के हुरूफ़) की मश्क़ करते रहे।

दूसरे दिन सुबह को उठे। बल्देव मिस्त्री के कारख़ाने गए। नौ बजे वहाँ से फ़राग़त हो करके उधर ही उधर रेल के दफ़्तर पहुँचे। अभी कोई आया भी न था। यह दफ़्तर के बाहर टहला किए। जब सब आगए तो यह भी गए। अक्सकशी की मश्क़ करने लगे। आज साहब ने फिर इन्हें देखा मगर पूछा नहीं। खुलासा यह कि पाँच ही चार दिन के बाद यह अच्छी तरह ट्रेस करना सीख गए। दफ़्तर में ट्रेसरों की ज़रूरत पहले ही से थी। नबीबख़्श ने साहब से कहके इनका नाम भी लिखवा दिया। बीस रुपये महीने के नौकर हो गए। माधो का पढ़ाना भी इन्होंने तर्क नहीं किया, अगरचे बहुत सख्त मिहनत पड़ती थी। अक्सर एक ही वक़्त खाना मिलता था मगर दुनिया बाउम्मीद क़ायम। पचीस रुपये का सहारा हो गया था। अब इन्हें किसी बात का ग़म न था। बीवी भी मुतमइन हो गई थीं मगर उन्होंने अपना काम नहीं छोड़ा। आठवें दसवें उनकी टोपी भी तैयार हो जाती थी। और मियाँ हुसैनअली बेच लाया करते थे। बहुत दिनों तक मियाँ हुसैनअली ने एक हब्बा हक़-अस्सअि[2] में नहीं लिया

---

१ पाठकों २ मिहनताना।

मगर अब एक आना रुपया उनका भी मुक़र्रर हो गया। इस तरह तीस उन्तीस रुपये मियाँ-बीवी मिल के पैदा कर लेते थे।

अगर कोई शख़्स पस्त हिम्मत होता तो वह आइन्दा और कुछ तरक़्क़ी न करता। लेकिन हमारे दोस्त मिर्ज़ा आबिदहुसैन में न वह वस्फ़ था जिसे तवक्कुल[1] कहते हैं। अगर ऐसा होता तो बीवी की चिकनदोज़ी के सहारे पर चारपाई के बान तोड़ा करते। और न वह सिफ़त थी कि जो क़नाअत[2] के नाम से मशहूर है। वरना बल्देव की पाँच रुपये की नौकरी काफ़ी थी। हयात चन्दरोज़: ख़ुश व नाख़ुश गुज़र ही जाती। मगर ज़्याद:तलबी ने इनको चैन न लेने दिया। दोपहर को घड़ी भर सो रहने की भी मुहलत न हुई। रेल के दफ़्तर में पहुँच गए। ख़ैर यहाँ बीस रुपये की नौकरी मिल गई मगर इनकी तक़दीर में अब भी आराम न था। अक्सकशी से नक़्शाकशी सीखने का शौक़ हुआ। इनके उस्ताद नबीबख़्श साहब रुड़की कालेज के पासशुदा तालिब-इल्म थे। उन्होंने यह सलाह दी कि अगर यह काम उसूल से सीखना है तो पहले तहरीर अक़लीदस का छटा मक़ाला[3] याद कर लीजिये। अब रात को यह छठा मक़ाला याद करने लगे। पहले तो उन्हें यह ख़याल था कि कहीं जा के पढ़ना होगा। मगर ग़ौर से जो मुताल: किया आप ही आप समझ में आने लगा। ग़रज़ कि पूरा छठा मक़ाला मय पाँचवें मक़ाले उन ज़रूरी शक्लों के जिसकी छठे मक़ाले में ज़रूरत है, चन्द ही रोज़ में याद कर लिया। अब मुंशी नबीबख़्श ने इनको नक़्शाकशी के उसूल हिन्दसे सिखाना शुरू किया। दफ़्तर में काम से फ़ुरसत न मिलती थी। शाम से यह मुंशी नबीबख़्श के मकान पर पहुँचते थे। मुंशी नबीबख़्श भी अपनी धुन के पक्के थे। उनको अंगरेज़ी पढ़ने का शौक़ था। ख़ुलासा यह कि यह उन्हें अंगरेज़ी पढ़ाते थे और वह इन्हें नक़्शा सिखाते थे। नक़्शाकशी के साथ ही तख़मीना इमारत के सीखने का शौक़ हुआ। इसके लिए अक़लीदस का ग्यारहवाँ बारहवाँ मक़ाला और इल्म मसाहत मुजस्समात भी हासिल किया। छः सात महीने में यह पूरे नक़्शानवीस और एस्टीमेटर हो गए। उसी ज़माने में मुंशी नबीबख़्श को एक महीने की रुख़सत की ज़रूरत हुई। साहब ने एवज़ी तलब की। मुंशी नबीबख़्श ने उन्हें पेश कर दिया। साहब ने मन्ज़ूर कर लिया। इस ज़माने में उन्हें अपनी कारगुज़ारी दिखाने का बहुत उम्द: मौक़ा मिला। साहब इनके काम से बहुत ख़ुश हुआ मगर अभी एक बात की इनमें कसर थी। पैमायश का काम यह बिलकुल न जानते थे। नहीं तो उसी ज़माने में इनको बहुत उम्द: नौकरी मिल गई होती। अब इन्होंने पैमायश के सीखने का तहय्या[4] कर लिया।

---

१ राम-आसरे याने निकम्मापन २ भाग्य पर सब्र ३ ज्यामिति का छठा साध्य ४ इरादा।

मुंशी नबीबख़्श के आने के बाद उन्हें फिर ट्रेसरी के काम पर जाना पड़ा। दो महीने के बाद अब इस काम की ज़रूरत दफ़्तर में न रही थी। सब ट्रेसर एकदम से तख़फ़ीफ़[1] में आगए। यह भी मौक़ूफ़ हो गए। मगर महीने भर मुंशी नबीबख़्श की एवज़ी करने की वजह से साहब ने इनको बहुत उम्दः सार्टिफ़िकेट दिया। अब नौ बजे से इनको फ़ुरसत हो जाती थी। इस ज़माने में इन्होंने सर्वेइंग का काम सीखा। मुंशी नबीबख़्श के एक दोस्त मुंशी अल्लाबख़्श सदर में सब ओवरसियर होकर आए थे। उनको अक्सर पैमायश का काम रहता। यह उनके पास जाने लगे। उन्होंने प्रेज्मेटिक लेविल की पैमायश इन्हें अच्छी तरह सिखा दी।

एक दिन का वाक़ियः सुनिये। इनके मुहल्ले में एक साहब मीर काज़िमअली नामी रहते थे। वह पंजाब यूनीवर्सिटी में मौलवी-आलिम का इम्तहान देने वाले थे। इनके पास यूनीवर्सिटी का कलेन्डर ले के आए और ज़वाबित[2] इम्तहान के क़वाइद इनसे पढ़वा के तर्जुमे करवाए। जाते वक़्त भूले से कलेन्डर छोड़ के चले गए। यह उनके जाने के बाद उलट पलट के देखने लगे। ख़ुशनसीबी से इनकी नज़र उस जुज़्वे-किताब पर जा पड़ी जिसमें सीग़ः इंजीनियरिंग के इम्तहानों का ज़िक्र था। यह उसे बड़े शौक़ से पढ़ने लगे। थोड़ा सा ही पढ़ा था कि मारे ख़ुशी के उछल पड़े। उस ज़माने में इनके एक दिली दोस्त सय्यद जाफ़रहुसैन साहब रुड़की कालेज के एक पासशुदा लायक़ तालिबइल्म मुलाज़िम महकमा नहर रुख़सत पर आए हुए थे। मिर्ज़ा आबिदहुसैन ने फ़ौरन कपड़े पहने। कलन्डर लिए हुए शाहगंज उनके पास पहुँचे। सय्यद साहब को आवाज़ दी, वह घर से निकले।

सय्यद साहब—ख़ैरियत तो है ?

मिर्ज़ा साहब—ख़ैरियत है। ज़रा इसे देखियेगा। मेरे तो हवास ठीक नहीं।

सय्यद साहब—(कलेन्डर को बड़े ग़ौर से पढ़ने लगे। अब उनके चेहरे से आसार मुसर्रत[3] के ज़ाहिर हुए) वाक़ई आप इम्तहान दे सकते हैं।

मिर्ज़ा साहब—ज़रा देखिए सिन की तो क़ैद नहीं है।

सय्यद साहब—नहीं सिन की तो क़ैद नहीं है।

मिर्ज़ा साहब—अच्छा तो अब देखिए मुझको किस-किस चीज़ में ज़्यादः मिहनत करना होगी।

सय्यद साहब—रियाज़ी तहरीर उक़्लेदस, मसाहत, यह सब आप जानते हैं। अंगरेज़ी की सिर्फ़ इंजीनियरिंग की इस्तिलाहात की दो किताबें जो रुड़की कालेज में छपी हैं उन्हें देख लीजिये। सर्वेइंग, ड्राइंग मेरे नज़दीक जितना आपने सीखा है काफ़ी है।

---

१ छटनी २ नियमावली ३ ख़ुशी।

सिर्फ़ एक चीज़ से आप बिलकुल नाबलद[१] हैं। इंजीनियरिंग; उसकी किताबें मेरे पास मौजूद हैं, उन्हें पढ़िये और जहाँ समझ में न आए मैं अच्छी तरह समझा दूँगा।

मिर्ज़ा साहब—इम्तहान कब होगा ?

सय्यद साहब—( कलेण्डर देखके ) मई में। अभी दिन बहुत हैं। यह अगस्त का महीना है। नौ महीने आप के लिए काफ़ी हैं। बिस्मिल्लाह करके मिहनत शुरू कर दीजिये। मगर सुनिये तो, आपने इंट्रेंस कहाँ का पास किया था ?

मिर्ज़ा साहब—( एक ज़रा मुशव्विश[२] होकर ) कलकत्ते का।

सय्यद साहब—( फिर कलेण्डर देख के ) सिंडीकेट की ख़ास इजाज़त और मिहरबानी से हर यूनिवर्सिटी का पास शुदा लिया जाता है।

मिर्ज़ा साहब ( ख़ुश होके ) तो अब सिंडीकेट की इजाज़त क्योंकर हासिल हो ?

सय्यद साहब—मैं समझता हूँ यह एक मामूली बात है। अच्छा बेहतर है। रजिस्ट्रार को एक दरख़्वास्त दे दीजिये।

उसी वक़्त दरख़्वास्त का मसविदा लिखा गया। सय्यद जाफ़रहुसैन ने इंजीनियरिंग की किताबें लाके हवाले कीं। मिर्ज़ा आबिदहुसैन साहब घर आए। फ़ौरन दरख़्वास्त का मसविदा साफ़ किया। लिफ़ाफ़े में बन्द करके डाक में छोड़ आए। इसके बाद इहतियातन कलेण्डर की वह तमाम इबारत नक़ल करके रख ली जो सीग़ः इंजीनियरिंग से मुतअल्लिक़ थी। और उसी दिन से इंजीनियरिंग का मुतालअः[३] शुरू किया।

इंजीनियरिंग के पढ़ने में उनको एक तो सय्यद जाफ़रहुसैन से दूसरे बल्देव के कारख़ाने से बहुत मदद मिली। सामान इमारत और फ़न तामीर से तो सय्यद साहब ने इनको अक्सर इमारतों में ले जाके ख़ूब वाक़िफ़ कराया। फ़न नज्जारी[४] और आहंगरी[५] के मुतअल्लिक़ जो बातें कीं वह कारख़ाने में आँख से देखीं।

हम इनकी सवानेउमरी[६] में सिर्फ़ इतना लिखना भूल गए हैं कि बल्देव के कारख़ाने से जो इनको ख़ास दिलचस्पी थी उसकी वजह यह थी कि इन्होंने जाने के थोड़े ही दिनों बाद लोहे का काम सीखना शुरू कर दिया था। इसकी इब्तिदा[७] यों हुई कि एक दिन इनकी बीवी के पानदान के सरौते की कील टूट गई। दूसरे दिन जो यह माधो को पढ़ाने गए, हुलास लुहार को सरौता दिया कि इसमें ज़रा कील डाल देना। उसने लेके रख लिया। जब पढ़ाके चलने लगे तो उसके पास गए। वह किसी काम में लगा हुआ था, भूल गया। इनको घर जाने की जल्दी थी। एक कील वहाँ पड़ी हुई थी उसे उठाके अपने हाथ से कील डालना चाहा। कील डालके हतौड़े से सर को चपटा करने लगे। हतौड़ी उंगली पर पड़ गई। उंगली पिच्ची हो गई। हुलास ने जो यह देखा, हँसने

१ अनभिज्ञ २ चिन्तित ३ अध्ययन ४ बढ़ईगीरी ५ लुहारी ६ जीवनी ७ आरंभ।

लगा। इनके हाथ से सरौता लेके कील डाल दी। एक तो इनके चोट लगी, दूसरे काम न हो सका, तीसरे खिफ़्फ़त हुई[१]। खुद फ़रमाते थे कि हुलास का यह कहना "मियाँ साहब यह पढ़ना न हो, लोहे का काम है, आप लोगों से नहीं हो सकता।" उस वक़्त मेरे दिल पर असर कर गया। मैंने इरादा कर लिया था, खुदा चाहे तो इस काम को सीखके छोड़ूँगा। दो तीन दिन मैं चुपका हो रहा। फिर उसी हुलास के पास बैठना शुरू किया। पहले तो वह कुछ दिन हँसके टाल दिया करता था मगर जब उसने देखा कि यह पीछा नहीं छोड़ते तो आखिर बताने लगा। चन्द ही रोज़ बाद मैंने अपने घर पर भट्ठी बनाई। एक धौंकनी मोल ली। नखास से बहुत से औज़ार खरीदे। रेल के दफ़्तर से मैं चला आता था एक अंगरेज़ के बंगले पर नीलाम हो रहा था। बहुत से आदमी जमा थे। मैंने उसी दिन तनख्वाह पाई थी। मैं भी चला गया। यहाँ से एक बक्स काट-कबाड़ का खरीद लिया। उसमें बहुत सी ज़रूरी चीज़ें थीं, बढ़ई के औज़ार पूरे थे। कुछ लुहारी के औज़ार थे। एक फ़ीता ताम्बे का था। यह बक्स सवा दो रुपये का मेरे नाम पर छूट गया। फिर एक सीने की कल पर बोली हुई। यह तीन रुपये की मिल गई। एक बरफ़ बनाने की कल थी। उसका एक पुर्ज़ा टूटा हुआ था। डेढ़ रुपये की वह ले ली। घर पर लाके बरफ़ बनाने की कल मैंने खोल डाली। टूटे पहिये को निकाल के वैसा ही एक पुर्ज़ा ढालने का सामान किया। ढालने का मसाला तैयार किया। पकी ईंटों की सुर्खी चलनी के टुकड़े—यह सब चीज़ें मुनासिब मिक़दार से लेके कूट-पीट कर बारीक सफ़ूफ़ बना लिया। उसमें थोड़ा तारपीन का तेल मिला लिया। फिर एक साँचा लोहे का अपने हाथ से बना लिया। फिर उसी टूटे पुर्ज़े में जो दन्दाना टूट गया था, वैसा मिट्टी का बनाके सुखा लिया। मसाले को साँचे में डाल के दाग़ बना लिया और थोड़ा पीतल गला के वैसा ही पुर्ज़ा ढाल लिया। फिर सोहन से साफ़ करके कल में जड़ दिया। वह कल अच्छी खासी चलने लगी। फिर पुर्ज़ों को खोल के सियाहताब[२] किया। बाल्टी का वारनिश उड़ गया था। उसे दुरुस्त किया। ग़रज़ कि कल बिल्कुल नई होगई। मियाँ हुसैनअली के हवाले की। उन्होंने नखास में दिखाई। दस रुपये की फ़रोख्त हुई। फिर सीने की कल के जो पुर्ज़े टूटे हुए थे उन्हें भी अपने हाथ से दुरुस्त कर दिया। बीवी इस कल से बहुत खुश हुईं। मियाँ हुसैनअली की बीवी मुहल्ले भर से काम ले आती थीं। बीवी सिया करती थीं। इस काम में चिकन की टोपियों से ज़्यादः याफ़्त[३] थी।

---

**१ लाज आई २ वह रंग जो साफ़ किये हुए लोहे पर नींबू लगाकर आग में तपाने से हो जाता है ३ आमदनी।**

इसके बाद लकड़ी के काम पर मश्क़ करना शुरू की। चन्द ही रोज़ में घड़ौंचियाँ, तिपाइयाँ, इलमारियाँ, तख्त, बना-बना के बेंचना शुरू किए। रेल के दफ़्तर से जब नौकरी छूटी तो उससे रोटियाँ चलती रहीं। जो कुछ पसंदाज़[1] हुआ उसमें हाथ नहीं लगाया। खुदा ने इन कामों में ऐसी बरकत दी कि इंजीनियरी का इम्तहान पास करने से पहले ही दरगाह वाला मकान छुड़वा लिया। मगर वहाँ सकूनत नहीं इख्तियार की। जिस कुंजड़े के पास रेहन था उसी को किराए पर दे दिया। जिस मकान में अब सकूनत थी उसे मोल ले लिया। बरतन बासन ख़रीदे। बीवी के हाथ गले में कुछ ज़ेवर भी हो गया। बीवी के ज़ेवर में मिर्ज़ा आबिदहुसैन की कमाई का एक हब्बा भी सर्फ़ नहीं हुआ। वह सब उन्होंने सिलाई करके बनवाया था।

आबिदहुसैन जिस क़द्र मिहनत करने जाते थे उसी क़द्र मिहनत की आदत बढ़ती जाती थी और उससे जो कामयाबी होती थी उससे शौक़ ज़्यादः होता जाता था। उसी मिहनत का यह नतीजा था कि पंजाब यूनिवर्सिटी के इम्तहान इंजीनियरिंग में औवल दरजे की सनद अता हुई। अब क्या था गोया सरकारी मुलाज़िमत की दस्तोवज़ हाथ आ गई। दो ही तीन महीने के बाद नौकर हो गए। साठ रुपये तनख्वाह। पन्द्रह रुपये भत्ता। पचहत्तर रुपये माहवार की आमदनी हुई। मुहकमे तामीरात में नाजाएज़ आमदनी[2] की बहुत गुंजाइश है। मगर हम अपने नाज़रीन[3] को यक़ीन दिलाते हैं कि हमारे दोस्त ने कभी एक हब्बा सिवाए तनख्वाह के नहीं लिया। शायद आपको यह ख़याल होगा कि मिर्ज़ा साहब ने रेलवे के दफ़्तर में नौकर हो जाने के बाद बल्देव की नौकरी छोड़ दी होगी। नहीं छोड़ी, और फिर घर पर भी काम करते थे। बीवी अलाहिदः काम करती थी जिससे यह वहम हो सकता है कि उन मियाँ-बीवी को ज़रूरत से ज़्यादः रुपये पैदा करने की हवस थी। मगर इसके साथ ही नाजाएज़ तरीक़े से रुपये पैदा करना उनका शिआर[4] न था। उन्होंने जो कुछ पैदा किया वह अपने क़ूवत बाज़ू से पैदा किया। इससे उनको सरकारी मुलाज़िमत में रिश्वतख़ोर अहल-अमले[5] की वजह से बाज़ मौक़ों पर दुश्वारियाँ हुईं जिसका ज़िक्र आइन्दः किया जायगा। पहले हम उनके उन औसाफ़ का[6] शिम्मः[7] ज़िक्र करते हैं जिससे उनके अफ़सर इनकी क़द्रदानी करने लगे थे जो उनकी यौमन फ़यौमन[8] तरक़्क़ी का बाएस हुआ। एक मरतबा उनके अफ़सर आला एकज़ीक्यूटिव इंजीनियर साहब ने एक पुल की मिहराब के क़ालिब[9] का स्कीम बना के दिया और हुक्म दिया कि फ़ौरन बढ़ईख़ाने से एक ऐसा क़ालिब बनवा दो। परसों हम दौरे पर जाने वाले हैं। अपने साथ ले जायँगे। पूरे क़द का

---

१ बचत की पूंजी २ घूस, रिश्वत की आमदनी ३ पाठकगण ४ स्वभाव ५ कर्मचारियों ६ गुणों का ७ थोड़ा सा ८ दिन ब दिन ९ ढाँचा।

नक़्शा तैयार न था। इसलिए बढ़ई मिस्त्री की समझ में न आया। अब अगर नक़्शा तैयार किया जाता है तो देर होती है। आख़िर उन्होंने क़ालिब अपने हाथ से ख़ुद बनाना शुरू किया। आधा बना होगा कि साहब कारख़ाने में मुआयने को आए। देखा ओवरसियर साहब ख़ुद हाथ में बसूला लिए काम कर रहे हैं। बढ़ई मिस्तरी हाथ पर हाथ रखे बैठे हैं। साहब ने उसी हाल में उनको आके देखा, बहुत ही ख़ुश हुए। उस दिन से साहब को मालूम हुआ कि वह अपने हाथ से काम कर सकते हैं। इसी तरह लोहे का काम भी अपने हाथ से करते उनको देख लिया। जब साहब की तब्दीली हुई तो इनकी सर्विस बुक पर लिखा—"आबिदहुसैन अपना काम ख़ूब जानता है और लुहार के काम अपने हाथ से कर सकता है। हम इसकी तरक़्क़ी की सिफ़ारिश करते हैं।" उसकी सिफ़ारिश का यह नतीजा था कि अपनी मुलाज़िमत के दो ही साल के अन्दर सब-इंजीनियर हो गए।

एक मर्तब: इनको क़ौमी शुजाअत[1] दिखाने का भी मौक़ा मिला। बात यह हुई कि सरहद अफ़ग़ानिस्तान में कुछ दिनों के लिए इनकी तब्दीली हो गई थी। एक दिन इंजीनियर साहब के साथ यह एक पहाड़ के दर्रे में पैमायश को गए थे। वहाँ दफ़्अतन[2] छै सात पठानों ने आके घेर लिया। ख़लासी यह मामला देखकर रफ़ूचक्कर हो गए। यह और साहब अकेले रह गए। साहब ने कमर से रिवाल्वर निकाला। इत्तफ़ाक़ से गोली न चली, इसपर अफ़ग़ानी और दिलेर हो गए। इन्होंने सीन:सिपर होकर[3] साहब की जान बचाई और तलवार म्यान से खींच कर बड़ी मर्दानगी से मुक़ाबिला किया। इनके वालिद मरहूम अक्सर फ़नून सिपहगिरी[4] में मश्शाक़[5] थे। उन्होंने लड़कपन में कुछ इनको भी सिखा दिया था। वही उस दिन इनके काम आया और उस दिन इनको क़दीम फ़नून सिपहगिरी की क़द्र हुई।

इस वाक़िए से साहब के दिल में इनकी जगह हो गई। सब मातहतों से ज़्याद: इनको मानते थे। चुनांचे इनके सार्टिफ़िकेट में भी जो उन्होंने विलायत जाते वक़्त इनको बतौरेख़ुद[6] दिया था उसमें इस वाक़िए का इशारा है।

जिस ज़माने में मिर्ज़ा आबिदहुसैन नहर के मुहकमे में मुलाज़िम थे, एक रिश्वतख़ोर हेडक्लर्क से अदावत हो गई। वजह अदावत यह थी कि दुर्गा ठेकेदार, जिसके मार्फ़त राजबायों की पुलों की मरम्मत हो रही थी, दस रुपये सैकड़ा ओवरसियर साहब को देता था, जिसकी जगह पर मिर्ज़ा साहब तशरीफ़ ले गए थे। उसमें ओवरसियर और हेडक्लर्क में निस्फ़न-निस्फ़ी[7] का हिसाब हो जाया करता था। मिर्ज़ा साहब भला कब

---

१ वीरता २ अकस्मात ३ डटकर ४ युद्धकला ५ अभ्यस्त ६ निजी तौर पर ७ आधम आध।

इसको जाएज़ रखते हैं। उन्होंने माहवारी हिसाब पैमायश में एक इंच की कसर न रखी। ठेकेदार की नानी मर गई। उस सूरत में भला वह कुछ क्यों देता, मगर हेडक्लर्क साहब को सख़्त नुक़सान हुआ। पहले उन्होंने इशारतन व किनायतन[१] मिर्ज़ा साहब से कहा। यह ऐसी कब सुनते थे। फिर सराहतन[२] बज़रिये सेकेण्डक्लर्क से कहलवाया कि हमारे मुआमलात में दस्तन्दाज़ी न कीजिये। इसमें आप का भी भला है, हमारा भी। मिर्ज़ा साहब ने जवाब दिया कि किसी का नफ़ा क्यों न हो सरकार का तो नुक़सान है जो हमको बेशबहा दरमाहा देती है। मैं उसको गवारा नहीं कर सकता। मुझसे ऐसी उम्मीद न रखें और न दोबारः इस बारे में मुझसे गुफ़्तगू की जाय। यह साफ़ जवाब, हेडक्लर्क को बहुत ही शाक़ हुआ। वह साहब के कान इनकी तरफ़ से भरने लगा। कभी किसी काम के ताख़ीर होने[३] का इल्ज़ाम लगाया, कुछ हिसाब किताब में शकूक पैदा करके साहब के गोश गुज़ार किए। बाज़ ठेकेदारों से शिकायत करा दी कि मिर्ज़ा साहब काम नहीं देखते। साहब के बैरा और ख़ानसामाँ इनसे पहले ही ना-मुआफ़िक़[४] थे। उनसे वक़्तन फ़वक़्तन[५] कुछ कहलवाते रहे। पहले तो इन अमूर पर साहब को एतबार न आया, मगर कहाँ तक, कहने-सुनने से पहाड़ टल जाते हैं। आख़िर साहब को इनकी तरफ़ से सूए ज़न[६] पैदा हो गया और उसके आसार बाहमी ख़त व किताबत में ज़ाहिर होने लगे। मिर्ज़ा ऐसे बेवक़ूफ़ न थे, जो इस मामले को समझ न जाने। मगर बक़ौल शेख़—"आँ रा कि हिसाब पाक अस्त अज़ मुहासिबः चिः बाक"[७]

एक मरतबा पाँच मील का लेविल साहब ने किया था। उसकी जाँच के वास्ते मिर्ज़ा साहब को भेजा। मिर्ज़ा साहब ने पैमायश की। काम की उजलत थी। इस लिए रिड्यूस्ड लेविल निकालने के लिए फ़ील्ड बुक दफ़्तर में दे दी। यहाँ हेडक्लर्क साहब ने फ़ील्ड बुक ग़लत कर दी। जब रिड्यूस्ड लेविल निकाल के साहब की फ़ील्ड बुक से मिलान हुआ, दस फ़ीट की ग़लती होगई। यह वह पैमायश है जिसमें फ़ी मील $\frac{1}{100}$ इंच की ग़लती माफ़ है। यहाँ दस फ़ीट की ग़लती पाँच मील में। साहब निहायत ही बरहम[८] हुए। उधर मिर्ज़ा साहब अपनी जगह पर नादिम[९] कि ग़लती और इस क़द्र ग़लती। या अल्लाह यह क्या माजरा है। हालाँकि मिर्ज़ा साहब ने बड़ी होशियारी से पैमायश की थी हर एक गज़ को दो-दो मरतबा पढ़ा था। बहुत ही मुतरद्दिद[१०] थे। बैठे फ़ील्ड बुक के हर एक ख़ाने को जाँच रहे थे। अक्सर मौक़ों के गज़ इनको याद थे। फ़ील्ड बुक में इसके ख़िलाफ़ लिखा हुआ था। अब उनको कुछ

---

**१ बंद-बंद, संकेत से २ स्पष्ट ३ देर होने ४ विपरीत ५ समय समय पर ६ बुरा गुमान, कुधारणा ७ "जिसका हिसाब पाक है उसको जाँच का क्या डर!" ८ नाराज़ ९ लज्जित १० चिंतित।**

शक पैदा हुआ। मैगनीफ़ायर ( शीशा ख़ुर्दबीन ) लगा के जो देखते हैं। मिटे हुये पेंसिली दाग़ साफ़ पढ़ लिए गए। वह उनकी याद के मुताबिक़ थे। मगर अक्सर जगह मेगनीफ़ायर से मिटे बड़े निशान न पढ़े गए। दूसरे दिन फिर मौक़े पर पैमायश करने गए। पहली मरतबा लेविल करते वक़्त एक काग़ज़ पर राइज़फ़ाल ( नशेब व फ़राज़[1] ) का हिसाब किया था। वह काग़ज़ इत्तफ़ाक़न एक जगह सड़क के किनारे पड़ा हुआ मिल गया। मिर्ज़ा साहब उसी वक़्त उस काग़ज़ को लिए घोड़ा दौड़ा के साहब के बंगले पर पहुँचे और हक़ीक़त हाल बयान की। साहब हेडक्लर्क पर बहुत मेहरबान थे। मिर्ज़ा के कहने से कुछ शक तो होगया मगर किसी क़िस्म का तदारुक[2] न किया। इससे बहुत ही बददिल हुए और उस दिन से दफ़्तर वालों से बहुत होशियार रहने लगे। दफ़्तर वालों का कोई क़ाबू न चला मगर इनकी वजह से उनका माली नुक़सान होता था। इसलिए यह फ़िक्र थी कि किसी तरह इनको निकलवाना चाहिये। आख़िर एक ठेकेदार से रिश्वतदही का इज़हार साहब के सामने दिलवा दिया। और इस सलीक़े से मुक़द्दमा बनाया कि साहब को यक़ीन आगया। साहब ने मिर्ज़ा को मुअत्तल किया और मुक़द्दमा फ़ौजदारी में भेज दिया। तहक़ीक़ात शुरू हो गई। इस्तग़ासे की तरफ़ के गवाह पूरे ठीक उतर गए। मिर्ज़ा के कौंसिल[3] ने बहुत ज़ोर दिया। जिरह के सवालात बहुत ही सख़्त किए मगर एक गवाह न टूटा। मिर्ज़ा पर चार्ज क़ाएम हो गया। अब डिफ़ेन्स[4] के गवाह गुज़रने लगे। मिर्ज़ा ने उज़्र किया कि जिस दिन और जिस वक़्त का यह वाक़िय: बयान किया गया है, मैं पचास मील के फ़ासले पर ख़ुद इंजीनियर साहब के साथ पैमायश कर रहा था। इंजीनियर साहब ख़ुद गवाही में तलब हुए थे मगर हेडक्लर्क साहब जालसाज़ी में कामिल थे। उन्होंने पहले ही इसका इन्तज़ाम कर लिया था। साहब के दौरे की किताब में तारीख़ बदल दीगई। अगरचे साहब को ख़ुद याद था मगर तहरीरी शहादत के मुक़ाबले में ज़बान क्या काम देती। मिर्ज़ा का उज़्र न चल सका। मिर्ज़ा पर जुर्म आएद होगया। जेलख़ाने जाने में कोई बात बाक़ी न थी। मिर्ज़ा के कौंसिल ने उज़्र मज़ीद[5] के लिए मुहलत माँगी। शेसन जज ने मंज़ूर की। अगरचे मिर्ज़ा के चाल चलन से एक ज़माना वाक़िफ़ था। ख़ुद अहले जूरी मिर्ज़ा की बेगुनाही के मुक़िर[6] थे। मगर शहादत तहरीरी और ज़बानी इस क़द्र इनके ख़िलाफ़ थी कि कुछ किसी के बनाए न बनती थी। कार्रवाई इस मुक़द्दमें की रोज़ाना अख़्बारों में छपती थी। अहले अख़्बार की राए भी मिर्ज़ा के मुवाफ़िक़ थी। 'अज़् कि तामे:'[7] सब को मिर्ज़ा

---

१ ऊँचाई-नीचाई २ रोक, उपाय ३ सलाहकार वकील ४ बचाव की तरफ़ ५ अतिरिक्त पेटिशन ६ मानने वाले ७ छोटे से बड़े तक।

की बेगुनाही पर अफ़सोस था। दर हक़ीक़त मिर्ज़ा पर यह बहुत ही सख़्त वक़्त था। ख़ास मिर्ज़ा के दिल पर जो कुछ गुज़र गया उसको सिवाए ख़ुदा के और कोई नहीं जानता। बीवी बच्चों में क़ियामत बरपा थी। मुक़द्दमें की आख़िरी पेशी में कोई चार दिन और बाक़ी थे। हेडक्लर्क और उनके मातहत अह्ले दफ़्तर जो रिश्वतख़ोरी में उनके कासःलेस[१] थे, बहुत ही ख़ुश थे। साहब को मिर्ज़ा के साथ कोई हमदर्दी न थी। एक तो यह इस सबब से कि हेडक्लर्क ने उनको मिर्ज़ा की तरफ़ से पहले ही बदज़न कर रखा था, दूसरे एक सबब यह भी था कि साहब बहादुर किसी क़द्र बदज़बान थे और मिर्ज़ा को उसकी बरदाश्त न थी। एक दिन दौरे पर मिर्ज़ा से और उनसे एक वाक़िये पर तकरार होचुकी थी। वाक़ियः यह था।

साहब बहादुर लेविल कर रहे थे। मिर्ज़ा पेसिंग ( क़दमों से पैमायश करना ) करके खूँटियों पर गज़ रखवाए जाते थे। ख़लासी जो गज़ लिए हुए था पैमायश के काम से वाक़िफ़ न था। उसने एक गज़ को बजाए खूँटी के ज़मीन पर पढ़वा दिया। साहब इस गज़ को पढ़के आगे बढ़े। मिर्ज़ा को जब इस ग़लती की इत्तिला हुई तो बख़याल इसके कि पैमायश ग़लत न होजाय साहब से कह दिया। अब साहब को दोबारः लेविल करके गज़ पढ़ना पड़ा। इस बात पर साहब बहुत झुंझलाए और बजाए इसके कि मिर्ज़ा से ख़ुश होते, सख़्त कलिमः कह बैठे। मिर्ज़ा को बहुत ही नागवार हुआ। मगर चूँकि इस बाब में थोड़ी सी ग़फ़लत मिर्ज़ा की भी थी इसलिए ख़ामोश हो रहे। इस पैमायश में थोड़ी दूर और आगे जाके साहब ने हुकुम दिया कि गाँव के सेहद्दे[२] पर गज़ रखवाओ। मिर्ज़ा इस इलाक़े में चन्द ही रोज़ से आए हुए थे और कभी उस तरफ़ दौरे का इत्तफ़ाक़ न हुआ था। इसलिए लोगों से सेहद्दः दरयाफ़्त करने लगे। इसमें देर लगी। अब शाम का वक़्त था। साहब को डेरे पर पहुँचने की बहुत जल्दी थी। चाहते थे पैमायश जल्द ख़त्म करें। इसलिए बहुत ही झुंझलाए हुए थे। छूटते ही मिर्ज़ा को उल्लू कह बैठे। उस वक़्त मिर्ज़ा से भी यह गुस्ताख़ी हुई कि उन्होंने साफ़ जवाब तुरकी ब तुरकी दिया। साहब इसके आदी न थे इसलिए सख़्त नागवार हुआ। क़रीब था कि नौबत ब दुश्त मुश्त[३] पहुँचती। मगर चपरासियों ने बीच बचाव कर दिया। सेहद्दः मिल गया था। पैमायश ख़त्म हुई। गाड़ी साहब की पहुँच गई थी। सवार हुए। अब बिल्कुल रात होगई थी। डेरा इस मुक़ाम से आठ मील के फ़ासिले पर था। मिर्ज़ा को मालूम न था कि साहब कहाँ तक पैमायश करते जायँगे। घोड़े का हुकुम न दिया था। साहब बहादुर ख़ुद गाड़ी में बैठकर रवाना हुए। मिर्ज़ा पा प्यादः हमराह हुए। साहब का गुस्सा अब फ़िरो होगया था। बातें होने लगीं। बड़ी

---

१ प्याला चाटने वाले २ तिराहे, गाँवों के डाँड़ (मिलने की जगह) ३ हाथापाई।

दूर तक मिर्ज़ा पा-प्यादः गाड़ी के साथ चले गए। साहब का अर्दली और चपरासी दोनो गाड़ी पर थे। आख़िर साहब गाड़ी तेज़ करके आगे बढ़ गए। मिर्ज़ा बेचारे कोई नौ बजे रात को सर्दी खाते हुए अपने डेरे पर पहुँचे। ग़रज़ कि साहब बहादुर से और मिर्ज़ा से नाचाक़ी होगई थी। अगरचे यह अम्र कुछ ऐसा न था लेकिन उसी जुर्म पर साहब ने भत्ता बन्द कर दिया था। मिर्ज़ा ने इसकी कोई शिकायत अफ़सर आला से न की। इस वाक़िए की ख़बर छिपी रहने वाली न थी। हेडक्लर्क साहब को हाशिया लगाने का खूब मौक़ा मिला। मिर्ज़ा ने बहुत चाहा कि अपनी कारगुज़ारियों से साहब को ख़ुश करें, मगर साहब के दिल में इनकी तरफ़ से गुंजाइश ही न थी। जो काम यह क़ाबिल तहसीन[1] करते थे साहब उसको इनका फ़र्ज़ मन्सबी[2] तसव्वुर करते थे। और अगर बमुक़्तज़ाए बशरीअत[3] किसी क़िस्मत की फ़िरोगुज़ाश्त[4] हो जाती थी तो साहब को उसकी याददाश्त की फ़िक्र हो जाती थी। मुक़द्दमा फ़ौजदारी में साहब से अगरचे क़ानूनी कार्रवाई में कोई अम्र खिलाफ़ सिद्क़[5] नहीं हुआ। इसमें साहब का क्या गुनाह था कि उनकी नोट बुक ग़लत करदी गई। जो लोग इन मुआमलात से वाक़िफ़ थे उनकी यह राए थी कि साहब को मिर्ज़ा के साथ कुछ रिआयत करनी थी। अगरचे साहब को मिस्ल हेडक्लर्क के इसकी ख़ुशी न थी कि मिर्ज़ा क़ैद हो जायँ, मगर मिर्ज़ा के क़ैद हो जाने पर साहब को कुछ अफ़सोस भी न था। अफ़सर और मातहत में ज़रूर है कि किसी क़द्र हमदर्दी हो। महज़ क़ानूनी तअल्लुक़ से काम नहीं चल सकता। यह हमदर्दी दो तरह से पैदा हो सकती है। एक तो जाएज़ तरीक़े से। वह यह कि मातहत कारगुज़ार[6] हो और अफ़सर क़द्र शिनास[7]। और दूसरे बतौर नाजायज। वह यह कि मातहत ख़ुशामदी हो और अफ़सर ख़ुशामदपसन्द। न साहब ख़ुशामदपसन्द थे न मिर्ज़ा ख़ुशामदी। मिर्ज़ा कारगुज़ार मातहत थे और साहब क़द्रशिनास मशहूर थे। मगर हेडक्लर्क साहब ने वाक़िआत पर ऐसा पर्दा डाल दिया था कि मिर्ज़ा को अपनी कारगुज़ारी दिखाने और साहब को क़द्रशिनासी करने का मौक़ा न दिया। मिर्ज़ा को इसकी भी परवाह न थी। इसलिए कि यह अक्खड़ आदमी थे। यह सिर्फ़ अपना कारे-मन्सबी[8] करके ख़ुश होते थे। कारे-मन्सबी का एवज़ अपनी तनख़्वाह को समझते थे। इसके लिए किसी क़िस्म के सिले[9] या सिताइश[10] को ज़ोफ़ तबिअत[11] ख़याल करते थे। इनकी सशमाही[12] कारगुज़ारी की रिपोर्टें इनके गुज़श्तः अफ़सरों ने सतरें के सतरें तारीफ़ में

---

१ तारीफ़　२ नियत कर्तव्य　३ मनुष्य होने के नाते　४ भूलचूक　५ सच से परे　६ कर्तव्यपरायण　७ गुणपारखी　८ सरकारी काम　९ बदला, प्रतिकार　१० तारीफ़　११ मन का दौर्बल्य　१२ छमाही।

लिखी थीं; सिवाए इस सशमाही[1] के जिसमें बुरा भला कुछ न लिखा गया था और इसके बाद भत्ता बन्द कर दिया गया था।

मुआमलात की यह सूरत थी। जब मुक़दमा क़ायम हुआ। अब सिर्फ़ चार दिन और बाक़ी हैं, हर शख्स जिसको इनसे तअल्लुक़ खातिर था, इसी अफ़सोस में था कि मिर्ज़ा मुफ़्त फँसे।

मिर्ज़ा बेचारे खामोश हैं कि शिकवा न शिकायत, तक़दीर पर शाकिर हैं। नाकामी उम्मीद भी है रहम के क़ाबिल, मायूस हैं एसे की दुआ भी नहीं करते।

मिर्ज़ा का बयान है कि मैंने इस बाब में खुदा से किसी क़िस्म की दुआ नहीं की। मेरा खयाल था कि मेरा अक़ीदः है कि खुदा मुझ पर मेरे माँ बाप से ज़्यादह मिहरबान है। वह दानाए राज़[2] और कारसाज है। इस हालत में जो मेरे हक़ में मुनासिब होगा वही किया जायगा। "मर्ज़ी मौला अज़ हमः औला"[3]। इस खयाल से दुआ कुछ ज़रूरी नहीं। रही यह बात कि दुआ से शान अबूदियत[4] ज़ाहिर होती है। इसके वास्ते दुआए क़ुनूत[5] और दीगर अदअियः[6] जो नमाज़ में दाखिल हैं काफ़ी हैं। हमारी राय इस अम्र में मिर्ज़ा के खिलाफ़ है। इसलिए कि सिवाए इज़हार अबूदियत[7] के एक क़िस्म का खुलूस[8] भी दुआ से पाया जाता है। खैर इस मौक़े पर इस मसले पर ज़्यादः बहस करना हमको मंज़ूर नहीं। मिर्ज़ा की सीरत[9] का बयान 'मिन् ओ अन्'[10] मतलूब[11] है।

मिर्ज़ा की क़िस्मत के फ़ैसले में तीन दिन बाक़ी हैं। शिवबिहारी ठेकेदार असल मुस्तग़ीस[12] और रामदीन एक और ठेकेदार दोनों शराबखाने में बैठे ठर्रा[13] उड़ा रहे हैं और यह बातें हो रही हैं—

रामदीन—कहो उस मुक़द्दमे में क्या हुआ?

शिवबिहारी—कौन मुक़द्दमा? मिर्ज़ा वाला।

रामदीन—वही मुक़द्दमा।

शिवबिहारी—मिर्ज़ा अब नहीं बचते। गए सात बरस को।

रामदीन—बड़े पुन[14] का काम किया तुमने।

शिवबिहारी—क्यों पुन का काम क्यों नहीं किया। ऐसे का जाना ही अच्छा है।

---

१ छमाही २ रहस्य का जानने वाला ३ ईश्वरेच्छा ही में हमारा भला है ४ भक्ति-महिमा ५ नमाज़ में संतोश के लिए एक विशेष दुआ पढ़ना ६ दुआएँ ७ भक्ति-अभिव्यक्ति ८ पवित्रता ९ स्वभाव १० अक्षरशः ११ अभीष्ठ १२ फ़ौज़दारी में दावा दाइर करने वाला १३ देशी शराब १४ पुण्य।

आप खाए न दूसरों को खाने दे। बाप क़सम ! भैया रामदीन, जब से यह मिर्ज़ा इस इलाक़े में आया, मेरा तो दस बारह हज़ार का नुक़सान होगया।

रामदीन—क्यों क्या तुम्हारा कोई बिल काट दिया ?

शिवबिहारी—बिल तो नहीं काट दिया। मगर बालू की सफ़ाई में हमको हज़ार डेढ़ हज़ार साल में मिल जाया करते थे। चार बरस से एक कौड़ी भी नहीं मिली।

रामदीन—क्यों क्या ठेका तोड़ दिया ?

शिवबिहारी—नहीं, ठेका तो नहीं तोड़ा। पैमायश में कोई गुंजाइश नहीं रखी। दो सौ पचीस सात आने वसूल हैं। कहो जब इस काम में दो सौ पचहत्तर साल में मिले तो हम क्या खायँगे ?

रामदीन—तो पैमायश में कम नापा होगा ?

शिवबिहारी—तुम तो समझते हो फिर नादान बनते हो। कौन कहता है कि (उन्होंने) कम नापा।

रामदीन—फिर उनकी क्या ख़ता। जितना काम तुमने किया था उसके दाम दिलवा दिए। एक हम कहेंगे कि मिर्ज़ा साहब पैमायश के बड़े सच्चे हैं। हमने तो एक बिल बनवाया था उसमें देख लिया। हमारा जितना काम था उससे एक इंच न घटाया न बढ़ाया। न हमारा नुक़सान किया न सरकार का। पूरे दाम दिलवा दिए। हेडक्लर्क साहब पाँच रुपये माँगते थे। मैंने अपना पूरा बिल आने पाई से वसूल कर लिया। कौड़ी नहीं दी। देता क्यों ? काम मैंने किया, मिहनत की, रुपया लगाया। फिर हेडक्लर्क कौन होते हैं जो रुपये लेते।

शिवबिहारी—कितने का बिल था ?

रामदीन—पाँच हज़ार छः सौ इकानबे रुपये तेरह आने सात पाई का।

शिवबिहारी—और ओवरसियर साहब को क्या दिया ?

रामदीन—मिर्ज़ा को ?

शिवबिहारी—हाँ और किसे।

रामदीन—इतनी तो मैं क़सम खा सकता हूँ कि मिर्ज़ा ने कभी एक पैसा घूस का नहीं खाया। तुमने उस ग़रीब को बेकार फँसाया है। देखना क्या भुगतान भुगतते हो। और फिर झूठी गंगा अदालत में उठाई। मिर्ज़ा देवता आदमी है। उसको सता के फल न पाओगे। इतना कहके रामदीन नशे की धुन में ज़ारोक़ितार रोने लगा।

शिवबिहारी—मिर्ज़ा तो अब जाते हैं। तुम रोया करो। जो हमारा नुक़सान करे उसके बाप को हम फँसायेंगे।

रामदीन—अबे जा, तूने धरम नास कर दिया। ऐसे गऊ आदमी को फँसाया।

# सुखमनी साहिब

## गउड़ी सुखमनी महला ५

### सलोकु

१ इक ओंकार सतिगुर प्रसादि

आदि गुरए नमह ।।
जुगादि गुरए नमह ।।
सतिगुरए नमह ।।
श्री गुरदेवए नमह ।। १ ।।

अव्वल गुरु को बन्दगी जुग गुरु को परनाम
सत गुरु को आदाब है श्री गुरुदेव सलाम

### असटपदी १

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ।।
कलि कलेस तन माहि मिटावउ ।।
सिमरउ जासु विसुंभर एकै ।।
नामु जपत अगनत अनेकै ।।
बेद पुरान सिंमृति सुधाख्यर ।।
कीने राम नाम इक आख्यर ।।
किनका एक जिसु जीअ बसावै ।।
ताकी महिमा गनी न आवै ।।
कांखी एकै दरस तुहारो ।।
नानक उन संगि मोहि उधारो ।। १ ।।
सुखमनी सुख अमृत प्रभ नामु ।।
भगत जना कै मनि बिस्राम ।। रहाउ ।।

रब[1] की याद किए जा बन्दे    याद किए सुख पाएगा
याद किए जा— तन मन के    सब झगड़े रोग मिटाएगा
रब वाहिद[2] को याद किए जा    सबका जो रखवाला है
जपते हैं अनगिनत उसे    अनगिनती नामों वाला है
'वेदों', 'पुराणों', 'स्मृतियों' को    पढ़कर खूब बिचारा है
सब का अन्त एक हर्फ़ मिला    जो नाम ख़ुदा को प्यारा है
पल भर भी जो अपने मन में    प्यारे रब का नाम बसाए
ऐसा रुतबा पाएगा वह    जिसकी शान कही ना जाए
जो तेरे दीदार के आशिक़    शौक है जिनको दर्शन का
दाता उनकी संगत में    नानक का बेड़ा पार लगा ।।१।।
सुख का अमरित सुखमनी    सुख अमरित रब नाम
भक्तों के मन पाएँगे    नाम लिए आराम ।।रहाउ।।

प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ।।
प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ।।
प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ।।
प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ।।
प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ।।
प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ।।
प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ।।
प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ।।
प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ।।
सरब निधान नानक हरि रंगि ।। २ ।।

रब की याद किए जा बन्दे    फिर न जनम का चक्कर[3] खाए
रब की याद किए जा बन्दे    मौत का सारा दुख मिट जाए
रब की याद किए जा बन्दे    मरने की हो उलझन दूर
रब की याद किए जा बन्दे    रद्द बलाएँ, दुश्मन दूर
रब की याद किए जा बन्दे    ग़ाएब हर दुश्वारी[4] हो
रब की याद किए जा बन्दे    रात और दिन बेदारी[5] हो

१ प्रभु २ एकमेव ईश्वर ३ आवागमन ४ कठिनाई ५ जाग्रति ।

रब की याद किए जा बन्दे खौफ़ न तुझ पर छाएगा
रब की याद किए जा बन्दे दुख सारा मिट जाएगा
रब की याद जभी हो नानक जब साधुओं का संग मिले
सच्चा हो जब प्रेम खुदा से फिर दौलत हर रंग मिले ॥२॥

प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउनिधि ॥
प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥
प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥
प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥
प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥
प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥
प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥
प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥
से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥
नानक ताकै लागउ पाए ॥ ३ ॥

रब की याद किए जा बन्दे माल कमाल[1] ख़ज़ाने पाए
रब की याद किए जा बन्दे दानिश[2]-ज्ञान और ध्यान भी आए
रब की याद किए जा बन्दे जप तप पूजा पाठ है यह
रब की याद किए जा बन्दे ख़ास 'दोई'[3] की काट है यह
रब की याद किए जा बन्दे तीरथ का स्नान है यह
रब की याद किए जा बन्दे रब के घर में मान है यह
रब की याद किए जा बन्दे शाकिर[4] तू हो जाएगा
रब की याद किए जा बन्दे जीने का फल पाएगा
रब की याद करेंगे वह तो फ़ैज़[5] जो रब से पाते हैं
'नानक' रब के प्यारों के हम क़दमों से लग जाते हैं ॥३॥

प्रभ का सिमरनि सभ ते ऊचा ॥
प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥

---

१ सिद्धि २ बुद्धि ३ द्वैत भाव (अपना-विराना) ४ ईश्वर-कृतज्ञ ५ लाभ।

प्रभ कै सिमरनि तृसना बुझै ।।
प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ।।
प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ।।
प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ।।
प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ।।
अंमृत नामु रिद माहि समाइ ।।
प्रभ जी बसहि साध की रसना ।।
नानक जन का दासनि दसना ।। ४ ।।

रब की याद किए जा बन्दे　कार है ऊँचा कार यही
रब की याद किए जा बन्दे　कर दे बेड़ा पार यही
रब की याद किए जा बन्दे　दूर हो मन की प्यास सभी
रब की याद किए जा बन्दे　सूझे दूर और पास सभी
रब की याद किए जा बन्दे　मौत का डर मिट जाएगा
रब की याद किए जा बन्दे　ख़ूब मुरादें[1] पाएगा
रब की याद किए जा बन्दे　मैल हो मन का दूर तमाम
रब का नाम है अमरित जिससे　सीना[2] हो भरपूर तमाम
जिन संतों की पाक ज़ुबाँ पर　नाम ख़ुदा का रहता है
अदना[3] चाकर उनके दर का　नानक ख़ुद को कहता है ।।४

प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ।।
प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ।।
प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ।।
प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ।।
प्रभ कउ सिमरहि से बे मुहताजे ।।
प्रभ कउ सिमरहि से सरब के राजे ।।
प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ।।
प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ।।
सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला ।।
नानक जन की मंगै रवाला ।। ५ ।।

---

१ अभिलाषाएँ　२ हृदय　३ साधारन ।

रब की याद करें जो बन्दे माल ख़ज़ानों वाले हैं
रब की याद करें जो बन्दे इज़्ज़त शानों वाले हैं
रब की याद करें जो बन्दे दुनिया में परवान[1] हैं वह
रब की याद करें जो बन्दे पत वाले परधान हैं वह
रब की याद करें जो बन्दे वह फिर कब मुहताज रहें
रब की याद करें जो बन्दे सब पर उनके राज रहें
रब की याद करें जो बन्दे सुख में दायम[2] रहते हैं
रब की याद करें जो बन्दे दायम क़ायम रहते हैं
वह करते हैं याद ख़ुदा की जिन पर उसकी रहमत है
ख़ाक उनके कदमों की माँगे नानक को यह निअ़मत है ।।५।।

प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ।।
प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ।।
प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ।।
प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ।।
प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ।।
प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ।।
प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ।।
प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ।।
संत कृपा ते अनदिनु जागि ।।
नानक सिमरनु पूरै भागि ।। ६ ।।

रब की याद करें जो बन्दे काम उनका ग़मख़्वारी[3] है
रब की याद करें जो बन्दे जान उनके बलिहारी है
रब की याद करें जो बन्दे रुख़[4] उनका पुरनूर[5] रहे
रब की याद करें जो बन्दे चैन से मन भरपूर रहे[6]
रब की याद करें जो बन्दे मन पर उनकी जीत रहे[7]
रब की याद करें जो बन्दे पाक उनकी हर रीत रहे
रब की याद करें जो बन्दे सुख पाएँ आनँद पाएँ[8]
रब की याद करें जो बन्दे वह रब से नज़दीकी पाएँ

१ भक्त २ हमेशा ३ सब पर सहानुभूति रखना ४ आकृति ५ प्रकाशमान
६ आत्मतृप्ति ७ संयम ८ प्रभु-सामीप्य ।

सन्तों की किरपा से उनमें रात और दिन बेदारी[1] है
खुशक़िस्मत हैं 'नानक' जिनको याद ख़ुदा की प्यारी है ॥६

प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥
प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥
प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी ॥
प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ॥
प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥
प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥
प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ॥
सुखु प्रभ सिमरनि का अंतु न पार ॥
सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइआ ॥
नानक तिन जन सरनी पइआ ॥ ७ ॥

रब की याद किए जा बन्दे पूरे हों सब काम तेरे
रब की याद किए जा बन्दे चिन्ता से आराम मिले
रब की याद किए जा बन्दे दाता के गुन गाए तू
रब की याद किए जा बन्दे रब में सहज समाए तू[2]
रब की याद किए जा बन्दे पक्का आसन पाएगा
रब की याद किए जा बन्दे दिल का कमल खिल जाएगा
रब की याद किए जा बन्दे ग़ैब[3] से तू झंकार सुने
रब की याद किए जा बन्दे तुझको सुख बेअन्त मिले
रब की याद करें वह बन्दे जिन पर रब की रहमत है
नानक माँगे उनका साया उनका साया निअ़मत है ॥७

हरि सिमरनि करि भगत प्रगटाए ॥
हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ॥
हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥
हरि सिमरनि नीच चहु कुंट जाते ॥
हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥
सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥

---

१ जागृति २ तल्लीन हो ३ अदृष्ट ।

हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥
हरि सिमरनि महि आपि निरंकारा ॥
करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ ॥
नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ ॥ ८ ॥

रब की याद किए से कुल सन्तों का नूर ज़हूर[1] हुआ
रब की याद किए से हाज़िर सब वेदों का नूर[2] हुआ
रब की याद किए से बन्दे दाता, सिद्ध, जती कहलाएँ
रब की याद किए से हरसू[3] नीच भी जग में शोहरत[4] पाएँ
रब की याद किए से धरती क़ायम दायम रहती है
याद कर उसकी जिसको दुनिया सबका कारन कहती है
नाम प्रभू का लेने को यह सारी मख़लूक़ात[5] हुई
याद में रब की हाज़िर नाज़िर[6] आप ख़ुदा की ज़ात[7] हुई
जिन पर लुत्फ़ ख़ुदा का नानक जिन पर उसकी रहमत है
गुरु से पाएँ नाम ख़ुदा का नाम ख़ुदा का निअ़मत है ॥८॥

## सलोकु

दीन दरद दुख भंजना
घटि घटि नाथ अनाथ ॥
सरणि तुमारी आइओ
नानक के प्रभ साथ ॥ १ ॥

तू आजिज़[8] मिस्कीन[9] का सब दुख दरद मिटाय
तू हर दिल में ख़ुद बसे सब में आप समाय
सब नाथों का नाथ तू तेरा कोई न नाथ
या रब तेरा आसरा दे नानक का साथ

---

१ प्रकट २ प्रकाश ३ हर तरफ़ ४ प्रसिद्धि ५ सृष्टि ६ प्रत्यक्ष ७ स्वयं ईश्वर रूप ८ असहाय ९ दीन ।

## असटपदी २

जह मात पिता सुत मीत न भाई मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई।
जह महा भइआन दूत जम दलै तह केवल नामु संगि तेरै चलै।
जह मुसकल होवै अति भारी हरि को नामु खिन माहि उधारी।
अनिक पुनहचरन करत नही तरै हरि को नामु कोटि पाप परहरै।
गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे नानक पावहु सूख घनेरे ।। १ ।।

जब मा बाप न बेटा भाई संगी यार न नाती हो
काम का उस दिन साथी हो तो नाम खुदा का साथी हो
मौत का जब खूँख़्वार फ़रिश्ता तेरे तन को दलता है
साथ तेरे फिर चलता है तो नाम खुदा का चलता है
भारी कोई मुश्किल आकर जब तुझको हैरान करे
पल में नाम खुदा का तेरी हर मुश्किल आसान करे
लाख करे तू मूरत पूजा कौन तुझे मंज़ूर करे[1]
पल में नाम खुदा का तेरे पाप करोड़ों दूर करे
ऐ दिल गुरु के मुँह से सुनकर नाम खुदा का लेता जा
नाम खुदा का लेकर 'नानक' राहत[2] दिल को देता जा ।।१।।

सगल सृसटि को राजा दुखीआ हरि का नामु जपत होइ सुखीआ।
लाख करोरी बंधुन परै हरि का नामु जपत निसतरै।
अनिक माइआ रंग तिख न बुझावे हरि का नामु जपत आघावै।
जिह मारगि इहु जात इकेला तह हरिनामु संगि होत सुहेला।
ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ।।२।।

दुनिया भर का राजा भी दुख पाता है दुख सहता है
नाम प्रभू का लेने वाला सुख के अन्दर रहता है
लाखों और करोड़ों बन्धन जकड़ें और फँसाएँगे
नाम प्रभू का लेने से वह सब के सब खुल जाएँगे
इस माया के रंगारंगी[3] ऐश[4] बुझाएँ प्यास कहाँ
नाम प्रभू का लेने से रहती है प्यास तरास[5] कहाँ

१ अपनाए २ शान्ति ३ रंग-बिरंगे, लुभावने ४ ( सांसारिक ) सुख के सामान ५ त्रास (दुःख)।

जिस रस्ते पर आख़िर को तू आप अकेला जाता है
नाम प्रभू का साथ चले जो मन तेरा बहलाता है
नाम प्रभू का ऐसा है तू उस पर ध्यान जमाए जा
सुनकर बात गुरू की 'नानक' आला मंज़िल[1] पाए जा ॥२॥

छूटत नही कोटि लख बाही नामु जपत तह पारि पराही ।
अनिक बिघन जह आइ संघारै हरि का नामु ततकाल उधारै ।
अनिक जोनि जनमै मरि जाम नामु जपत पावै बिस्राम ।
हउ मैला मलु कबहु न धोवै हरि का नामु कोटि पाप खोवै ।
ऐसा नामु जपहु मन रंगि नानक पाईऐ साध कै संगि ॥ ३ ॥

लाखों बाज़ू[2] होने पर भी कब तेरा छुटकारा है
नाम लिए जा नाम लिए जा उससे पार उतारा है
सौ सौ मुश्किल भारी भी गर तेरी राह में आएगी
याद खुदा की फ़ौरन तेरा बेड़ा पार लगाएगी
सौ सौ जोनी भोगे बन्दा जाता है फिर आता है
जपता है जब नाम खुदा का चैन - सकूँ[3] वो पाता है
मैल खुदी[4] का दूर हो क्योंकर मल-मलकर तन धोने से
पाप करोड़ों दूर हों तेरे याद खुदा की होने से
ऐसा नाम जपे जा ऐ दिल रब से प्रेम लगाए जा
संतों की संगत में 'नानक' नाम खुदा का पाए जा ॥३॥

जिह मारग के गने जाहि न कोसा हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ।
जिह पैडै महा अंध गुबारा हरि का नामु संगि उजीआरा ।
जहा पंथि तेरा को न सिञानू हरि का नामु तह नालि पछानू ।
जह महा भइआन तपति बहु घाम तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ।
जहा तृखा मन तुझु आकरखै तह नानक हरि हरि अंमृतु बरखै ॥४॥

रस्ता, दूर का रस्ता, जिस पर कोस नहीं और मील नहीं
रब का नाम हो तो शह उसमें जाती साथ एक खील नहीं
रस्ता, दूर का रस्ता, जिस पर धुन्ध - ग़ुबार - अँधेरा हो
हाथ में हो गर नाम की मशाल रौशन रस्ता तेरा हो

१ उत्तम गति २ हाथ, साधन-सहारा ३ सुख-शान्ति ४ अहंभाव ।

रस्ता, दूर का रस्ता, जिस पर कोई न तुझको जानेगा
जानेगा तो नाम प्रभू का जानेगा पहचानेगा
रस्ता, दूर का रस्ता, जिस पर तेज़ तपिश दुख देती है
छाँव प्रभू के नाम की तुझको साए में अपने लेती है
रस्ता, दूर का रस्ता, जिस पर 'नानक' प्यास सताती है
एक प्रभू के नाम की बदली वाँ अमृत बरसाती है ॥४॥

भगत जना की बरतनि नामु संत जना कै मनि बिस्रामु।
हरि का नामु दास की ओट हरि कै नामि उधरे जन कोटि।
हरि जसु करत संत दिनु राति हरि हरि अउखधु साध कमाति।
हरि जन कै हरिनामु निधानु पारब्रहमि जन कीनो दान।
मन तन रंगि रते रंग एकै नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥ ५ ॥

भक्त वही हैं नाम खुदा का जपने से है काम जिन्हें
सन्त वही हैं नाम खुदा का देता है आराम जिन्हें
रब के जितने दास हैं उनको रब का नाम सहारा है
नाम ने लाखों बन्दों को दुनिया में पार उतारा है
रात हो दिन हो सन्त हमेशा दाता के गुण गाते हैं
नाम की दारू[1] देकर साधू सारे रोग गँवाते हैं
रब वालों को नाम ही रब का दौलत है गंजीना[2] है
पाक खुदा ने उनको बख़्शा अपना ख़ास ख़ज़ीना[2] है
जिसके तन मन वहदत[3] का एक रंग में रंगे जाते हैं
वह रूहानी-इल्म[4] की नानक' हक़[5] से निअ़मत पाते हैं ॥५॥

हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति हरि कै नामि जन कउ तृपति भुगति।
हरि का नामु जन का रूप रंगु हरि नामु जपत कब परै न भंगु।
हरि का नामु जन की बडिआई हरि कै नामि जन सोभा पाई।
हरि का नामु जन कउ भोगु जोगु हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु।
जनु राता हरिनाम की सेवा नानक पूजै हरि हरि देवा ॥ ६ ॥

---

१ भगवन्नाम रूपी मदिरा २ ख़ज़ानः ३ एकमेव ईश्वरत्व ४ आत्मज्ञान
५ सत्य ( सत्यस्वरूप ईश्वर से )।

नाम प्रभू का बन्दों को मुक्ती की राह दिखाता है
नाम प्रभू का लेने ही से सब्र-सकूँ[1] मिल जाता है
रब वालों का नाम से बेहतर रूप नहीं और रंग नहीं
नाम प्रभू का जपने से फिर रंग में होगी भंग नहीं
नाम प्रभू का जपने से साधों की शान बड़ाई है
नाम प्रभू का जपने से सन्तों ने शोभा पाई है
नाम प्रभू का भोग भी है और नाम खुदा का योग भी है
नाम प्रभू का जपने से सब जाता रोग बियोग भी है
रंगे हैं जो नाम में रब के नाम की सेवा करते हैं
रब के बन्दे एक खुदा की 'नानक' पूजा करते हैं ॥६॥

हरि हरि जन कै मालु खजीना हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ।
हरि हरि जन कै ओट सताणी हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ।
ओति पोति जन हरि रसि राते सुंन समाधि नाम रस माते ।
आठ पहर जनु हरि हरि जपै हरि का भगतु प्रगट नही छपै ।
हरि की भगति मुकति बहु करे नानक जन संगि केते तरे ॥ ७ ॥

नाम खुदा का रब वालों को दौलत माल ख़ज़ीना[2] है
आप खुदा ने बख़्शा उनको नाम का यह गंज़ीना[2] है
नाम ही वह गढ़ कोट[3] है जिसमें रब वाले सब रहते हैं
शान न हो जो शान खुदा की शान उसे कब कहते हैं
रब के प्यारे बन्दों के रंगीले ताने बाने हैं
ध्यान के माते नाम के रस को पी पी कर मस्ताने हैं
रब के बन्दे आठ पहर बस नाम उसी का लेते हैं
भक्तों के गुन रौशन हैं कब उनको छिपने देते हैं
रब की भक्ती मुक्ती कर दे लाखों और हज़ारों की
'नानक' कितने पार लगाए संगत हक़[4] के प्यारों की ॥७॥

पारजातु इहु हरि को नाम कामधेन हरि हरि गुण गाम ।
सभ ते ऊतम हरि की कथा नामु सुनत दरद दुख लथा ।
नाम की महिमा संत रिद वसै संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ।

---

१ संतोष-शांति २ ख़ज़ाना ३ किला, दुर्ग ४ सत्य ।

संत का संगु वडभागी पाईऐ संत की सेवा नामु धिआईऐ।
नाम तुलि कछु अवरु न होइ नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ।।८।।

पेड़ बहिश्ती[1] पाया है गर नाम ख़ुदा का पाया है
कामधेन की न्यामत है गर नाम ख़ुदा का गाया है
करते जाओ बात ख़ुदा की इससे अच्छी बात कहाँ
नाम ख़ुदा का सुनने से दुख दर्द कहाँ आफ़ात[2] कहाँ
नाम की इज़्ज़त नाम की शौक़त सन्त के मन में बसती है
जलवा हो जब सन्तों का फिर पापों की क्या हस्ती है
संगत जिसको सन्तों की ख़ुशक़िस्मत वह इंसान रहे
सेवा जब हो सन्तों की तब नाम में हरदम ध्यान रहे
तौल ख़ुदा के नाम की जग में कौन सी न्यामत मिलती है
किसी-किसी को गुरु से नानक नाम की दौलत मिलती है ।।८।।

## सलोकु

बहु सासत्र बहु सिमृती
पेखे सरब ढढोलि ।।
पूजसि नाही हरि हरे
नानक नाम अमोल ।। १ ।।

सब स्मृतियाँ शास्तर नानक लिए टटोल
तौल न उसके आ सकें नाम उसका अनमोल

## असटपदी ३

जाप ताप गिआन सभि धिआन ।।
खट सासत्र सिमृति बखिआन ।।
जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ ।।
सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ।।

१ स्वर्गीय २ विपत्तियाँ।

अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥
पुंन दान होमे बहु रतना ॥
सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥
वरत नेम करै बहु भाती ॥
नही तुलि राम नाम बीचार ॥
नानक गुरमुखि नामु जपीऐ इक बार ॥ १ ॥

जप भी करले तप भी करले ज्ञान और ध्यान कमाए जा
स्मृतियों छः शास्त्रों की बानी खोल सुनाए जा
योग कर्म और क्रिया करले धर्म भी पूरा तेरा हो
त्याग दे सब कुछ दुनिया का जंगल में तेरा फेरा हो
रंगा रंगी ढंग किए जा करता जा दिन रात जतन
काम भी कर पुन दान हवन के देता जा ख़ैरात रतन
काट के अपने तन के टुकड़े दान हवन भी करता जा
बरत किए जा नेम किए जा भरने सारे भरता जा
तौल ख़ुदा के नाम न होगा फिर भी तेरा कार कभी
गुरु के मुँह से सुनकर 'नानक' जप ले नाम एक बार कभी ॥१॥

नउखंड पृथमी फिरै चिरु जीवै ॥
महा उदासु तपीसरु थीवै ॥
अगनि माहि होमत परान ॥
कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥
निउली करम करै बहु आसन ॥
जैन मारग संजम अति साधन ॥
निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥
तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥
हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥
नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि ॥ २ ॥

फिर ले नौ इक़लीमों[1] में उम्रें भी लम्बी पाए जा
आली तारक[2] और तपस्वी बन कर जुहद[3] कमाए जा

१ लोकों २ त्यागी ३ परहेज़गारी, पवित्रता ।

जीते जी तू आग में जल जा जान अपनी कुर्बान भी कर
सोना दे दे घोड़ा दे दे भूमी धन का दान भी कर
नेवली[1] करम भी हासिल करके आसन लाख बदलता जा
साधन संजम करता जा और जैनी मारग चलता जा
तन के टुकड़े टुकड़े करके जोड़ पे जोड़ कटाए जा
फिर भी मन का मैल न उतरे मान गुमान न जाए जा
इसके तुल[3] की चीज नहीं कुछ नाम खुदा का प्यारा है
गुरु से सुनकर नाम लिए जा 'नानक' तब छुटकारा है ।।२।।

मन कामना तीरथ देह छुटै ।।
गरबु गुमानु न मन ते हुटै ।।
सोच करै दिनसु अरु राति ।।
मन की मैलु न तन ते जाति ।।
इसु देही कउ बहु साधना करै ।।
मन ते कबहु न बिखिआ टरै ।।
जलि धोवै बहु देह अनीति ।।
सुध कहा होइ काची भीति ।।
मन हरि के नाम की महिमा ऊच ।।
नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ।। ३ ।।

तीरथ में भी जान जो निकले मन की ख़्वाहिश दूर न हो
तेरे मान गुमान न छूटें मन से दूर ग़रूर न हो
करके तू दिन रात सफ़ाई नेकी लाख कमाए जा
लाख जतन कर तन से तेरे मन का मैल न जाएगा
अपने तन को कष्ट दिए जा लाखों साधन करता जा
गन्दे जज़्बे[4] दूर न होंगे मन के भरने भरता जा
फ़ानी[5] तन को मल कर धो ले पाक मगर यह ख़ाक न हो
धोने से दीवार यह कच्ची उजली साफ़ और पाक न हो
ऊँचा नाम खुदा का ऐ दिल जिसकी महिमा गाते हैं
नाम खुदा का लेकर 'नानक' पापी मुक्ती पाते हैं ।।३।।

---

१ नेवली आदि योग-क्रियाएँ २ संयम ३ तौल ४ भावनाएँ ५ नाशवान ।

बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै ॥
अनिक जतन करि तृसन ना ध्रापै ॥
भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥
कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥
छूटसि नाही ऊभ पइआलि ॥
मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥
अवर करतूति सगली जमु डानै ॥
गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै ॥
हरि का नामु जपत दूखु जाइ ॥
नानक बोलै सहजि सुभाइ ॥ ४ ॥

जितना सयाना[1] बन्दा होगा उतना मौत डराएगी
करता जाए लाख जतन, कब कोशिश प्यास बुझाएगी
मन की आग न ठण्डी होगी भेस अनेक बदलता जा
दरगह में मक़बूल[2] न होगा लाखों चालें चलता जा
जाल बिछाकर माया ने जब मोह का छापा मारा है
जन्नत[3] हो या दोज़ख़[4] हो, फिर कब मिलता छुटकारा है
मौत तेरी करतूत से तुझको कल मुजरिम[5] गरदाने गी
मौत अगर कुछ माँगेगी तो नाम ख़ुदा का माँगेगी
नाम ख़ुदा का लेने से सुख आता है दुख जाता है
'नानक' किस आसानी से यह नाम ज़ुबाँ पर आता है ॥४॥

चारि पदारथ जे को मागै ॥
साध जना की सेवा लागै ॥
जे को आपुना दूखु मिटावै ॥
हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥
जे को अपुनी सोभा लोरै ॥
साध संगि इह हउमै छोरै ॥
जे को जनम मरन ते डरै ॥
साध जना की सरनी परै ॥

---

१ चतुर २ ईश्वर के दरबार में स्वीकृत ३ स्वर्ग ४ नरक ५ अपराधी ।

जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥
नानक ता कै बलि बलि जासा ॥ ५ ॥

चार मुरादें[1] असली हैं वह चारो हों मतलूब[2] जिसे
उस बन्दे पर वाजिब[3] है साधुओं की सेवा ख़ूब करे
जिसके मन में ख़्वाहिश हो सब अपने रोग मिटाने की
चाहिए उसको फ़िक्र हमेशा नाम ख़ुदा का गाने की
दुनिया में बा-इज़्ज़त रहना जो बन्दा मंज़ूर करे
साधुओं की संगत में रहकर मान ख़ुदी[4] का दूर करे
चिन्ता जीने मरने की गर मन को रोज़ सताती है
साधुओं के साए में आकर सब चिन्ता मिट जाती है
रब के रौशन के मतवाले प्यासे जो दीदार के हैं
'नानक ऐसे बन्दों पर क़ुर्बान हूँ मैं क़ुर्बान हूँ मैं ॥५॥

सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥
साध संगि जा का मिटै अभिमानु ॥
आपस कउ जो जाणै नीचा ॥
सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥
जा का मनु होइ सगल की रीना ॥
हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना ॥
मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥
पेखै सगल सृसटि साजना ॥
सूख दूख जन सम दृसटेता ॥
नानक पाप पुंन नही लेपा ॥ ६ ॥

सब लोगों में पतवाला[5] परधान[6] वही कहलाता है
जो साधुओं की संगत पाकर मान - गुमान[7] मिटाता है
जो बन्दा हर एक से ख़ुद को नीचा गिनने वाला है
उसको सबसे ऊँचा समझो आली है वह बाला[6] है

---

१ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ( चार पुरुषार्थ ) २ वाञ्छित ३ उचित ४ अहंकार
५ इ़ज़्ज़तवाला ६ प्रधान, श्रेष्ठ ७ अहंभाव का भरम ।

# ज़ादे सफ़र

## तर्जुमः रियाज़ुस्सालिहीन

[ पैग़म्बर स० के अनुपम कथनों (हदीसों) का प्रामाणिक संग्रह ]

संग्रहकर्त्ता

**इमाम नववी र०**

[ देवनागरी लिप्यन्तरण ]

# तआरुफ़

(अज़् मौलाना मुहम्मद मन्ज़ूर साहिब नुअमानी मुदीर 'अल् फ़ुरक़ान'[१] लखनऊ)

पेश-नज़र किताब (ज़ादॅसफ़र) सातवीं सदी हिज्री के मशहूर मुहद्दिस[२] इमाम नववी की किताब "रियाज़ुस्सालिहीन" का तर्जुमः है। इमाम मौसूफ़ की यह किताब उन ख़ास किताबों में से है जो मुख़्तलिफ़ ज़मानों में मुसलमानों में ईमानी रूह और इस्लामी ज़िन्दगी पैदा करने के लिए लिखी गई हैं। मुमालिकॅ अरबीयः के दीनी हल्क़ों में यह किताब बहुत मक़्बूल और मुतदाविल[३] है। लेकिन हिन्दोस्तान में न मालूम क्यों इसका चर्चा ज़ियादः नहीं रहा। ज़ुरूरत थी कि यह किताब सलीक़ः से हमारी ज़बान उर्दू में भी मुन्तक़िल हो। अल्लाह तआला की तरफ़ से इसकी तौफ़ीक़ हमारी एक बहन को मिली। उन्होंने तर्जुमः के अलावा कहीं-कहीं मज़ीद तौज़ीह[४] के लिए हवाशी[५] भी लिखे हैं और हदीसों पर तश्रीही उनवानात[६] भी क़ाइम किये हैं जिनसे मतलब और मक़्सद समझने में आम नाज़रीन को मदद मिल सकती है।

अल्लाह तआला इनकी इस मिहनत को क़ुबूल फ़रमा कर इनके वास्ते ज़ादॅ आख़िरत बनाये और अपने बन्दों और बन्दियों को उससे नफ़ा उठाने की तौफ़ीक़ दे। आमीन्

मुहम्मद मन्ज़ूर नुअमानी

८—रमज़ानुल्मुबारक १३७१ हिज्री अफ़ल्लाहु अन्हु

---

१ सम्पादक, 'अल् फ़ुरक़ान' २ हदीस (पैग़म्बर-कथन) के विद्वान् ३ प्रचलि[त]
४ व्याख्या ५ टिप्पणियाँ ६ शीर्षक, हेडिंग।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीमि ।

# मुक़द्दमः

(अज़् मौलाना सय्यद सुलेमान नदवी रहमतुल्ला अलैहि)

इमाम नववी अलमुतवफ़्फ़ा ६७६ हि० के, उम्मतें मर्हूमः पर बड़े-बड़े इहसानातं हैं। मिन्जुमला उनके एक इनकी किताब रियाज़ुस्सालिहीन है। यह आमाल व अख़्लाक़ के फ़ज़ायल में बेहतरीन किताब है। इमाम ने इस किताब में आमाल ख़ैर और फ़ज़ायल हसनः को क़ुर्आन पाक और अहादीस सहीहः के ज़िम्न में बयान फ़र्माया है और उन हदीसों को एक जगह कर दिया है जिन पर अमल करने से मोमिन[1], सालेह[2] का दर्जा हसिल कर सकता है। कहीं-कहीं इमाम ने हदीसों के मतलब व माने और उलमा ने उनकी तश्रीह व तफ़्सीर में बाज़ नुक्ते और लतीफ़े जो बयान किये हैं उनको लिखा है।

इस किताब में बड़ी ख़ूबी यह है कि इसके मुतालः करने वाले की क़ुव्वत, अमल में तहरीक होती है और हसनात के हुसूल और सइयेआत से इहतराज़ का शौक़ बढ़ता है और सालिहीन की तालीफ़ और मक़्बूलीन की तस्नीफ़ का यह खुला हुआ समरः और बदीही नतीजा है। अगर इस किताब को फ़न्नें तसव्वुफ़ की मस्नून शक्ल की किताब कहा जाय तो बे-महल बात न होगी। तसव्वुफ़ और सुलूक का हासिल यह है कि दर्जा ईमान के हुसूल के बाद मरातिब ईमान और मदारिज तक़र्रुब-इलल्लाह में तरक़्क़ी हो और 'अस्साबिक़ूनस्साबिक़ून उला'अिकलमुक़र्रबून' की क़ुर्आनी बशारत के हुसूल की राहें खुलें और 'लायज़ालुल् अब्दु यतक़र्रबु इलय्य बिन्नवाफ़िलि' की उस ख़ुशख़बरी की तश्रीह हो जो इस हदीस पाक में मज़्कूर है।

---

१ ईमान रखने वाला २ संयमी, परहेज़गार।

अब जबकि इस मुल्क में मुसलमानों की मादरी ज़बान उर्दू है, ज़ुरूरत है कि ज़ुरूरी मज़्हबी किताबों को इस ज़बान में मुन्तक़िल किया जाय ताकि अरबी से महरूम भाई और बहनों को दीन की बातें मालूम हों§ और उन मुजर्रब और ख़ासुल्ख़ास नुस्ख़ों से आगाही हो जो हमारे तबीबे रूहानी और हाज़िक़े रब्बानी मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम☙ ने हम जैसे मरीज़ों के लिए पहले ही से महफ़ूज़ फ़रमा दिये हैं। इन नुस्ख़ों के अत्तार उलमा किराम और मशायख़ अिज़ाम रहमहुमुल्लाः हैं।

हम को इस इज़्हार में बड़ी ख़ुशी है कि इमाम नववी की इस किताब रियाज़ुस्सालिहीन का तर्जुमः उसी घराने ने किया है जिसने सुन्नत की इशाअत और बिदअत के इज़ाले का काम एक सदी पहले से शुरू कर रखा है और जिनके अनवारेंबर्कत मुल्क में हर जगह नुमायाँ हैं। 'अल्लाहुम्म ज़िद् फ़ज़िद् व ला तन्क़ुस़' इस किताब का तर्जुमः इस घराने के मौजूदः चश्म व चिराग़ मौलाना डाक्टर सय्यद अब्दुल अली नाज़िम नदवतुल उलमा और मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी की बहन ख़्वाहर अज़ीज़ा ने किया है।

हमारी नई तालीमयाफ़्तः ख़वातीन ने सिर्फ़ 'अदबियात लतीफ़ा' को अभी तक अपने क़लम का जौलाँगाह बनाया है कि मुसलमान ख़वातीन की इलमी व अदबी ख़िदमतें इससे भी ज़ियादः वसीअ मैदान की तालिब हैं और वह दीनी व अख़्लाक़ी तालीम व तर्बियत के कामों को बहुत ख़ूबी के साथ अन्जाम दे सकती हैं।

मुतर्जिमः मौसूफ़ा ने तर्जुमा में ज़बान की सलासत और रवानी का लिहाज़ रक्खा है। जगह-जगह हाशिये बढ़ाये हैं। हर हदीस का उनवान क़ायम किया है जिनसे हदीस के मग़्ज़-सुख़न तक पहुचने में नाज़िर किताब को बड़ी आसानी हो जाती है। दुआ है कि यह किताब इस्लामी घरों में घर-घर फैले और मुसलमान मर्दों और औरतों की इस्लाह व तालीम में मुअस्सिर और बा-बरकत साबित हों।

वस्सलाम

१५ शावाम १३६५ हिज्री — हेच मदाँ सय्यद सुलेमान नदवी

---

§ ऐसेही सबब के मातहत इस वक़्त यह भी ज़ुरूही समझा गया कि इस बेशबहा किताब को देवनागरी लिपि में मुन्तक़िल (लिप्यन्तरित) किया जाय। —सम्पादक।

☙ परमेश्वर उनका कल्याण और त्राण करें।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ।

# ज़ादे सफ़र

## इख़्लास[1] और नीयत[2]

### आयात क़ुर्आनी

व मा अुमिरू अिल्ला लियअ्बुदुल्लाह मुख़्लिसीन लहुद्दीन हुनफ़ाअ व युक़ीमुस्सलात व युअ्तुज़्ज़कात व जालिक दीनुल्-क़य्यिमह् । [पारः ३० सूरः ९८ आयत ५]

नहीं हुक्म दिया गया उनको मगर यह कि इख़्लास के साथ अल्लाह की इबादत करें, नमाज़ पढ़ें, ज़कात दें और यही ठीक दीन है ।

लंय्यनालल्लाह लुहूमुहा व ला दिमाअुहा व लाकिय्यनालुहुत्तक़्वा मिन्कुम् । [पारः १७ सूरः २२ आयत ३७]

न पहुँचेगा अल्लाह को उनका गोश्त और न ख़ून (यानी क़ुर्बानी का) लेकिन उसको तुम्हारे दिल का अदब पहुँचेगा ।

क़ुल् अिन् तुख़्फ़ू मा फ़ी सुदूरिकुम् औ तुब्दूहु यअ्लम्हुल्लाहु [पारः ३ सूरः ३ आयत २९]

कह दो तुम किसी चीज़ को पोशीदः रक्खो या ज़ाहिर करो—अल्लाह उसको जानता है ।

---

१ सच्चाई, निष्कपटता  २ भावना

# अहादीस[1]

(१) आमाल का दार-व-मदार नीयतों पर है

हज़्रत उमर र० इबनुल् ख़त्ताब से रिवायत[2] है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है—फ़रमाते थे कि तमाम अमल का दार व मदार नीयतों पर है। हर शख़्स को उसकी नीयत के मुताबिक़ मिलेगा; जो अल्लाह और उसके रसूल के लिए हिज्रत[3] करेगा तो उसकी हिज्रत अल्लाह और उसके रसूल के लिए होगी। और जो दुन्या के हुसूल[4] के लिए करेगा या किसी औरत से निकाह के लिए करेगा तो उसकी हिज्रत उसी के लिए होगी जिसके लिए तर्क-वतन[5] किया है [बुख़ारी, मुस्लिम]

(२) हश्र[6] अपनी-अपनी नीयतों पर होगा

हज़्रत आयशः र० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—एक लश्कर काबः पर हमला करेगा। जब मैदान में आ जायगा तो उनके अगले-पिछले लोग धँसा दिये जायँगे। मैंने कहा या रसूलुल्लाह उनके अगले-पिछले लोग कैसे धँसा दिये जायँगे हालाँकि उनमें बाज़ार के लोग होंगे और वह लोग भी होंगे जो हमला करने वालों के शरीक नहीं? आपने फ़रमाया—सब धँसा दिये जायँगे लेकिन अपनी-अपनी नीयतों के मुताबिक़ उठाये जायँगे [बुख़ारी, मुस्लिम]

नीयत और जिहाद[7] क़ियामत तक बाक़ी रहेंगें (३)

हज़्रत आयशः र० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—फ़तेह-मक्का के बाद (मक्का से) हिज्रत नहीं है [इस लिए कि वह दारुल्-इस्लाम हो गया है।] मगर नीयत और जिहाद बाक़ी रहेंगे। जब तुमको जिहाद के लिए उठाया जाय तो चल खड़े हो।

---

१ हदीस का बहुवचन, हदीसें  २ आप्त वचन, परम्परा से सुने गये पैग़म्बर स० के कथन  ३ देश-परित्याग  ४ प्राप्ति  ५ स्वदेश-त्याग  ६ क़ियामत, महाप्रलय  ७ धर्मयुद्ध।

(४) नीयत की बिना पर अमल में शिर्कत

हज़्रत जाबिर र० बिन अबदुल्लाः अन्सारी से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ किसी लड़ाई में थे। आप ने फ़रमाया कि कुछ लोग मदीना में रह गये हैं वह तुम्हारे साथ नहीं आये लेकिन अज्र में वह तुम्हारे शरीक हैं। उनको मरज़ ने रोक लिया। [बुख़ारी, मुस्लिम]

(५) माज़ूर[1], मुजाहिदीन[2] के साथ शरीक हैं

हज़्रत अनस र० से रिवायत है कि हम नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ग़ज़्वए तबूक से पलट रहे थे। आपने फ़रमाया कि कुछ लोग पीछे रह गये। न तुम्हारे साथ चले और न उन्होंने इस सफ़र की कोई घाटी तय की। मगर वह तुम्हारे साथ शरीक हैं। मरज़ ने उनको मजबूर कर दिया।

(६) बेटे को मिल जाने से बाप की ख़ैरात का सवाब नहीं जाता

हज़्रत अबू यज़ीद र० मअन बिन[3] यज़ीद से रिवायत है कि मेरे बाप ने सदक़े के लिए दीनार निकाले और मस्जिद में एक आदमी के पास रखा दिये। मैं मस्जिद में आया और मैंने उनको लिया और लेकर घर पलटा। मेरे बाप ने कहा, क़सम ख़ुदा की मैंने तुझे देने का इरादा नहीं किया था। फिर हम दोनों आपस में बहेस करते हुये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये। आपने फ़रमाया ऐ यज़ीद! तुम्हारी नीयत का तुम्हें अज्र मिलेगा और ऐ मअन जो तुमने लिया वह तुम्हारा हो चुका। [बुख़ारी, मुस्लिम]

(७) अल्लाह की ख़ुशी के लिए बीवी को खिलाना भी सवाब व इबादत है

हज़्रत सअद र० बिन अबी वक़्क़ास से रिवायत है कि मेरे पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मेरी अियादत के लिए हज्जतुल् वदाअ के साल तश्रीफ़ लाये और मैं सख़्त बीमार था। मैंने कहा, या रसूलुल्लाह! आप देख रहे हैं मेरी बीमारी किस हद को पहुँच गई है। मैं बहुत मालदार हूँ और मेरे एक ही बेटी है। क्या मैं अपने माल का

---

१ लाचार २ जिहाद (धर्मयुद्ध) करने वाला ३ सुपुत्र।

दो तिहाई सदक़:[1] कर सकता हूँ ? फ़रमाया—नहीं। मैंने कहा, या रसूलुल्लाह ! निस्फ़[2] ? फ़रमाया—नहीं। मैंने कहा एक तिहाई या रसूलुल्लाह ? फ़रमाया—हाँ, तिहाई भी बहुत है। तुम्हारा अपने वारिसों को मालदार छोड़ना उनको मुहताज छोड़ने से बेहतर है कि वह लोगों के सामने हाथ फैलायें; और देखो तुम अल्लाह की ख़ुशी के लिए जो कुछ ख़र्च करोगे अल्लाह की रज़ा[3] चाहते हुये, तो इसका अज्र तुमको मिलेगा; यहाँ तक कि जो लुक़्मा अपनी बीवी के मुँह में डालोगे उसका भी सवाब मिलेगा। मैंने कहा या रसूलुल्लाह ! क्या मैं अपने साथियों के बाद तक रहूँगा ? फ़रमाया तुम अपनी बक़ीया उम्र में जो अमल अल्लाह की रज़ा के लिए करोगे उसके सबब तुम्हारा दर्जा और बलंदी में तरक़्क़ी होगी। बहुत मुमकिन है कि तुम ज़िन्द: रहो। बाज़ को तुमसे नफ़ा पहुँचे और बाज़ को नुक़सान। फिर आपने फ़रमाया—ऐ अल्लाह ! मेरे साथियों के लिए उनकी हिज्रत आख़िर तक गुज़ार दे। उनको उलटे पाँव न पलटा, लेकिन बेचारे क़ाबिल-रहम तो सअद इब्नि ख़ौल: हैं, उन पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तरस खाते थे, इस लिए कि उन्होंने मक्का में वफ़ात[4] पाई। [बुख़ारी, मुस्लिम]

(८) अल्लाह तआला दिलों को देखता है

हज़्रत अबू हुरैरः र० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—बेशक अल्लाह तआला न तुम्हारे जिस्मों को देखता है, न तुम्हारी सूरतों को देखता है। उसकी नज़र तुम्हारे दिलों पर रहती है।

(९) जिहाद की नीयत

हज़्रत अबू मूसा र० अल् अशअरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसे आदमी के मुतअल्लिक़ पूछा गया जो बहादरी के लिए जिहाद करे या हमीयत[5] के लिए या दिखावे के लिए—इसमें अल्लाह के रास्ते में कौन सा है ? आपने फ़रमाया—अल्लाह का बोल बाला करने के लिए लड़ना ही सिर्फ़ अल्लाह के रास्ते में शुमार होगा। [बुख़ारी, मुस्लिम]

---

१ न्यौछावर २ आधा ३ प्रसन्नता ४ मृत्यु ५ लज्जा अथवा गौरव।

(१०) मुसलमान क़ातिल व मक़्तूल

हज़्रत अबू बक्र र० नुफ़ैअ् बिन अल् हारिस अल्सक़फ़ी से रिवायत है कि नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब दो मुसलमान अपनी तलवारों के साथ मुक़ाबिल हों तो क़ातिल व मक़्तूल दोनों दोज़ख में जायँगे। मैंने कहा, या रसूलुल्लाह! क़ातिल[१] का मुआमला तो समझ में आ गया लेकिन मक़्तूल[२] के बारे में हैरत[३] है। आप ने फ़रमाया कि वह अपने साथी के क़त्ल पर हरीस[४] था।

(११) जमाअत का सवाब क्यों ज़ियादः है

हज़्रत अबू हुरैरः र० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—घर पर और दूकान पर नमाज़ पढ़ने से जमाअत से नमाज़ पढ़ने का सवाब कुछ ऊपर बीसगुना ज़ियादः मिलता है। जो शख़्स अच्छी तरह वज़ू करे, फिर मस्जिद में आये और नमाज़ ही का इरादा करके घर से निकला हो तो हर क़दम पर उसका दर्जा बलंद किया जायगा और उसकी ख़ताएँ दूर की जायँगी। यहाँ तक कि मस्जिद में दाख़िल होगा तो नमाज़ में शुमार होगा और जब तक वह मस्जिद में नमाज़ की नीयत से रुका रहता है फ़िरिश्ते उसके हक़ में दुआ करते रहते हैं, कहते हैं ऐ अल्लाह! इस पर रहम कर और इसको बख़्श दे और इसकी तौबः[५] क़ुबूल कर जब तक बा-वज़ू[६] रहे। [बुख़ारी, मुस्लिम]

(१२) नेक काम की नीयत ही से सवाब मिल जाता है

हज़्रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास र० से रिवायत है—वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं और आँ हज़्रत अपने रब तबारक[७] व तआला से रिवायत फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने नेकियाँ और बुराइयाँ लिखीं फिर उनको ज़ाहिर कर दिया कि जिस शख़्स ने किसी नेकी का इरादः किया और उसको न किया तो अल्लाह तआला ने एक नेकी लिखी। और जिसने नेकी का इरादा भी किया और उसको कर गुज़रा तो अल्लाह तआला ने दस नेकियाँ लिखीं सात सौ गुना तक या उससे भी ज़ियादः और जिसने किसी बुराई का इरादा किया फिर उसको न

---

१ बध करने वाला २ जिसका बध किया गया हो ३ आश्चर्य ४ लालायित ५ पश्चात्ताप ६ मार्जन से शुद्ध ७ बरकत वाला।

किया तो अल्लाह तआ़ला ने एक पूरी नेकी लिखी§ और अगर वह बुराई अमल में आगई तो एक ही बदी लिखी।

(१३) मक़्बूल अमल का वसीलः मुसीबत से नजात देता है

हज़्रत अब्दुल्लाह र० बिन उमर र० से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रमाते हुये सुना है कि तुमसे पहले तीन आदमी (कहीं) रवाना हुये। रास्ते में शाम हो गई। उन्होंने एक ग़ार में पनाह ली। जब उसमें दाख़िल हुये तो एक पत्थर गिर पड़ा और ग़ार का दरवाज़ा बंद हो गया। उन लोगों ने कहा इस पत्थर से कोई नजात नहीं दे सकता; हाँ यह कि अल्लाह तआ़ला को अपने किसी अ़मल की याद दिलाते हुये पुकारो। उनमें से एक ने कहा कि ऐ अल्लाह तआ़ला ! मेरे माँ-बाप बूढ़ थे और मैं उनसे पहले अपने बीवी बच्चों को दूध नहीं पिलाता था। एक दिन मैं चारे की फ़िक्र में दूर तक चला गया और राह में मुझको शाम हो गई। जब घर पलटा तो उनको सोता पाया। मैंने बुरा समझा कि उनको बे-आराम करूँ या उनसे पहले बीवी बच्चों को दूध पिलाऊँ। प्याला मेरे हाथ में था और मैं उनके जागने के इन्तिज़ार में रहा, यहाँ तक कि सुब्ह[1] नमूदार हो गई और बच्चे मेरे पावँ पर लोट रहे थे, मैंने उनको दूध पिलाया। ऐ अल्लाह ! अगर यह काम मैंने तेरी ख़ुशी के लिए किया है तो इस पत्थर को हमसे दूर कर। पस थोड़ा पत्थर हट गया।

दूसरे ने कहा ऐ अल्लाह तआ़ला ! मेरी एक चचाज़ाद बहेन थी। वह मुझको बहुत महबूब थी। एक रिवायत में है कि मैं उसको इतना चाहता था कि जैसे किसी मर्द को औरत से मुहब्बत हो सकती है। एक दिन मैंने बुलाया, उसने इन्कार किया, यहाँ तक कि क़हत[2] से परेशान होकर वह मेरे पास आई। मैंने उसको एक सौ बीस दीनार इस शर्त पर दिये कि वह मुझसे तख़्लियः[3] में मिले। वह राज़ी हो गई। जब मैंने इरादा किया तो उसने कहा अल्लाह से डर। मैं यह सुन कर बाज़ रहा, हालाँकि वह मुझे इन्तिहाई महबूब[4] थी। फिर मैंने उससे रुपया भी वापस नहीं लिया। ऐ अल्लाह ! अगर मैंने यह काम तेरी रज़ा की

§ यह इसलिए कि गुनाह का इरादा करके बाज़ रहना भी नेकी है।

१ प्रातःकाल २ अकाल ३ एकान्त ४ प्रिय।

ख़्वाहिश में किया है तो हमें इस मुसीबत से रिहाई अ़ता फ़रमा। तो पत्थर खिसक गया मगर इतना ही कि निकल नहीं सके।

तीसरे ने कहा, ऐ अल्लाह ! मैंने कुछ मज़्दूर काम के लिए बुलाये और उनको पूरी-पूरी मज़्दूरी दी। सिवा एक आदमी के कि वह चला गया था; मैंने उसकी मज़्दूरी से तिजारत की। कुछ अर्सः में तिजारत ख़ूब नफ़ा लाई। एक दिन वह आया और कहा अल्लाह के बंदे मेरी मज़्दूरी दे। मैंने कहा यह जितनी चीज़ें तुम देख रहे हो—ऊँट, गाय, बकरी ग़ुलाम सब तुम्हारे हैं और तुम्हारी मज़्दूरी से हैं। कहा, क्यों मुझसे मज़ाक़ करते हो। मैंने कहा मैं मज़ाक़ नहीं करता, यह हक़ीक़त है; तो वह सब लेकर चला गया। ऐ अल्लाह ! अगर मेरी यह बात तुझे पसंद आई हो तो हमको इस तंगी से नजात अ़ता फ़रमा। पस वह पत्थर हट गया और सब निकल गये।

# तौबः

## तौबः के शराइत

उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि हर गुनाह पर तौबः वाजिब है। अगर गुनाह अल्लाह और बन्दे के दर्मियान है, किसी आदमी के मुतअ़ल्लिक़ नहीं है, तो उसकी तीन शर्तें हैं। अव्वल यह कि गुनाह से बाज़ आये; दूसरे यह कि अपने फ़ेल[1] पर नादिम[2] हो; तीसरे यह कि इरादः करे कि गुनाह की तरफ़ कभी न पलटेंगे। अगर इन तीन शर्तों में कोई पूरी न हुई तो तौबः सही नहीं है। अगर गुनाह आदमी के मुतअ़ल्लिक़ है तो उसकी चार शर्तें हैं। तीन तो वही जो ऊपर बयान हो चुकी हैं; चौथी यह कि जिसका जुर्म किया हो उसी से मुआफ़ करवाये, अगर माल हो तो उसको वापस करदे, अगर तुहमत[3] वग़ैरः की कोई सज़ा उस पर वाजिब होती है तो उसका मौक़ा दे या मुआफ़ कराये या ग़ीबत[4] की है तो उससे मुआ़मला साफ़ कर ले।

१ कर्म २ लज्जित ३ लाञ्छन, आरोप ४ चुग़ली।

## आयात

व तूबू' अिलल्लाहि जमीअन् अय्युहल् - मुअ्मिनून लअल्लकुम् तुफ़्लिहून । [पार: १८ सूर: २४ आयत ३१]

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की तरफ़ तुम सब मिल कर तौब: करो शायद कि तुम फ़लाह[1] पाओ ।

वस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्म तूबू' अिलैहि ॥ [पार: १२ सूर: ११ आयत ६०]

अपने रब से बख़्शिश चाहो, फिर उसकी तरफ़ तौब: करो ।

या' अय्युहल्लज़ीन आमनू तूबू' अिलल्लाहि तौबतन् नसूहन् ॥ [पार: २८ सूर: ६६ आयत ८]

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की तरफ़ सच्ची तौब: करो ।

## अहादीस

१७ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दिन में सत्तर-सत्तर और सौ-सौ मर्तबा तौब:[2] और इसतग़फ़ार[3] करते थे ।

हज़्रत अबू हुरैर: र० से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है—फ़रमाते थे कि ख़ुदा की क़सम मैं अल्लाह से बख़्शिश चाहता हूँ और दिन में सत्तर मर्तब: से ज़ियाद: तौब: करता हूँ । [बुख़ारी]

हज़्रत अग़र बिन यसार अल्मुज़फ़्फ़ी र० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐ लोगो ! अल्लाह से तौब: करो और बख़्शिश चाहो; बेशक मैं दिन में सौ मर्तब: तौब: करता हूँ [मुस्लिम]

### १८ अल्लाह की ख़ुशी बन्दे की तौब: से

हज़्रत अबू हम्ज़: र० अनस बिन मालिक अल् अन्सारी ख़ादिमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत है—रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दे की तौब:

---

१ छुटकारा, मुक्ति २ पश्चात्ताप ३ छुटकारा (मुक्ति) की प्रार्थना ।

से इतना ख़ुश होता है जैसा कि वह सवार जिसकी, सवारी मय खाने-पानी के किसी चटियल मैदान में खो जाय और वह मायूस होकर एक दरख़्त के नीचे सो जाय; जब आँख खुले तो देखे के कि वह सवारी खड़ी है। पस वह सवार लगाम पकड़ के ख़ुशी की शिद्दत में यों कहने लगे कि ऐ अल्लाह ! तू मेरा बन्दा है, मैं तेरा रब हूँ, और यह ग़लती इन्तिहाई-मसर्रत[1] में उससे सादिर हुई।

### ३६ तौबः का दरवाज़ः क़ियामत तक के लिए खुला रहेगा

हज़्रत अबू मूसा अल् अश्अरी र० से रिवायत है—वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं—फ़रमाया कि अल्लाह तआला अपना हाथ रात को फैलाता है ताकि दिन का गुनहगार तौबः करले और अपना हाथ दिन को फैलाता है ताकि रात का गुनहगार तौबः करले यहाँ तक कि सूरज अपने डूबने की जगह से निकले। [मुस्लिम]

### ३७ सकरात[2] तक तौबः मुमकिन

हज़्रत अब्दुल्लाह र० बिन उमर बिन अल् खत्ताब से रिवायत है—वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवयात करते हैं—फ़रमाया—अल्लाह तआला मोमिन बन्दे की तौबः उस वक़्त तक क़ुबूल करता है जब तक [मरते समय की] ख़रख़राहट शुरू न हो। [तिरमिज़ी]

### ३८ तौबः का दरवाज़ः बड़ा वसीअ़ है। सूरज के मग़्रिब की तरफ़ से निकलने के वक़्त तक खुला रहेगा

हज़्रत ज़िर र० बिन हुबैश से रिवायत है कि मैं सफ़वान बिन अस्साल के पास आया और मैंने चमड़े के मोज़े पर मस्ह[3] करने के मुतअल्लिक़ दर्याफ़्त किया। उन्होंने कहा, ऐ ज़िर ! तुमको कौन सी हाजत मुझ तक लाई ? मैंने कहा, तलाश इल्म। उन्होंने कहा, उस तालिब-इल्म के लिए जो इल्म की तलब में निकले, फ़िरिश्ते अपने दोनों बाज़ू फैला देते हैं। मैंने कहा पायख़ानः-पेशाब के बाद चमड़े के मोज़े पर मस्ह करने के मुतअल्लिक़ मेरे दिल में खटक है। आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों में हैं इसलिए मैं आप से पूछने आया हूँ, क्या आप ने इसके बारे में कुछ सुना है ? कहा, हाँ, जब हम मुसाफ़िरत में

---

१ हर्षातिरेक २ मरणकाल ३ वजू (मार्जन) के समय गीला हाथ फेरना।

होते थे तो हम को हुक्म देते कि तीन दिन और तीन रातें चमड़े के मोज़े पायख़ानः, पेशाब और सोने के बाद उतारने की ज़ुरूरत नहीं (इस पर मस्ह कर लेना काफ़ी है) सिवाय जिनाबत[1] की सूरत में (उसमें उतारना चाहिए)

मैंने कहा क्या आपने मुहब्बत के मुतअ़ल्लिक़ कुछ सुना है ? कहा, हाँ, हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ किसी सफ़र में थे। हम आपके पास थे कि एक एऽराबी[2] ने आपको बलंद आवाज़ से पुकारा, "या मुहम्मद स० !" पस आपने उसी आवाज़ की तरह जवाब दिया, क्या कहते हो ? मैंने उससे कहा, अरे नेकबख़्त ! ज़रा अपनी आवाज़ को आहिस्तः कर। तू आँ-हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में है और आप के पास ज़ोर से बोलने की मुमानिअ़त है। कहा, मैं अपनी आवाज़ को आहिस्तः न करूँगा। फिर एऽराबी ने कहा कि आदमी, लोगों से मुहब्बत करता है, और वह उनके मर्तबः का नहीं होता। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया वह आदमी जो किसी के साथ मुहब्बत करता है क़ियामत में उसी के साथ होगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसी सिलसिले-गुफ़्तगू में मग़्रिब के दरवाज़े का ज़िक्र किया कि उसकी चौड़ाई की मसाफ़त[3] या यों फ़रमाया कि एक सवार उसकी चौड़ाई में चालीस या सत्तर साल चलेगा। अल्लाह तआ़ला ने उसको उस दिन पैदा किया जिस दिन आसमान व ज़मीन पैदा किये गये हैं, तौबः के लिए खुला है बन्द न होगा यहाँ तक कि सूरज मग़्रिब से निकले। (तिरमिज़ी वग़ैरः)

### २६ अल्लाह की तरफ़ रुजू की क़ीमत

हज़रत अबू सईद अल् ख़ुदरी र० से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगली क़ौम में एक आदमी था जिसने निन्नान्नबे ख़ून किये थे। उसनें ज़मीन में सब से बड़े आलिम के मुतअ़ल्लिक़ दर्याफ्त किया। लोगों ने एक राहिब[4] का पता दिया, वह उसके पास आया और कहा कि मैंने निन्नान्नबे ख़ून किये हैं, क्या मेरी तौबः भी क़ुबूल हो सकती है ? कहा नहीं। उसने राहिब को भी क़त्ल कर दिया तो सौ पूरे हो गये। फिर रूए ज़मीन के सब से ज़ियादः जानने वाले के

---

१ विषय भोग (मैथुन) २ अरबनिवासी ३ फ़ासला ४ रास्ता दिखाने वाला।

मुतअ़ल्लिक़ दर्याफ़्त किया§, लोगों ने एक मर्द आलिम का पता दिया; वह गया और कहा कि मैंने सौ आदमी क़त्ल किये हैं, क्या मेरी बख़्शिश हो सकती है ? कहा, हाँ ! कौनसी चीज़ तुम्हारे और तौबः के दर्मियान हायल[1] है। तुम फ़लाँ ज़मीन की तरफ़ जाओ, वहाँ कुछ लोग अल्लाह की इबादत करते हैं। तुम भी उनके साथ अल्लाह की इबादत करो और फिर इस ज़मीन की तरफ़ क़स्द न करना क्योंकि यह जगह तुम्हारे लिए बुरी हो गई है। ☪ वह रवानः हुआ। आधा रास्ता तय हुआ था कि मौत का पैग़ाम आया। रह्मत के फ़िरिश्ते और अज़ाब के फ़िरिश्ते झगड़ने लगे। रह्मत के फ़िरिश्ते ने कहा कि यह ताइब[2] होकर और अपने दिल को ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्जः करते हुये आया है। अज़ाब के फ़िरिश्ते ने कहा कि इसने कभी कोई नेक अमल नहीं किया। उसी वक़्त एक फ़िरिश्ता आदमी की सूरत में आया तो उन्होंने उसको अपने दर्मियान फ़ैसला करने वाला बनाया। उसने कहा, दोनों ज़मीनों को नापो, कौन ज़मीन इससे क़रीब है। उन्होंने नापा तो उस ज़मीन को ज़ियादः क़रीब पाया जिसकी तरफ़ वह जा रहा था। तो रह्मत के फ़िरिश्ते ने रूह क़ब्ज़ की। [बुख़ारी, मुस्लिम]

एक सही रिवायत में है कि उस नेक बस्ती के क़रीब एक बालिश्त से ज़ियादः था तो उसके रहनेवालों में शुमार किया गया।

---

§ इस अल्लाह के बन्दे के दिल में फाँसी की सी खटक थी जो उसको बेचैन किये हुये थी। उसका दिल बिलकुल मुर्दः नहीं हुआ था। इस ख़लिश[3] और जुस्तजू[4] ने उसकी मग़्फ़िरत[5] और मक़्बूलियत[6] का सामान कर दिया। दिल की यह फाँस और ख़लिश बड़ी मुबारक है। इसके न होने से हज़ारों महरूम रह गये और इसकी वजः से सौ बेगुनाह बन्दों का क़ातिल ख़ुदा की रह्मत से वासिल[7] हुआ।

☪ जिस मुक़ाम और माहौल में आदमी ने बे-दीनी और गुनाह व ग़फ़लत की ज़िन्दगी गुज़ारी हो अक्सर औक़ात उस माहौल में इससे अपनी इस्लाह[8] और तब्दीली[9] बहुत मुश्किल होती है। 'मुक़ाम की तब्दीली' और 'अच्छा माहौल', 'अच्छे अमल' और 'अच्छी ज़िन्दगी' के लिए बहुत मददगार साबित होते हैं। यह भी हिज्रत की एक मसलहत है—फिर तौबः की क़ुबूलियत और असर के लिये ज़बानी तौबः के साथ अमली हरकत और कुछ ईसार[10] व कोशिश बहुत मुफ़ीद होती है।

---

१ बाधक २ तौबः करने वाला ३ उत्कण्ठा ४ खोज, गवेषणा ५ छुटकारा ६ स्वीकृत होने का ७ मुक्त, लीन ८ सुधार ९ परिवर्त्तन १० उत्सर्ग।

और एक सहीह रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने इस ज़मीन को हुक्म दिया कि दूर हो जा और उस ज़मीन को हुक्म दिया कि क़रीब हो जा और कहा दोनों ज़मीनों को नापो। जब नापा तो उस ज़मीन को एक बालिश्त क़रीब पाया। पस उसको बख़्श दिया।

और एक रिवायत में है कि उस आदमी ने अपने को घसीट कर उस ज़मीन के क़रीब किया।☫

२०/७ सच्चाई और इअतराफ़ क़ुसूर की बरकतः—

हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ियल्लाहु अन्हु) बिन कअब बिन मालिक से रिवायत है कि (जब कअब बिन मालिक नाबीना[1] हो गये थे तो यही बेटे उनके साथ चलते थे) कि मैंने कअब बिन मालिक से सुना है ग़ज़वए तुबक में रसूलुल्लाह सल्लत्लाहु अलैहि वसल्लम से पीछे रह जाने का क़िस्सा यों बयान करते हैं कि मैं किसी गज़वह में कभी भी ग़ैर हाज़िर नहीं रहा सिवाये ग़ज़वए तुबूक और ग़ज़वए बदर के। और आपने ग़ज़वए बदर की अदमि-शिरकत[2] पर किसी पर अ़ताब[3] नहीं फ़रमाया। बात इतनी थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमान, क़ुरैश के क़ाफ़ले के इरादे से निकले थे। अल्लाह तआला ने उनको और उनके दुश्मनों को बग़ैर किसी वक़्तिमुक़र्रर[4] के जमा कर दिया। और मैं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अक़बा की रात§ (की मज्लिस) में शरीक हुआ था। जबकि हमने इस्लाम पर अह्द किया था और मैं अक़बा की इस शिरकत पर बदर की शिरकत को तरजीह[5] नहीं देता। अगरचे बदर लोगों में ज़्यादह मशहूर है।

---

☫ इससे उस अल्लाह के बन्दे की नीयत और कोशिश का पता चलता है कि आख़िर वक़्त तक वह हिम्मत नहीं हारा और कोशिश बन्द नहीं की—यही चीज़ अल्लाह को पसन्द है।

§ सन् १३, नबुव्वत के बाद ७३ मर्द और दो औरतें मदीनः से मक्कः आये ताकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने शहर में आने की दावत दें और आपकी मन्ज़ूरी हासिल करें। उन्हीं की पुरजोश और मुख़्लिसानः[6] तह्रीक[7] और अल्लाह तआला के हुक्म से आपने मदीनः हिज्रत फ़रमायी। इसलिए इस मौक़े पर जो लोग शरीक हुये उनकी बड़ी फ़ज़ीलत[8] है।

---

१ नेत्रहीन २ सम्मिलित न होने ३ ग़ुस्सा ४ समय-नियुक्ति ५ वरीयता ६ सच्ची ७ प्रेरणा ८ श्रेष्ठता।

[ ॐ ]

कविसम्राट् उपेन्द्र भञ्ज प्रणीत

# वैदेहीश-विळास

लिप्यन्तरणकार एवं अनुवादक—

श्री सुरेशचन्द्र नन्द, एम.ए., हिन्दी-ओड़िआ, रा० भा० रत्न,

अध्यापक—हिन्दी विभाग, क्राइस्ट कालेज, कटक

## कवि की संक्षिप्त जीवनी

[भञ्ज-साहित्य के श्रेष्ठ व्याख्याता तथा समालोचक, 'कलिंग भारती' अनुष्ठान के संस्थापक स्व० विच्छन्दचरण पट्टनायक द्वारा संपादित 'भञ्ज प्रभा' समालोचना-ग्रन्थ में दिये गये विवरणों के आधार पर:—]

### वंश-परिचय

ओड़िशा के गञ्जाम जिलान्तर्गत बन-पर्वत-निर्झर-सुशोभित 'घुमुसर' राज्य के कुलाड़ दुर्ग में महाप्रतापी राजा धनञ्जय भञ्ज के पौत्र तथा नीलकण्ठ भञ्ज के पुत्र, कलिंग-मुकुटमणि कविसम्राट् उपेन्द्र भञ्ज ने सन् १६८५ ई० में जन्म ग्रहण कर सन् १७२५ ई० में चालीस वर्ष की आयु में शरीर त्याग किया। कविसम्राट् ने अपने 'रसलेखा' काव्य में ग्रन्थ समाप्ति की सूचना इस प्रकार दी है:—

"दिव्यसिंह गजपति अंक सपत विंशति शेष दिने शेष एहु गीत"।

इससे सिद्ध होता है कि उपेन्द्र भञ्ज ओड़िशा (पुरी) के गजपति राजा दिव्यसिंह देव के राज्यकाल में (अर्थात् सन् १६९२-१७२० में) वर्त्तमान थे।

उपेन्द्र के पितामह धनञ्जय भञ्ज, पण्डित, कवि तथा काव्यरसिक थे। बचपन से ही उनकी अलौकिक प्रतिभा ने पितामह धनञ्जय भञ्ज को आकर्षित किया था। थोड़ी ही उम्र में उपेन्द्र ने वाल्मीकि, कालिदास, श्रीहर्ष, माघ, भोजराज, हनुमान आदि कवियों की कृतियों, एवं विश्वनाथ कविराज, आचार्य दण्डी, मम्मट भट्ट, आनन्दवर्द्धन इत्यादि के अलंकार तथा ध्वनिग्रन्थों का अध्ययन करके संस्कृत साहित्य में अगाध पाण्डित्य अर्जन किया था। आपके पिता नीलकण्ठ जी भी कवि थे। कवि-प्रतिभा बचपन से ही उपेन्द्र के रक्त-मांस में घुल-मिल गई थी। स्व-रचित 'वैदेहीश-विळास' ग्रन्थ के अन्त में आपने अपने वंश का परिचय यों दिया है:—

"वरहिवंशे उद्भव नृप धनञ्जय,
विशिष्टे घुमुसर-अधिप गुणालय।
बेनि अर्थे (दो अर्थों में) से (वे) गणेश बोलि जाण (जानो)।
बन्दन तद्वत ताँक (उनके) नन्दन प्रमाण।
वसुधापति से (वे) नीलकण्ठ नामे ख्यात,
विधानरे (विधान में) मुहिं (मैं ही) ताहाँकर (उनका) ज्येष्ठसुत।
वीरवर पद उपइन्द्र मोर (मेरा) नाम,
बारे-बारे (बार-बार) सेवारे (सेवा से) मनाइँ (मनाकर) सीताराम,
विचित्र कवित्व मार्गे प्रसरिला बुद्धि, (बुद्धि का प्रसार हुआ)
विरचिलि (रचना की) रामायण ए मो (मेरी) बड़ सिद्धि।

राजपरिवारों में सहज व्याप्त अशान्त वातावरण से घुमुसर का राजपरिवार भी मुक्त न था, किन्तु उपेन्द्र पर उस वातावरण का प्रभाव लेशमात्र न था। उनमें ज़रा भी भोगलिप्सा नहीं थी। वेशभूषा के प्रति उनकी विशेष दृष्टि नहीं थी। केवल सीताराम के चरणों में अपना तन-मन सौंपकर काव्य-रचना करना उनका एक मात्र ध्येय रहा। छोटे से घुमुसर राज्य में बँधे न रहकर एक अखण्ड प्रतिपत्तिशाली सारस्वत साम्राज्य के सम्राट् बनने की अभिलाषा ने उनके मन पर अधिकार कर लिया था। वे चाहते थे कि उनकी काव्य-सरिता देश-विदेशों तक प्रवाहित हो।

देशे-देशे हेउ ख्यात, (ख्यात हो),
मोहु (मुग्ध करे) ए रसिक चित्त,
हर हरि करन्तु (करें) एमन्त (ऐसा) हे। [रसलेखा]

## विवाह

उपेन्द्र ने नयागढ़ की राजकन्या से विवाह किया था। किन्तु उनकी अकाल मृत्यु होने पर आपने वाणपुर की राजकन्या से पुनः विवाह किया। वाणपुर-राजकन्या रूपसी, विदुषी तथा अत्यन्त पतिप्राणा थीं। वे उपेन्द्र की उपयुक्त सहधर्मिणी होकर उनके कवि-जीवन को सफल बनाने में सहायक रहीं।

## रचित पुस्तकें

कवि ने कुल ७३ काव्य-पुस्तकों की रचना की। उनमें से प्रकाशित पुस्तकों की संख्या नीचे लिखे अनुसार केवल २० है:—

लावण्यवती, वैदेहीशविळास, कोटिब्रह्माण्डसुन्दरी, प्रेमसुधानिधि, रसिक-हारावली, रसलेखा, रसपञ्चक, रामलीलामृत, छान्दभूषण, चौपदीचन्द्र, चौपदीभूषण, चित्रकाव्यबन्धोदय, कलाकउतुक, सुभद्रापरिणय, सुवर्णरेखा, अवनारसतरंग, बजारबोलि, यमकराज-चउतिशा, गीताभिधान और दशपोइ।

अप्रकाशित पुस्तकों की सूची:—त्रैलोक्यमोहिनी, हास्यार्णब, कटपाया, मुक्तावती, ब्रजलीला, चन्द्रकला, संगीतकौमुदी, शोभावती, कलावती, रसमञ्जरी, बारमासी, इच्छावती, दुर्गास्तुति, नीलाद्रीश चउतिशा, श्रीकृष्णविहार, गजनिस्तारण, गरुड़गीत, पुरुषोत्तममाहात्म्य इत्यादि।

## कवित्व तथा पाण्डित्य

उपेन्द्र भञ्ज ने प्रसिद्ध संस्कृत कवियों का अनुसरण करते हुए उनसे व्यवहृत विभिन्न अलंकारों का कृतित्व के साथ ओड़िआ साहित्य में प्रयोग किया है। संख्यातीत अन्य दुर्लभ साहित्यिक संविधानों को भी अपने विशाल-काव्य-कलेबर के गर्भ में निविष्ट करके आपने विचक्षण पाठकों के चित्त आकर्षित किये हैं। संस्कृत षट्काव्य, पुराणशास्त्र, इतिहास, ज्योतिष, आयुर्वेद, धनुर्वेद, तन्त्र, अभिधान, छान्द, अलंकार, व्याकरण, कलाविद्या, कामसूत्र, दण्डनीति, राजनीति, स्मृति, दर्शन, भूगोल आदि विषयों में आप प्रवीण थे। यह उनसे रचित ग्रन्थावली से स्पष्ट प्रतिपादित होता है। विविध रसों का सुन्दर परिपाक, चमत्कार शब्द-योजना तथा विचित्र अलंकारों का समावेश उनकी कविताओं की विशेषताएँ हैं। उनकी रचानाएँ एवं काव्य देवभक्ति, दार्शनिक चिन्ता, नम्रता, नैतिकता, सतीत्त्व-निष्ठा, आदर्श गृहस्थी, आदर्श दाम्पत्य प्रेम, देश-प्रेम, प्राकृतिक सौन्दर्य और सामाजिकता के चित्रों तथा वर्णना-वैचित्र्यों से भरपूर हैं।

कवि के सरस और श्रेष्ठ काव्यों—वैदेहीशविळास, लावण्यवती और कोटि-ब्रह्माण्डसुन्दरी में कवि-प्रतिभा का अद्वितीय वैशिष्ट्य प्रतिपादित हुआ है ।

## भक्त उपेन्द्र

हनुमान, तुलसीदास और कृपासिद्धा बलरामदास की तरह उपेन्द्र ने 'राम तारक मन्त्र' में सिद्धि प्राप्त की थी । यद्यपि आप शिव, दुर्गा, गणपति और सूर्य—इन सबकी पूजा किया करते थे, फिर भी अवतारी रघुनाथ आपके इष्टदेव थे । इसलिए आपने अपने अधिकांश काव्यों में रघुनाथ श्रीरामचन्द्र की वन्दना की है ।

"तरणिकुळर सार । आश्रयरु निरन्तर ।
कहे उपइन्द्र भञ्ज मुँ लभिछि शबद-समुद्र पार ।"
[कोटि ब्रह्माण्डसुन्दरी—छान्द-१४]

अनु०—"सूर्यवंश के श्रेष्ठ देव प्रभु रामचन्द्रजी की शरण के फलस्वरूप"—उपेन्द्र भञ्ज कहते हैं—"मैंने शब्द-समुद्र को पार किया है ।"

जनश्रुति है आप द्वादशावधानी थे । आप ई० १७२५ में अप्रकट (ओझल) हो साकेतवासी हुए ।

## वैदेहीश-विळास

ऐसा प्रतीत होता है कि उपेन्द्र भञ्ज ने अपनी बीसवें वर्ष की अवस्था में 'वैदेहीश-विळास' महाकाव्य की रचना की थी । इतनी थोड़ी उम्र में 'वैदेहीशविळास' जैसे महाकाव्य की रचना वास्तव में विस्मयकर है । इसके सम्बन्ध में एक जनश्रुति है । धनञ्जय भञ्ज ने रामचरित्र सम्बन्धी काव्य 'रघुनाथ विळास' की रचना करके उसे अपने पौत्र उपेन्द्र को दिखाया था । उसे पढ़ कर उपेन्द्र ने उत्तर दिया कि इसी विषय-वस्तु को ग्रहण करके इससे उच्चकोटि का काव्य लिखा जा सकता है । यह उक्ति धनञ्जय के प्रति उपहासास्पद होने पर भी उन्होंने उपेन्द्र से पूछा, "क्या तुम यह कर सकोगे ?" पितामह के सन्देह तथा अविश्वास का उपयुक्त उत्तर देने के लिए कृत-संकल्प होकर उपेन्द्र घोड़े पर सवार हो आराध्य देव नूआगड़ (नयागढ़) के रघुनाथ जी की शरण लेने गये । नूआगड़ से लौटते समय उन्होंने देखा कि एक साधक श्मशान में शव की पीठ पर बैठा काली का आवाहन कर रहा है । एकाएक काली का आविर्भाव होने पर उनकी दिव्य प्रभा से साधक मूर्च्छित हो गया । यह देख उपेन्द्र तुरन्त घोड़े की

पीठ से नीचे कूद पड़े, स्वयं शव पर बैठ गये और बलि दी। काली ने उनसे वर माँगने को कहा तो उपेन्द्र ने 'अलौकिक कवित्वशक्ति' चाही। देवी 'तथास्तु' कहकर ओझल हो गयीं।

घुमुसर वापस आकर 'ब' ('व' भी इसमें सम्मिलित है) वर्ण को प्रत्येक चरण के आद्य में रखकर उपेन्द्र ने 'वैदेहीशविळास' महाकाव्य की रचना की। इस काम में उन्हें एक वर्ष भी नहीं लगा।

कुछ लोगों का मत है कि नयागढ़ के श्री रघुनाथ जी की कृपा से उपेन्द्र ने 'राम-तारक मन्त्र' में सिद्धि प्राप्त की थी। कवि को इस मन्त्र पर इतना विश्वास हो गया था कि इसी मन्त्र के प्रसाद से वे 'वैदेहीशविळास' जैसे महाकाव्य की रचना थोड़े ही समय में कर सके। इस महाकाव्य के प्रथम छान्द (सर्ग) के तीसरे पद में उन्होंने 'तारक मन्त्र' के बारे में सूचना भी दी है। अपने 'लावण्यवती' काव्य में भी आपने कहा है कि—

**"तारक मन्त्र परसादे, मोहर कविपण उदे।"—**

(अर्थात् तारक मन्त्र के प्रसाद से मेरे कवित्व का उदय हुआ है।)

'वैदेहीशविळास' महाकाव्य 'ब' (व) आद्य नियम से तो रचित किया गया है। साथ ही, उसमें 'बावन' छान्द (सर्ग) हैं और प्रत्येक छान्द 'बाईस', 'बयालीस' आदि संख्यक पदों में रचित है। एक वर्ष (बावन सप्ताहों) में महाकाव्य की रचना समाप्त करके कवि-मार्त्तण्ड उपेन्द्र ने अपने पितामह धनञ्जय को यह महाकाव्य दिखाया। धनञ्जय इसे देखकर फूले न समाये और उपेन्द्र को गले लगा लिया। उन्होंने आशा की थी कि उपेन्द्र के घुमुसर नरेश होने पर अपना राज्य रामराज्य में परिणत होगा। परन्तु उनकी यह आशा आशा ही में रह गई, क्योंकि उपेन्द्र को राजपद से विराग था।

'वैदेहीशविळास' में कवि ने श्रीरामचन्द्र जी के जन्म से राज्याभिषेक तक रामायण के चित्ताकर्षक प्रसंग बड़ी चारुता से चित्रित किये हैं। अन्यान्य प्रसंग यथा वाल्मीकि के आश्रम में लवकुश का जन्म, वैदेही का पातालगमन, रामचन्द्र जी का बैकुण्ठगमन इत्यादि प्रसंग—"विभंग रस बोलिण न वर्णिलि", [इन प्रसंगों में रसों का विभंग (विशेष भंग) है, इसीलिए इनका वर्णन मैंने नहीं किया; ] कहकर कवि ने महाकाव्य का उपसंहार किया है।

महाकाव्य 'वैदेहीशविळास' अमर कवि उपेन्द्र भञ्ज की उत्कल-साहित्य को एक बड़ी देन है। भावों के गाम्भीर्य, रसों के परिपाक, भाषा का माधुर्य, छान्दों के

लालित्य, अद्‌भुत शब्दों के विन्यास तथा आलंकारिक शैलियों की दृष्टि से यह प्राचीन (माध्ययुगीन) उत्कल-साहित्य का एक अनमोल रत्न है। ओड़िआ शिल्पकला के क्षेत्र में जो गौरव 'कोणार्क मन्दिर' को प्राप्त हुआ है, काव्यकला के क्षेत्र में वही गौरव 'वैदेहीश-विळास' को प्राप्त है। केवल उत्कल-साहित्य में ही क्या, समूचे विश्वसाहित्य में इसका स्थान अत्युच्च है—यह सभी कोई मुक्तकण्ठ से स्वीकार करेंगे। महान् कवि का जन्म उत्कल प्रान्त में न होकर किसी अन्य समुन्नत देश में हुआ होता तो उनकी कीर्ति विश्वव्यापिनी होती। वे जगद्‌वन्द्य होते।

इस काव्य के छान्द (सर्ग) बहुधा क्लिष्ट हैं। फिर भी इन्होंने देहातों के अर्द्धशिक्षितों तथा अशिक्षितों के मनोराज्य को यहाँ तक अधिकृत कर लिया है कि ग्वालबाल के मुख से भी "विवुळकु आलिंगन" (नवम छान्द) का सहज गान सुनाई पड़ता है।

# वैदेहीश-विळास

राग (छन्द)—पाहाड़िआ केदार

बन्दइ दी(दि)न-बान्धव हरि[1] ये तम-चक्रखण्डनकारी
सदा कमळानन्दविस्तारी स्वभावे ईन, ये।
बिभु अनन्त-अंकबिहारी कर प्रताप यार संचरि
निशाचरङ्क उल्लास हरि पूजे सुमन, ये।
बइनतेय याहा अग्रते स्थित, ये।
बइकुण्ठ-पक्षक-लोक तोषित, ये।
बिकाश अखण्डित-मण्डळे सिह भावरे क्रीड़ित काळे
भवे तरणि होइ मञ्जुळे गिरि उदित, ये। १।

सरलार्थ—(विष्णु के पक्ष में)—गरीबों के बन्धु जिन भगवान् विष्णु ने चक्र से राहु का शिर छेदन किया था (जो शोक-समूह का अथवा अज्ञता का नाश करते हैं), जो सदा लक्ष्मी के आनन्द-बर्द्धनकारी, जो लक्ष्मीपति याने शोभा के आधार तथा अखिल विश्व के प्रभु हैं, जो अनन्त नाग पर विहार करते हैं, अपने भुजबल से जिन्होंने असुरों के आनन्द का

श्लेष व्या०—दीनबान्धव हरि—गरीबों के बन्धु विष्णु भगवान्, दिनबान्धव हरि—दिवस के बन्धु सूर्य; तमचक्र-खण्डनकारी—राहु का जिन्होंने चक्र से छेदन किया था (अज्ञता या शोक के नाशकारी), अन्धकारों के समूह के नाशकारी; कमळानन्द-विस्तारी—लक्ष्मी अथवा कमल के आनन्द-वर्द्धनकारी; स्वभावे ईन—(ईन-लक्ष्मीपति, शोभा के आधार)—प्रकृततः प्रभु तथा सूर्य; अनन्तअंकविहारी—शेषदेव (अनन्त नाग) के क्रोड़ में विहार करनेवाले, गगन में विहार करने वाले; कर-प्रताप-भुज-पराक्रम, किरणों का पराक्रम; निशाचरंक—(निशाचरों का)—राक्षसों का, उल्लुओं

---

१ किसी ग्रन्थ का आरम्भ करने के पहले महाकवि, बिना बाधा-विघ्नों के उसकी समाप्ति के लिए मंगलाचरण (आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा) करते हैं। उसी परम्परा के अनुसार कविसम्राट् उपेन्द्र भञ्ज ने 'वैदेहीशविळास' नामक महाकाव्य

हरण किया था, जिनकी पूजा देवता करते हैं, जिनके सम्मुख गरुड़ सदा प्रस्तुत रहते हैं, जो विष्णुभक्त लोगों को तृप्ति देते हैं, जो समग्र ब्रह्माण्ड में विराजित हैं, नृसिंहावतार में जिन्होंने क्रीड़ा की थी, संसाररूपी सागर में जो नौका के समान हैं, जो नीलगिरि (श्रीक्षेत्र) में प्रकाशित हुए हैं, उन्हीं विष्णु भगवान् की मैं वन्दना करता हूँ। (१)

(सूर्य के पक्ष में)—दिवस के बन्धु सूर्य जो अन्धकार समूह का नाश करते हैं, जो सदा कमल का आनन्द बढ़ाते हैं, जो 'ईन' (सूर्य) अपनी किरणों से चारों दिशाओं को उज्वल करते हैं, जिनकी तेज-प्रभा से उल्लुओं का आनन्द दूर होता है, जिनकी पूजा पण्डित करते हैं, जिनके सम्मुख अरुण सदा विद्यमान हैं, इन्द्र जिनके सहायक हैं, जिनके दर्शन से लोग सन्तोष लाभ करते हैं, जो पूर्ण गोलाकार रूप में विद्यमान हैं, सिंह राशि में जो एकदा क्रीड़ा करते हैं, जो प्रत्यह उदयाचल पर प्रकाशित होते हैं, उन्हीं दिनमणि सूर्यदेव की मैं वन्दना करता हूँ। (१)

**का; सुमन—देवता, पण्डित; वइनतेय—(वैनतेय)—गरुड़, अरुण; याहा अग्रते—जिनके सम्मुख; वइकुण्ठ-पक्षक लोक—विष्णुभक्त लोक, इन्द्र जिनके सहायक; तोषित—आनन्ददायक। अखण्डित मण्डले—समूचे विश्व में, पूर्ण गोलाकार रूप में; सिंहभावरे—नृसिंह अवतार में, सिंह राशि में; तरणी—नौका, तरणि—सूर्य; गिरि उदित—नीलगिरि (पुरुषोत्तमधाम पुरी) में प्रकाशित, उदयगिरि पर प्रकाशित। (१)**

बहित य़ेहु रोहितमूर्ति श्रु(सृ)ति-रञ्जनकारक अति,
हंस होइण य़ाहा प्रशस्ति अछि प्रवर्ति ये।

सरलार्थ—(विष्णु के पक्ष में)—जिन विष्णु ने रोहित मत्स्य का रूप धारण किया था, वेदों में परमात्मा के नाम से जिन्होंने ख्याति प्राप्त की है, जो विराट् रूपवान हैं, जिनके दर्शन प्राप्त करने के लिए ब्राह्मण चिन्तन करते हैं, जो ब्रह्मा से श्रेष्ठ (अथवा कन्दर्प से अधिक रूपवान्)

**श्लेष व्या०—रोहित मूर्त्ति—रोहित मत्स्य का स्वरूप, रक्तवर्ण; श्रुतिरंजन-कारक—वेदों के मण्डनकारी, सृतिरंजनकारक—मार्ग के शोभा-वर्द्धक; हंस—परमात्मा,**

---

का श्रीगणेश करने के पूर्व श्लेष में विष्णु तथा सूर्य का नमस्कारात्मक मंगलाचरण किया है। प्रथम तथा द्वितीय पद्य में विष्णु और सूर्य दोनो ही की वन्दना उपलब्ध है। दोनो की वन्दना में वे ही शब्द विष्णु तथा सूर्य के प्रति भिन्न-भिन्न अर्थ देने लगते हैं। विद्वान् पाठकों के मनोरञ्जनार्थ श्लेष पदों एवं अन्य देशज तथा संस्कृत शब्दों की व्याख्या आवश्यकतानुसार पद्य के नीचे दी जारही है।

बिराज रूप ग्राहार पुणि द्विजचक्र या दर्शन गुणि,
आत्मभूपर संसारे भणि कि शुभ्रकीर्त्ति ग्रे।
बुधजनक - शिरभूषण ग्रेहि, ग्रे।
विनयरु ये आन वाणी न कहि, ग्रे।
बळि याहाकु सर्वदा नाहिं द्वी(द्वि)प प्रसन्न करता सेहि,
पुनत धर्मस्वरूपग्राही कि स्तुति तहिं, ग्रे ।२।

हैं, जिनकी कीर्त्तियाँ शुभ्र हैं, महादेव शंकर जी जिनसे विना विनय के शब्द नहीं बोलते, ब्रह्माण्ड में जिनसे बढ़कर दूसरा कोई बलवान् नहीं है, जिन्होंने (ग्राह के मुख से रक्षा करके) गज को आनन्द दिया, जो धर्म पर स्थित जन के रक्षक हैं–ऐसे विष्णु भगवान् की स्तुति किन शब्दों में करूँ ? (२)

(सूर्य के पक्ष में)–जो सूर्य रक्तवर्ण मूर्ति धारण करते हैं, जो मार्ग की शोभा बढ़ाते हैं, जिनका नाम हंस है, जिनके विराजमान (प्रकाशमान) रूप के दर्शन के लिए चक्रवाक सर्वदा उत्कण्ठित रहते हैं, जो श्रेष्ठ ब्रह्म के नाम से ख्यात हैं, जिनकी किरणें बड़ी शुभ्र हैं, पण्डित लोग जिनसे सदा विनय करते हैं, जिनसे बढ़कर तेजस्वी और कोई नहीं है, जो सप्तद्वीपों के प्रकाशक (उज्वलकर्त्ता) हैं, फिर जो 'धर्म' नाम से अभिहित हैं, ऐसे सूर्यदेव की स्तुति किस प्रकार करूँ ? (२)

**सूर्य; विराज रूप—विराट रूप, विराजमान रूप; द्विजचक्र—ब्राह्मणसमूह, पक्षी चक्रवाक; आत्मभू—ब्रह्मा, कन्दर्प; पर—श्रेष्ठ; बुधजनक (चन्द्र)—शिरभूषण—चन्द्र जिनके शिर पर भूषित अर्थात् महादेव, बुधजन—पण्डित व्यक्ति, शिरभूषण—शिरोमणि; द्विप—हाथी, द्वीप—सप्तद्वीप; धर्मस्वरूपग्राही—धार्मिक के रक्षक, जो धर्म नाम से अभिहित। (२)**

बिष्टरश्रवा ब्रह्माण्डेश्वर परम पद भजिला नर,
लभे, ए घेनि ग्रन्थ आद्यर भावित तांकु, ग्रे।

सरलार्थ–जगत्कर्ता विष्णु को भजने वाला व्यक्ति बैकुण्ठ लाभ करता है। और सूर्य देवता से सूर्यवंश का उद्भव हुआ है। इसलिए विष्णु तथा सूर्यदेव की स्तुतियाँ करके ग्रन्थ का श्रीगणेश करूँगा–इसी विचार से दोनों देवों की स्तुतियाँ की हैं। हे बुद्धिमान् पण्डितो ! मेरा

**विष्टरश्रवा—विष्णु; परमपद—बैकुण्ठ, भजिला—भजने वाला; लभे—प्राप्त करता है; ए घेनि—यह लेकर (इस लिए); आद्यर—आरम्भ में; भावित तांकु—**

बंश याहारठारु उत्पत्ति कवि विचारे से देवे स्तुति,
विधान करि अति सुमति आण मनकु, ये।
बर्ण अभंग-सभंगरे ए श्लेष, ये।
बुझ स्थान-स्थानके करि प्रकाश, ये।
बळाइ चित्त अनवरत भाग्ये ग्रहण तारक मन्त्र,
सीता-श्रीराम-चरित-गीत कृते लाळस, ये। ३।

अभिप्राय मन में लाओ। वर्णों के, अभंग तथा सभंग, दो—अर्थबोधक श्लेष अलंकारों में मैंने ये स्तुतियाँ प्रकाश कीं। हमेशा कविता लिखने की ओर मैंने रुचि बढ़ाई थी। सौभाग्य से 'राम तारक मन्त्र' ग्रहण किया। उसी मन्त्र के प्रसाद से मुझ में कवित्व की स्फूर्ति हुई। इसलिए सीता-श्रीराम-चरित-संबन्धी गीत लिखने की मन में अभिलाषा हुई। (३)

**उनकी स्तुति करता हूँ; याहारु ठारु—जिनसे; से देवे—उन देव को; सुमति—बुद्धिमान; आण—लाओ; ए-यह; बुझ-समझो; बलाइ चित्त—मन में अभिलाषा करना; (३)**

बाल्मीकि, व्यास कवि यहिँरे महाकाव्य के पुराण करे,
महानाटक बातसुतरे हेले रचिता, ये।
बिहिले काव्य ये कालिदासे चम्पू-रचना भोज नरेशे
कृपासिद्धा ए गीत प्रकाशे छाड़िलि चिन्ता ये।
बिवेकहिँ उदय एमन्त ध्यायि, ये।
व्योमे तारका येबे झलकुथाइ, ये।
बिभावरीरे ज्योतिरिंगण— गण ज्योतिकि देखान्ति पुण
सुजने सावधानरे शुण छान्द रचइ ये। ४।

सरलार्थ—जिन राम-सीता के वृत्तान्त पर वालमीक 'रामायण', व्यासदेव 'अध्यात्म रामायण', हनुमान् 'महानाटक', कालिदास 'रघुवंश' भोजराज 'चम्पू', सिद्धकवि बलराम 'दाण्डि रामायण' आदि ग्रन्थों की रचना कर चुके है, मैं उनके बारे में और क्या अधिक लिखूँ, यह सोचकर मैं सकुचा रहा था। परन्तु यह ध्यान में लाकर कि रात में आकाश पर तारों के चमकने पर भी जुगनू सब अपनी-अपनी ज्योति दिखाते हैं, मुझमें विवेक का

**यहिँरे—जिसमें; के—कोई; करे—करते हैं; हेले—हुए; बिहिले-विधान किया;**

उदय हुआ। मैंने संकोच त्याग कर यह ग्रन्थ रचना करने की ओर ध्यान दिया। हे सुजनो! सावधानी से सुनो। (४)

येबे—जब; झलकुथाइ—झलकते हैं; पुण—फिर शुण—सुनो; बावसुत—हनुमान (कवि); (४)

बिद्युतकेश वंशरे जात, सुमाळी माळी ये माल्यवन्त,
स्वर्ग लुण्ठने अहि-अहित[1] धिआन करि, ये।
बिधु-समरे[1] ज्योति ज्वळित विधु-समरे[2] हेले आगत
से आरोहित अहि-अहित[2] गदाब्ज धरि, ये।
बजाइण शंखारि[1] करेण घात, ये।
बध कले शंखारि[2] द्वितीय भ्रात, ये।
बड़भी लभि पाताळे लुचि लंका[1] बड़भिपुरकु मुञ्चि
लंका[2] ये दण्डपाणिरे रचि भय येमन्त, ये। ५।

सरलार्थ—विद्युत्केश नामक राक्षसवंश में सुमाली, माली और माल्यवन्त के नामों से तीन पुत्र पैदा हुए थे। उनके स्वर्ग लूटने पर इन्द्र ने विष्णु का ध्यान किया। ज्योत्स्नासम प्रभामय विष्णु इससे क्रुद्ध हो अपने आयुध गदा-पद्म धारण किये गरुड़ पर आसीन होकर देवासुर-समर में आविर्भूत हुए। उन्होंने चक्राघात से माली और माल्यवन्त—दो राक्षसों का निधन करके शंखनाद किया। यह देखकर सुमाली डर के मारे लंकागढ़ का त्याग कर पाताल में जा छिपा, जैसे विटपी स्त्री राजभय से छिपती है। (५)

हेले—हुए; से—वे (उन्होंने); धरि—धारण करके; बजाइण—बजाकर; कले—किया; लुचि—लुक (छिप) कर; मुञ्चि—छोड़ कर; येमन्त—जैसा; अहि-अहित[1]—वृत्रासुर का अहित करने वाले इन्द्र; विधु समरे[1]—चन्द्र के समान; विधु समरे[2]—देव-युद्ध में; अहि-अहित[2]—(अहि नाम सर्प उसका अहित करने वाला) गरुड़; गदाब्ज—गदा-पद्म; शंखारि[1]—शंख—चक्र; शंखारि[2]—शंख राक्षस के शत्रु (विष्णु); बड़भी—बड़ा भय; बड़भिपुर—चन्द्रशाला गृह; लंका[1]—लंकापुरी; लंका[2]—विटपी स्त्री; (५)

बाहार पुण्यजने[1] होइले विहार पुण्यजने[2] विहिले
रञ्जन पुण्यजन[3] कुबेरे से दीप्तिमान, ये।

सरलार्थ—राक्षस लोग लंकापुर से निकल गये, उत्तम लोगों ने वहाँ आकर विहार किया। यक्षों के साथ कुबेर के वहाँ रहने पर लंकानगर

वास नगर पाश नगर नगरतळे करि सत्वर
जगत - तात - सुत कुमर कले से स्थान, ग्रे ।
बहु समय अन्ते एहि प्रकारे, ग्रे ।
वार्त्ता पाइ सुमाळी एमान चारे, ग्रे ।
विश्रवा ऋषिर सन्निधिकि नेला दूहिता रसनिधिकि
शोभारे करे से धिकि धिकि नारीमातरे, ग्रे । ६ ।

ने अशेष शोभा धारण की । नगर के पास सुवल पर्वत के नीचे एक वृक्ष के मूल को अच्छा स्थान समझ कर विश्रवा ऋषि ने वहाँ अपना आश्रम बनाया । कुछ दिनों के बाद सुमाली, दूतों से इन समाचारों का पता लगा कर शृंगार रस की निधि अपनी दुहिता (निकषा) को लिये विश्रवा ऋषि के यहाँ पहुँचा । वह कन्या अपनी शोभा से नारी मात्र को धिक्कारती थी । (६)

**बाहार होइले—निकल गये; पुण्य जने[१]—राक्षस लोग; पुण्यजने[२]—उत्तम जन; पुण्यजन[३]—यक्षगण; वासनगर—लंकापुर; पाशनगर—पास के नग (पर्वत) के (लोग); नगर तले—वृक्ष के मूल में; जगत-तात-सुत-कुमर—जगत्पिता ब्रह्मा के सुवन पुलस्त्य के सुत विश्रवा (रावण के पिता); नेला—लिया; (६)**

बांके अनाइँ अंके पकाइ से पंकेरुह शरकु नेइ
शंके मदन आतंके तहिं मुनि उत्तम । ग्रे ।
बोले सुन्दरी, कोळे मो बस तुले मज्जि तो होइबि तोष
भुले तो रूपे मोर मानस प्रकाश प्रेम, रे ।
बामा ओळगि सनमन कराइ, ग्रे ।
बह्नि साक्षिरे विभा भाव बढ़ाइ, ग्रे ।

सरलार्थ—उस कन्या (निकषा) ने टेढ़ी नजर से ऋषि की ओर देखा और कन्दर्प के शरतुल्य अपने पद्म-नेत्रों से उनकी ओर कटाक्षपात किया । मुनिश्रेष्ठ विश्रवा कामदेव के भय से भीत हो बोले, "हे सुन्दरि ! मेरी गोद में बैठो । तुम्हारे रूप से मेरा मन विभोर हो गया है । प्रेम प्रकाश करो ।" वामा ने प्रणामपूर्वक अपनी सम्मति प्रकट की । अग्नि देवता की साक्षी में दोनों का विवाह संपन्न हुआ । सन्ध्या के समय दोनों सुरति-रस में मग्न हुए । निकषा तो राक्षसी ही थी । फलस्वरूप, उसके

बेगे सुरत रत सन्ध्यारे सन्ध्यामट्टी से तार गर्भरे
जात होइले रक्ष शरीरे सुततनयी, ये । ७ ।

गर्भ से ठीक समय पर राक्षस-शरीरों में पुत्रों और कन्या का जन्म हुआ । (७)

**बाँके अनाइँ—कटाक्ष किया; पकाइ—डाल कर; नेइ—लेकर; कोले—गोद में; ओलगि—प्रणाम करके; सन्ध्यामट्टी—राक्षसी; (७)**

बिंशतिभुज दशाननरे कि दशा देब देव किन्नरे,
नर नागरे धरणी थरे हेउँ पतन, ये ।
बिकट रूप प्रकट अति रकत परा व्यकत कान्ति
घटण घट-सदृश श्रुति भैरव स्वन, ये ।
बधिरता निकट शुणिला जन, ये ।
बिगत ये भीषणे तिनि नन्दन, ये ।
बोलाइले से दशवदन कुम्भ-श्रवण ये विभीषण
नन्दिनी सूर्पणखार नख सूर्प समान ये । ८ ।

सरलार्थ—निकषा के गर्भ से सर्वप्रथम बीस भुजा तथा दशमुख वाला एक पुत्र भूमिष्ठ होते ही, 'वह देव, किन्नर, नर तथा नाग लोगों की क्या गति करेगा' ऐसा सोचकर धरणी काँप उठी । उसके बाद अति भयंकर रूप, रक्तवर्ण-कान्ति तथा घट सदृश कान धारण किये द्वितीय पुत्र उत्पन्न हुआ । उसके गर्जन से निकट के लोग बहरे हो गये । एक तृतीय पुत्र, जो भय-रहित (सुन्दर) था, पैदा हुआ । वे क्रमशः दशानन, कुम्भकर्ण तथा विभीषण के नाम से विख्यात हुए । जो कन्या उत्पन्न हुई, उसके नाखून सूप जैसे थे, इसलिए उसका नाम सूर्पनखा पड़ा । (८)

**देब—देगा; थरे—काँपने लगी; शुणिला जन—सुननेवाले लोग; (८)**

बृद्धि यतन दिनकु दिनु, गिरिसमरे दिशिला तनु,
गिरीषमरे ए अनुमानु नुहइ आन, ये ।
बिशाळ महाशाळ कि कर, सानु समाने उन्नत शिर,
कृशानुपरि तेजनिकर ज्वळित घेन, ये ।

सरलार्थ—लड़के यत्न से दिनों दिन बढ़ने लगे । उनके शरीर ग्रीष्म ऋतु के पर्वतों की तरह दीखने लगे । यह अनुमान से भिन्न नहीं । उनके हाथ महाशालवृक्षों की तरह विशाल हुए, शिरों ने पर्वतों की चोटियों

बिद्यमान कोटर तथा लोचन, ये ।
बर्द्धमान करता जीव शोचन, ये ।
बुलिले पुरे पुरे स्वच्छरे मातिले नाना द्रव्य भक्ष रे
गला द्वादश सम्बत्सररे ये कुम्भकर्ण, ये । ९ ।

तथा नेत्रों ने गुफाओं का आकार धारण किया और शरीरों का तेज आग के समान चमक उठा । उन्होंने सब प्राणियों का शोक बढ़ाया । मन-माने ढंग से चारों ओर घूमकर नाना द्रव्य भक्षण किये । इसी तरह बारह वर्ष बीत गये; उसके बाद कुम्भकर्ण ने–(९)

**दिशिला—दीखे; नुहइ—नहीं है; आन—दूसरा; सानु—सींग; घेन-ग्रहण करो; कोटर—गुहा; बुलिके—घूमे; मातिले—मदमाते; गला—बीत गया; (९)**

बहुत जनजीवन नेइ उत्तरकुरु - प्रदेशे याइ
उत्तर क्रूरतर न सहि इन्द्रे न मानि, ये ।
बज्रघातकु मणि इतर उत्पाटि दन्त ऐरावतर
प्रहारे मोह सुरईश्वर पळाइ घेनि, ये ।
विभीषण पक्षरे द्वन्द्व रचित, ये ।
बप्ताश्वशुर - स्थाने दशास्य गत, ये ।
बिरोजामण्डल रे तपस्या जगज्जय रे करि मनीषा
अशनहीने दिवस निशा काळ बञ्चित, ये । १० ।

सरलार्थ–[इसके अनन्तर कुम्भकर्ण ने] मार्ग पर बहुत जनों तथा प्राणियों का विनाश करके स्वर्ग में जाकर नाना उपद्रव मचाये । इन्द्र को न मानकर उनसे कटु शब्द कहे । इन्द्र के बज्र-प्रहार को तुच्छ समझा और ऐरावत हाथी के दाँतों को उखाड़कर उनसे इन्द्र को पीटा; जिससे इन्द्र मूर्च्छित हो गये । ऐरावत उन्हें ले भागा । विभीषण ने यक्षलोक में युद्ध छेड़ दिया । रावण पातालपुर की विजय के लिए गया । इस प्रकार तीनों भाई तीन पुरों में युद्ध समाप्त करके जगज्जय करने की इच्छा से विरजादेवी के पीठ-स्थान में निराहार दिन-रात तपस्या करने लगे । (१०)

**नेइ—लेकर; उत्तर कुरु—स्वर्ग; याइ—(जाइ) जाकर; मणि—समझ कर; सुरईश्वर—इन्द्र; पलाइ घेनि—ग्रहण करके (लेकर) भाग गया; बप्ताश्वशुर—पिता विश्रवा की ससुराल, सुमाली का वासस्थान (पाताल); दशास्य—रावण; मनीषा—इच्छा; (१०)**

बिखन भाल लेखनवर्ण मुण्ड प्रचण्डानळे दहन
करिण कला ज्येष्ठ पठन कृष्ट अत्यन्त, ये ।
बल्लकी रचि भुज मूर्द्धारे से दण्ड तुम्बी भावे श्रद्धारे
धमनी गुण करि वेधारे विनयी गीत, ये ।
बाउँ गाउँ होइले आसि प्रसन्न, ये ।
बर कामना पूर्ण कले प्रदान, ये ।
बर्त्तिबु युग छपन गण्डा बरणी हेब ब्रह्माण्डे खण्डा
सीताहरण निश्चें मरण कारण जाण । रे । ११ ।

सरलार्थ—ज्येष्ठ रावण ने अपने शिरों को प्रचण्ड अनल में आहुति देते समय अपने ललाट-पट पर विधि-अंकित अक्षरों को बड़े कष्ट के साथ पढ़ा । [अपने भाग्य में अच्छाई नहीं—यह जान कर] उसने अपनी एक भुजा को वीणा का डंडा, मुण्ड को तुम्बी तथा शिराओं (नाड़ियों) को तार बनाकर उसी वीणा से विनय के साथ ब्रह्मा जी का स्तव-गान किया । प्रसन्न हो ब्रह्मा ने आकर कहा, "तू ५६ (छप्पन) गण्डा (अर्थात् ४×५६) युगों तक जीवित रहेगा । तेरी तलवार सारे जगत में पूजा पायेगी । (अर्थात् तू जगज्जयी होगा ।) परन्तु सीता का हरण तेरी मौत का कारण होगा—यह याद रख ।" (११)

**बिखन—विधाता; बल्लकी—वीणा; वेधारे-ब्रह्मा के प्रति; बाउँ गाउँ—बजाने तथा गाने से; बर्त्तिबु—(तू) जीवित रहेगा; गण्डा—चार संख्या का समूह; बरणी हेब—वरणीय (पूजनीय); खण्डा—खड्ग; (११)**

बेभारे सीता बहु योषिता ये होइथिब जनकसुता
बहुत राम परकाशिता ये दाशरथि, ये ।
बाग्देवी आसि बसिले गले कुम्भकर्णर वरद काले
निद्रा मुँ यिवि बोलि चपळे मागिला तथि, ये ।

सरलार्थ—संसार में सीता नाम की बहुत स्त्रियाँ हो सकती हैं तथा राम नाम के बहुत व्यक्ति भी हो सकते हैं । इसलिए रावण का सन्देह दूर करने के लिए ब्रह्मा जी ने बताया, "जो सीता जनक की कन्या होंगी, उन्हीं का हरण करने से दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र तेरा वध करेंगे । कुम्भकर्ण को वर देते समय सरस्वती आकर उसके कण्ठ में बैठीं । अतः उसने शीघ्रता से "मैं सो रहूँगा" यह वर माँग लिया । यह सुनकर ब्रह्मा

बत्सरक न पूरु उठिबु य़ेबे, रे।
बध अवश्य हेब तोहर तेबे, रे।
बिष्णु - भकत होइ अमर जगत मध्ये कर बिहार
गत पद्मज देइ ए वर सानुजे जबे, य़े। १२।

ने वरदान दिया, "एक वर्ष के पूर्ण होने के पूर्व यदि तू जगेगा, तो तेरा विनाश अवश्य होगा।" "विष्णुभक्त व अमर हो, जगत में तू विहार कर"—यह वरदान छोटे भाई विभीषण को देकर ब्रह्मा जी जल्दी वहाँ से चले गये। (१२)

**बेभारे—जगत में; योषिता—स्त्रियाँ; निद्रा मुँ यिबि—मैं सोने को जाऊँगा; वत्सरक.........तोहर तेबे—एक वर्ष पूर्ण होने से पूर्व (निद्रा से) यदि तू उठेगा तो तेरा वध अवश्य होगा; पद्मज—ब्रह्मा; सानुजे—विभीषण को; (१२)**

बाहुड़ि तहुँ पाताळे राजि निकषात्मज पुञ्जकु साजि
बेढ़िले लंका कुबेर तेजि गला से पुर, य़े।
विमाने[१] नेला सर्व सम्पत्ति वि-माने[२] य़था गगने गति
से मनोरथ रथ प्रापति इच्छि समर, य़े।
विश्वे उत्कट प्रभा प्रकट करि, य़े।
बिधुन्तुद विधुकु ग्रासिला परि, य़े।
बिश्वकेतुरे होइ अदम्भा शोभा-आरम्भा रम्भा सुरम्भा-
उरुकु हरि होइला विभा मयकुमारी, य़े। १३।

सरलार्थ—वे तीन भाई ब्रह्मा जी से वर प्राप्त करने के बाद वहाँ से लौट पातालपुर में प्रविष्ट हुए। असुरों को इकट्ठा करके लंका नगरी पर चढ़ाई की। कुबेर पुष्पक यान पर बैठ सारी संपत्ति साथ लिये लंकापुरी छोड़ गये, जैसे चिड़ियाँ आसमान पर उड़ जाती हैं। रावण मनचाही गति करने वाले पुष्पक विमान को प्राप्त करने के उद्देश्य से कुबेर से लड़ने के लिए गया और बलात् उनसे विमान छीन लाया। भयंकर तेज प्रकाश करके सारे संसार को उसने ग्रस डाला (जीत लिया) जैसे राहु चन्द्रमा को ग्रसता है। कन्दर्प-पीड़ा से कातर हो उसने परमासुन्दरी

**बाहुड़ि (बहुरि)—लौट कर; वहुँ—वहाँ से; निकषात्मज पुञ्जकु—असुर गण को; बेढ़िले—घेर लिया; विमाने[१]—पुष्पक विमान में; वि-मान[२]—पक्षी के समान; विधुन्तुद—राहु; बिश्वकेतु—कन्दर्प; अदम्भा—दम्भहीन, कातर, शोभा आरम्भा—**

# क़ुर्आन शरीफ़ [ हिन्दी ]

बीस साल की मुसल्सल अ़िल्मी मिहनत के बाद देवनागरी रस्मुलख़त में क़ुर्आन शरीफ़ छप कर अवाम की पेश नज़र है। इसमें मिलते-जुलते हुरूफ़ मसलन ज़ाल, ज़े, ज़ाद, ज़ो वग़ैर: को अलाहद: मुमताज़ करते हुये रुमूज़ औक़ाफ़ (विरामाविराम चिह्न), आयत संख्या, वक़्फ़ नबी स०, ब० मंज़िल, व० ग़ुफ़रान, वक़्फ़ लाज़िम, हर पारे के रुबअ़, निस्फ़, सुल्स, रुकूअ़, सज्द:, मद्द, हमज़: साकिन, हमज़ए वस्ल, मुआनक़:, हर सफ़े पर आयत ख़त्म, शुमार मंज़िल, पार: और सूर:, ग़रज़ कि शास्त्रीय अ़रबी पद्धति पर इमकानी सूरत में सही तिलावत (पाठ) का पूरा इहतियात मुहय्या किया गया है। हिन्दी रस्मुलख़त में आयतें लिखने के साथ-साथ हर सफ़े पर क़ुर्आन शरीफ़ के असली ख़त याने अ़रबी ख़त में इन्तहाई सही ब्लाक भी देकर नक़्स की गुन्जाइश ही ख़त्म कर दी गई है। साथ-साथ आसान आम फ़हम ज़बान में, मुस्तनद उर्दू तर्जुमों की बुनियाद पर, आलिमों की नज़रसानी के बाद, हिन्दी तर्जुमा व तफ़्सीरी नोट्स को भी मतन (मूल) के मुक़ाबिल दिया गया है।

हिन्दी रस्मुलख़त में क़ुर्आन शरीफ़ को पढ़ने-लिखने के क़वायद, तलफ़्फ़ुज़, इदग़ाम, वस्ल-फ़स्ल व अनेक याद-दहानियों का एक वसीअ़ चार्ट, और मज़ामीन की फ़िहरिस्तों ने हिन्दी में तरीक़े तिलावत को निहायत आसान कर दिया है। अलावा, मौलाना सय्यद अबुल हसन अ़ली अल्हसनी अल्मदनी जनाब अ़ली मियाँ साहब ने इस हिन्दी क़ुर्आन शरीफ़ पर 'पेश लफ़्ज़' लिख कर इस मिहनत को ज़ीनत बख़्शी है।

स्व० डा० ज़ाकिर हुसैन साहब राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश सरकार, मुस्लिम युनीवर्सिटी अलीगढ़, निज़ाम ट्रस्ट हैदराबाद, यू० पी० सुन्नी वक़्फ़ बोर्ड लखनऊ वग़ैर: से इस बेशबहा मिहनत को सताइश व इमदाद इनायत होने का फ़ख़्र हासिल है। इस बड़े कारनामे का हद्य: (उपहार) भी महज़ ३५'०० रखा गया है। ३) डाक ख़र्च अलाहद:। कमज़ कम ५'०० फ़ी जिल्द पेशगी ज़रूर इनायत कर मश्कूर फ़रमाइये।

---

प्राप्ति स्थान—भुवन वाणी, १०६, रानीकटरा, लखनऊ-३

क़ुर्आन शरीफ़ तर्जुमा—हिन्दी में प्रामाणिक पूर्ण अनुवाद। १०'००
डाक ख़र्च अगल।

पारः अम्म मूल—पठनविधि और संकेताक्षरी सहित। १'००

| | | बच्चों के पाठ के लिए | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पारः | अलम् | मतन (मूल) | " | " | '६० |
| " | सयक़ूलु | " | " | " | '६० |
| " | तिलकर्रुसुलु | " | " | " | '६० |
| " | लन्तना | " | " | " | '६० |
| " | वल् मुह्सनातु | " | " | " | '६० |
| " | लाय हिब्बुल्लाहु | " | " | " | '६० |

तरकीब नमाज़ हिन्दी में—मूल्य १'०० (छप रही है।)

पैग़म्बरी दुआएँ हिन्दी—मूल्य १'००

हिन्दी में कुछ इस्लामी जीवनचरित्र

पैग़म्बरे इस्लाम, ००'५० हज़रत अबूबकर, ००'५० हज़रत उमर, ००'५०
हज़रत उस्मान, ००'५० हज़रत अली, ००'५०।

# 'अरब' एक संक्षिप्त इतिहास

मैकमिलन कम्पनी लंदन से प्रकाशित और अरब के इतिहास पर निहायत मक़बूल पी० हिट्टी की अंग्रेजी पुस्तक का एक एडिशन के लिए कापीराइट हासिल कर हिन्दी में योग्य विद्वानों से हिन्दी तर्जुमः (अनुवाद) करवा कर छापा गया है। हर लाइब्रेरी, स्कूल, कालेज, यूनीवर्सिटी और इल्म से शौक़ रखनेवाले साहबान को इसकी एक प्रति जरूर ख़रीद कर रखना चाहिये। एकही एडिशन छापने का इख़्तियार मैकमिलन कम्पनी से हासिल हुआ है, इसलिए ख़त्म हो जाने पर फिर यह हिन्दी में दस्तयाब न होगा। नक्शों से सजी इस सजिल्द पुस्तक का मूल्य सिर्फ़ ८'०० है। डाक ख़र्च अलग।

प्राप्ति स्थान—भुवन वाणी १०९, रानीकटरा, लखनऊ-३

# रामायण कृत्तिवास हिन्दी में

गोस्वामी तुलसीदास से एक शती पूर्व सन्त कृत्तिवास रचित बंगला की अति लोकप्रिय 'रामायण कृत्तिबास' के पाँच काण्ड का ललित हिन्दी पद्यानुवाद तथा बंगला मूल पाठ का देवनागरी लिपि में लिप्यन्तरण हिन्दी भाषी समुदाय के लिए अनायास बंगला का ज्ञान प्राप्त कराने में नितांत सक्षम है। अनेक नये और अद्भुत कथा-प्रसंगों को पढ़ते हुये बंगला और हिन्दी दोनों भाषाओं के काव्य रस का आनन्द उठाइये। एक दूसरे की सहायता से दोनों भाषाएँ बिना शिक्षक की सहायता के सरलता से सीखी जा सकती हैं। इसके 'आदिकाण्ड' के प्रथम संस्करण के प्रकाशित होने पर हिन्दी समिति, उत्तरप्रदेश द्वारा उसको पुरस्कृत होने का गौरव प्राप्त है। भूमिका—स्वामी रामकृष्ण परमहंस आश्रम, बिलूरमठ, हावड़ा। सजिल्द पाँच काण्ड का मूल्य १२'००। डाक खर्च २) अलग। जो सज्जन आदिकाण्ड पहले खरीद चुके हैं उनके लिए बाक़ी चार काण्ड भी ७'०० में उपलब्ध हैं।

# जपजी सुखमनी साहब

मूल गुरुमुखी पाठ और उसका ललित पद्यानुवाद दोनों देवनागरी अक्षरों में, छप कर तैयार हैं। गुरु नानकदेव की वाणी का रस गुरमुखी और हिन्दी दोनों भाषाओं में आस्वादन कीजिये। मूल्य ४'०० मात्र।

## स्वामी रामतीर्थ-साहित्य

१. यथार्थ समाजवाद २॥) २. गृहस्थ-धर्म २॥)
३. व्यावहारिक वेदान्त २॥) ४. विश्व-धर्म २॥)
५. राष्ट्रीय-धर्म २॥) ६. सफलता-सोपान २॥) ७. नक़द धर्म २॥)

# वाणी सरोवर

( अपने ढंग का निराला त्रयमासिक पत्र )

हिन्दी, उर्दू, अरबी, फ़ारसी, संस्कृत, पाली-प्राकृत, पारसी, बंगला, असमी, ओड़िया, कश्मीरी, मराठी, गुरमुखी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयाळम, सिंधी आदि भाषाओं तथा अनेक बोलियों के सत्साहित्य को, देवनागरी लिपि में धारावाहिक सानुवाद लिप्यन्तरण द्वारा, भारत के जन-जन तक पहुँचाना, अधिकाधिक भाषाओं का शिक्षण, प्रसारण और ज्ञान प्राप्त कराते हुये इनको

एक सूत्र में पिरोना—यही 'वाणी सरोवर' का पावन उद्देश्य है। पत्र का पत्र और, धारावाहिक प्रकाशन होने से, सभी भाषाओं के सानुवाद लिप्यन्तरित अनेक पूर्ण-ग्रंथ इस पत्र द्वारा उपलब्ध होंगे। मूल्य १०.०० वार्षिक। एक प्रति का २.५० मात्र।

# प्रचारित पुस्तकें

**बंकिम साहित्य**—यों तो लोग गली-लगी छाप कर बेच रहे हैं। परंतु बंगला भाषा से हिन्दी में मूर्धन्य अनुवादक साहित्यमनीषी स्व० श्री रूपनारायण पाण्डेय द्वारा अनुवादित सम्पूर्ण प्रामाणिक बंकिम सीरीज़ हमारे ही यहाँ से प्राप्त है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| आनन्दमठ २।।) | विषवृक्ष २।।) | चन्द्रशेखर २।।) | कपालकुण्डला २।।) |
| कृष्णकांत का वसीयतनामा | २।।) | बंगशार्दूल सीताराम | २।।) |
| देवी चौधरानी | २।।) | राधारानी ।।) | दुर्गेशनन्दिनी २।।) |
| मृणालिनी २।।) | इन्दिरा २।।) | राजसिंह ३) | रजनी २।।) |
| युगलांगुरीय ।।) | लोकरहस्य २।।) | कमलाकान्त का पोथा | २।।) |
| राजमोहन की स्त्री २।।) | नवाबनन्दिनी ३।।) | मृण्मयी | ३।।) |

**राष्ट्रीय आल्हा**—प्राग् ऐतिहासिक काल से चीनी आक्रमण पर्यन्त भारत के शौर्य-पराक्रम का इतिहास वीर आल्हा छन्द में वर्णित। भाषा खड़ी बोली सरल और वीर रसपूर्ण है। भूमिका-लेखक पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी। मूल्य ३.०० मात्र।

**टाम काका की कुटिया (सचित्र)**—[अंकिल टाम्स केबिन (अंग्रेज़ी) का भावानुवाद], अफ़्रीकी ग़ुलाम-व्यापार की दर्दनाक कहानी। अमरीका से दास-व्यापार को समाप्त कराने में इस पुस्तक का बड़ा हाथ रहा। मूल्य १।।)

**सम्राट् नीरो**—सामन्तवादी युग के रोमन साम्राज्य के अत्याचारी काण्डों का रोमाञ्चकारी उपन्यास 'कोवाडिस' का हिन्दी रूपान्तर। मूल्य ४।।)

**हरिश्चन्द्र**—टीका सहित पद्याख्यान। मूल्य १)

**हमारा भोजन**—उत्तरप्रदेश राज्य द्वारा पुरस्कृत। आहार शास्त्र पर वैज्ञानिक पुस्तक। लेखक श्री ज्ञानेन्द्रनाथ शुक्ल। मूल्य १।।)

**भारतीय कृषि विज्ञान**—चार खण्डों में सम्पूर्ण। अनाज, सब्ज़ी, फल, फूल, मेवा की खेती तथा बागवानी का विस्तृत वर्णन अगणित चित्रों सहित इतने सरल ढंग से समझाया गया है कि सामान्य ज्ञान वाले भी इस एक पुस्तक की सहायता से सफल फ़सल तैयार कर सकते हैं। टाइप के अक्षर मोटे हैं—वृद्ध और नवसाक्षर भी पूरा लाभ उठा सकते हैं। मूल्य ७।।)

नोट—प्रत्येक आर्डर के साथ चतुर्थांश पेशगी रुपया आना जरूरी है।

प्राप्ति स्थान—भुवन वाणी, १०९ रानीकटरा, लखनऊ—३

# भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ

## जो कार्य किये जा रहे हैं:—

१—(तमिल) कम्ब रामायण (सानुवाद लिप्यन्तरण)
२— ,, तिरुक्कुरळ् ,,
३—(तॅलुगु) रंगनाथ रामायण ,,
४—(असमिया) माधव कंदली रामायण ,,
५—(बंगला) कृत्तिवास रामायण लंका काण्ड ,,
६—(मलयाळम) तुञ्चत्त् एळुत्तच्छन् कृत महाभारत ,,
७—(ओड़िआ) वैदेहीश-विळास—उपेन्द्र भञ्ज कृत ,,
८—(उर्दू) 'उमराव जान अदा' के प्रसिद्धि-प्राप्त श्री 'रुसवा' का चारित्रिक (नैतिक) उपन्यास "शरीफ़ज़ादः"।
९—(फ़ारसी) दाराशिकोह कृत ५१ उपनषिदों के फ़ारसी-भाष्य (डॉ० ताराचंद द्वारा सम्पादित तथा ईरान में प्रकाशित 'सिर्रे अकबर') का धारावाहिक हिन्दी अनुवाद।
१०—(अ़रबी) रियाज़ुस्सालहीन—(ज़ादॆ शरीफ़) इस्लामी हदीसों के प्रामाणिक समुच्चय का हिन्दी संस्करण।
११—(वाणी सरोवर)—विविध भाषाओं के उपरोक्त अनुपम ग्रंथों का सानुवाद धारावाहिक देवनागरी लिप्यन्तरण का त्रयमासिक पत्र—वार्षिक मूल्य १०·००।
१२—इनके अतिरिक्त संस्कृत, पाली-प्राकृत, पारसी, कन्नड़, गुजराती, मराठी, कश्मीरी, सिंधी आदि भाषाओं तथा विविध बोलियों के अनेक सानुवाद लिप्यन्तरण-ग्रंथ योजनान्तर्गत हैं।

## जो कार्य हो चुके हैं:—

१—(अ़रबी) क़ुर्आन (मूल, लिप्यन्तरण, अनुवाद, टिप्पणी) इस्लामी धर्माचार्यों द्वारा प्रतिपादित—
२—(बंगला) कृत्तिवास रामायण—(५ काण्ड) बंगला मूल देवनागरी में लिप्यन्तरित, अवधी पद्यानुवाद—
३—(गुरमुखी) जपुजी तथा सुखमनी साहब—गुरमुखी मूल पाठ तथा गीता के यशस्वी अनुवादक ख़ा०ब० ख़्वाजः दिलमुहम्मद कृत उर्दू पद्यानुवाद—दोनो देवनागरी लिपि में—

विज्ञापन के लिए, व्यावस्थापक, 'वाणी सरोवर' १०९, रानीकटरा, लखनऊ से पत्र-व्यवहार कीजिए।

नैपाली प्रेस, लखनऊ में मुद्रित एवं भुवन वाणी ट्रस्ट, रानीकटरा, लखनऊ द्वारा प्रकाशित।
—द्वारा नन्दकुमार अवस्थी, सम्पादक